1. Title Bhāgavata Purāṇa
2. Accession No. 5665
3. Folio No./Pages 60
4. Lines 14-17
5. Size 34 × 19.5 cm.
6. Substance Paper
7. Script Devanāgarī
8. Language Braja bhāśā
9. Period Not mentioned
10. Beginning "श्रीगणेशाय नमः परम हंसन के स्वादित कीयों है चरन कमल कौचिदरूपम करद जाकों भक्त जनन के मन..."
11. End "राजा नै पूछै एसो जो धर्म के जानन वारो भगवान् शुकदेव जी सो बोलन भए 39 इति श्री भागवते ॥"
12. Colophon No
13. Illustrations No
14. Source Donation
15. Subject Purāṇa
16. Revisor No
17. Author Not Known
18. Remarks Bound, fair condition.

भागवत पुराण

भा॰ प्र॰
१

॥श्रीगणेशायनमः परमहंसनकेस्वादिनकीयोहेंचरनकमलकोचिदरूपमकरंदजाकोभक्तजननकेमन मेंहैनिवासजिनकोऐसेजोश्रीरामचंद्रजीतिनकेअर्थनमस्कारहै १ सरस्वतीहैमुखकेविषेंजाकें औरलक्ष्मी केवक्षस्थलमें औरजाकेहृदेमेंसत्तारहेहैं ऐसेजोनृसिंहतिनेंमेंभजुहूं २ विश्वकेजेसर्गविसर्गादीकनोलक्ष णतिनकरिकेंलक्षित जगतकूआश्रयश्रीकृष्णहैनामजाकों ऐसोजोपरमधामताहिमेंनमस्कारकरूंहूं ३ सर्वसि द्धिकेदेनवारेपरस्परहेआत्माजिनकेंपरस्पर ऐसेंजोमाधवऔरमहादेवतिनेंमेंनमस्कारकरूंहूं ४ संप्रदायकेअ

ॐनमः श्रीमत्परमहंसास्वादीचरणकमलचिन्मकरंदायभक्तजनमानसनिवासाय १ वागीसाय स्यवदनेलक्ष्मीर्यस्यचवक्षसि यस्यास्तिहृदयेसंवित्तंनृसिंहमहंभजे २ विश्वसर्गविसर्गादिनवलक्ष णलक्षितं श्रीकृष्णाख्यंपरंधामजगद्धामनमामितत् ३ माधवोमाधवावीशौसर्वसिद्धिविधायनो वंदेपरस्परात्मानौपरस्परनतिप्रियौ ४ संप्रदायनुरोधेनपौर्वापर्यानुसारतः श्रीभागवतभावार्थदीप केयंप्रतन्यते ५ कार्हमंदमतिःक्वेदंमंथनंक्षीरवारिधेः किंतत्रपरमाणुर्वैयत्रमज्जतिमन्दरः ६ मूकंक रोतिवाचालंपंगुंलंघयतेगिरिं यत्कृपातमहंवंदेपरमानंदमाधवं ७

नुरोधकरिके औरपहलेपिछलेजोविचारतातें श्रीभगवतकेजोभावार्थताकीप्रकाशकरनवारी ऐसीजोयहटीकासो मोकरिकेविस्तारकरीयेहै ५ मंदहैमतिजाकी ऐसोमेंकहांयहजोक्षीरसमुद्रकोमथबो कहांजाक्षीरसमुद्रमेंमंदराचल डूबेंहैतहांपरमाणुकहांहै ६ जिनकीकृपामेंमूककूंतीयेगूंगेकोंबाचालकरेहै औरलूलेजिनकीकृपातेंपर्वतकूंला घजाय ऐसेजोपरमानंदमाधवताहिमेंनमस्कारकरूंहूं ७ ॐनमोभगवतेवासुदेवायनम श्रीकृष्णायनमः

भा॰ प्र॰
२

5

ॐकाररूपअंकुरजाकोनारायणतेंउत्पत्तिजाकीबारहजेस्कंधतिनकरिके सोभायमानभक्तिहैजोथांवलेनामेंउदै जाकोती नसेपैंतीसअध्यायतिहेसंदरसाखाजाकी अठारहहजारजेश्लोकहैंपत्रजाके इच्छाकोदेनवारो अतिसुलभ असो जोसोभायमानभागवतनामकल्पवृक्षसोसबकेउपरविराजैहै ८ अबवेदव्यासजीश्रीभागवतकेआरंभ हैं अर्थजेहैंतिनमेंप्रश्नहेवितरेवरे औरसर्वज्ञहै औरआपकरिकेंप्रकासितहै औरजेब्रह्माकेहृदयकरिकेंवे देविस्तारकरतभयो जावेदमेंविवेकीमोहकूंप्राप्तिहोहैं औरजेसेतेजमेंजलकीबुद्धिहोइहै मृगतृस्नामेंप्रसि

श्रीमद्भागवताभिधःसुरतरुस्तारांकुरःसज्जनैःस्कंधैर्द्वादशभिस्ततःप्रवलसद्भक्त्यालवालोदयः द्वात्रिंशत्रि शतञ्चयस्यविलसच्छाखाःसहस्राण्यलंपर्णान्यष्टदशोष्टदोतिसुलभोवर्ततेसर्वोपरि ८ श्रीवेदव्यासोवा चः जन्माद्यस्ययतोन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञःस्वराट् तेनेब्रह्महृदायआदिकवयेमुह्यंतियत्सूरयः तेजो वारिमृदांयथाविनिमयोयत्रत्रिसर्गोमृषा धाम्नास्वेनसदानिरस्तकुहकंसत्यंपरंधीमहि १ धर्म्मःप्रोज्झि तकैतवोऽत्रपरमोनिर्मत्सराणांसतां वेद्यंवास्तवमत्रवस्तुशिवदंतापत्रयोन्मूलनम् श्रीमद्भागवते महामुनिकृतेकिंवापरैरीश्वरः सद्योहृद्यवरुध्यतेऽत्रकृतिभिःशुश्रूषुभिस्तत्क्षणात् २

सिहै मृगतृस्नामेंजलबुद्धिहोइहै काचमेंप्रसिद्धिहै जलमेंजैसेंकाचकीबुद्धिहोइहै तैसेंजापरमेश्वरमें तीनजेमायाकेगु णतिनकोंजोसर्गसत्तइंद्रीदेवतारूपसोमिथ्याहोहै अथवाजाकीसत्ताकरिकेंसाचोहै औरजानेअपनेस्वरूपकरिकेंदूरि कीयोहैकपटजाकेविषे ऐसोजोसत्यपरमेश्वरताकोहमध्यानकरैहैं अबश्रोतानकीप्रवृत्तिकरवेकेलियेसबग्रंथनसों नेश्रीभागवतकीश्रेष्ठतादीखावैहै नारायणजोहैतिन्नेंकीयो ऐसोजोश्रीमद्भागवत तामेंनिर्मत्सरजेसाधुतिन कोजोपरमधर्मसोनिरूपनकरीयेहै कैसोधर्महैदूरहैकपटजामें ईश्वरकोआराधनरूपहै औरयाश्रीभागवतमेंपरमस

अव केवल सगरे शास्त्रन में श्रेष्ठ नहीं है सो कहत है सकल शास्त्रन को फलरूप है वेद ही जो कल्पवृक्ष ताको फल सुखदेव जी को मुख तानै भूमि में गिर्यो जो अमृत परमानंद सो ई रस ताकरिकै संयुक्त रसरूप ऐसो जो श्री भागवत ताहि हे रसिक हो हे भावुक हो वेर वेर मोक्षपर्यंत पान करो ३ ऐसे श्रोतान कूं सन्मुख करकै सास्त्र को आरंभ करै हैं भगवान को क्षेत्र ऐसो जो नैमिषारण्य ता में ऽ सौनकादिक जे रिषि ते वैकुंठ की प्राप्ति के लियै हजार वर्ष को जो जग्य ताहि करत भये ४ ते मुनि एक दिन प्रातःकाल अग्नि में होम करिकै सत विसे बैठे तथा सतकार किये बैठे एसे जे सूतजी तिनसूं आदर संयुक्त पूछत भये ५ हे निष्पाप इतिहास सहित जे पुराण ते

निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतं पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुका ३ ४
नैमिषे निमिषक्षेत्रे रिषयः सौनकादयः सत्रं स्वर्गाय लोकाय सहस्रसममासत ४ त एकदा तु मुनयः प्रातर्हुतहुताग्न
यः सत्कृतं सूतमासीनं पप्रच्छुरिदमादरात् ५ ऋषय ऊचुः त्वया खलु पुराणानि सेतिहासानि चानघ आख्यातान्य
प्यधीतानि धर्मशास्त्राणि यान्युत ६ यानि वेदविदां श्रेष्ठो भगवान बादरायणः अन्ये च मुनयः सूत परावरविदो
विदुः ७ वेत्थ त्वं सौम्य तत्सर्वं तत्वतस्तदनुग्रहात् ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत ८ तत्र तत्राञ्ज
सायुष्मन् भवता यद्विनिश्चितं पुंसामेकांततः श्रेयस्तन्नः शंसितुमर्हसि ९ प्रायेणाल्पायुषः सभ्य कलाव
स्मिन् युगे जना मंदाः सुमंदमतयो मंदभाग्या ह्युपद्रुता १०

और धर्मसास्त्र हैं ते तुमने पढे हैं और व्याख्यान किये हैं ६ तिन सास्त्रन को वेदवेत्तान में श्रेष्ठ ऐसे जो भगवान वेदव्यासः सो और सगुण निर्गुण ब्रह्म के जानन वारे ऐसे जो मुनि ते जाने हैं ७ हे सौम्य तत्व तै तिन व्यासदेव जी के अनुग्रह करकै तुम तत्व जानो हो अत्यंत ही जो शिष्य ताके आगे गुरजै हैं ते गुप्त जे वार्ता हैं ता हू कहै हैं ८ हे चिरंजीव तुमने ता सा स्त्रन में अनुपासकरिके पुरुषन कूं एकांत ते जो श्रेयसाधन निश्चै कियो है ताहि हमारे आगे कहिवे कूं जोग्य है ९ और या कलियुग में बहुधा करके थोरी है आयु जिनकी मन्दबुद्धि करिकै आतुर रोगादिक करके दुःखीत ऐसे लोग है १० और कल·

कल·

हैं साधो या लोक में बहुत हैं कर्म जिनके एसे जे बहुत सास्त्र ते न्यारे न्यारे सुनवे कूं जोग्य है या ते अपनी बुद्धि करके जो सार है ताहि निकारके अभ्यास करके जन एसे जे हम तिनके आगे कहो या सार करिके आत्मा प्रसन्न है ११ हे सूत तुम्हारो कल्यान हो उ भक्तन के पति जो भगवान सो वसुदेव की स्त्री जो देवकी ता में जा कर्म करवे की इच्छा करिके जन्म लीयो है सो तुम जानो हो १२ हे सूत जी सुनवे की इच्छा करै हैं हमारे आगे तो वर्णन करवे कूं जोग्य हो जा भगवान को जो अवतार है सो भक्तन के पालन के लिये और सम्बृद्धि के लिये १३ घोर संसार कूं प्राप्त और विवस है तो जो जन है सो जिन भगवान के नाम गावे तें तत्काल संसार में

भूरीणि भूरिकर्माणि श्रोतव्यानि विभागशः अतः साधोऽत्र यत्सारं समुद्धृत्य मनीषया ११ ब्रूहि भद्राय भूतानां
येनात्मा सुप्रसीदति सूत जानासि भद्रं ते भगवान् सात्वतां पति १२ देवक्यां वसुदेवस्य जातो यस्य चिकीर्षयः
तन्नः शुश्रूषमाणानामर्हस्यंगानुवर्णितुं १३ यस्यावतारो भूतानां क्षेमाय च भवाय च आपन्नः संसृतिं घोरां
यन्नाम विवशो गृणन् १४ ततः सद्यो विमुच्येत यद्बिभेति स्वयं भयं यत्पादसंश्रयाः सूत मुनयः प्रशमायनाः
१५ सद्यः पुनंत्युपस्पृष्टाः स्वर्धुन्यापोनुसेवया को वा भगवतस्तस्य पुण्यश्लोकेड्यकर्मणः १६ शुद्धिकामो
न शृणुयाद्यशः कलिमलापहं १७

मुक्त होते हैं जा नाम ते भय पाय जो है सो उडरपै है १४ हे सूत या भगवान के चरनन को तें आश्रयो जिन कूं प्रसन्न तें मांगि जि नको और निकट में सेवन कीये ऐसे जे मुनी जे तत्काल पवित्र करे हैं और गंगा के जल ते ते बहुत सेवा करिके पवित्र करे हैं १५ पुण्य जन्मान करिके स्तुत कीये हैं कर्म जिनके तिनको जो यस कलजुग के पापन को नास करन वारो है ताहि सुद्ध की है कामना जाके ऐसो जो जन है सो न सुनै १६ स्मरन करकै गाये ऐसे जे श्री भगवान के उदार कर्म तिनें प्र भाव करिकै युक्त ऐसे जे कर्म तिनके आगे कहो जो भगवान की लीला करके अवतार जे हैं तिनै धारना करे हैं १७ ऽ

देवुद्धमानतरकेश्रुभजे अवतारकथातिनैकहो जोअपनीमायाकरकेयेलीलाकरेहैं १८ हमतोभगवानकेजोपराक्र
मताकेसुनिवेमेंनहीत्रप्रतोहैं जोपराक्रमसुननवारेनकेरसज्ञानकूंछिनछिनमेंस्वादहूतेस्वादहोहे १९ औरकेसा
वजोभगवानहैसोजिनपराक्रमनकूंकरतभए तिनेबहोजेपराक्रममनुष्यनकोअतिक्रमनकरेहै भगवानकैसेहैगु
ढहैकपटकरिकेमनुष्यहैं २० यातेहमजोहेसववक्षेत्रनामेकलजुगकोआओजानकेवडेजगकरकेवैठेहैं कैसेहैं तुमहरि
कथामेंकीयोहैअवसरजिननें २१ पुरुषनकेसत्वकोहरिवेवारोतरवेंमेंनआवे असोजोकलजुगताहितरवेकीइछावारेसें

तस्यकर्मान्युदाराणिपरिगीतानीसूरिभी ब्रूहिनःश्रदधानानांलीलयादधतःकलाः १८ अथाख्याहिहरेर्धीम
न्नवतारकथाशुभाः लीलाविदतःस्वैरमीश्वरस्यात्ममायया १९ वयंतुनवित्रपामउत्तमश्लोकविक्रमे यच्छृण्वतां
रसज्ञानंस्वादुस्वादुपदेपदे २० कृतवान्किलकर्माणिसहरामेणकेशव अतिमर्त्यानीभगवान्ग
ूढ:कपट:मानुष: २१ कलिमागतिमाज्ञायक्षेत्रेऽस्मिन्वैष्णवेवयं आसीनादीर्घसत्रेणकथायांसक्ष
णाहरे २२ त्वन्नःसंदर्शितोधात्रादुस्तरंनिस्तितीर्षतां कलिंसत्वहरंपुंसांकर्णधारइवार्णव ब्रूहियोगे
श्वरेकृष्णेब्रह्मण्येधर्मवर्मणिस्वांकाष्ठामधुनोपेतेधर्मकंशरणंगतः इतिप्रथमेप्रथमोध्यायः २३
इतिसंप्रश्नसंहृष्टोविप्राणांरोमहर्षिणिः प्रतिपूज्यवचस्तेषांप्रवक्तुमुपचक्रमे १

एसेजेहमहेतिनविधानानेंतुमदिखायेहो जैसेसमुद्रकोतरवोचाहैतिनकूंनावरखेचनवारोजैसेमिलेहै २२ धर्म
कीरक्षाकरनवारेवहसरणजोजीनकेस्वर श्रीकृष्णसोअपनीनम्यीदाकूंजवमाप्रभएतववधर्मकोनकेसरनगयोसो
अववतो २३ इतीभागवतेप्रथमस्कंधेप्रथमोध्याय १ तदेवंप्रथमेध्यायेषट्प्रश्नामुनिभि:कृता: द्वितीयेतूत्तरं
सूतश्चतुर्णामाहनेध्वथ १ पहिलीअध्यायमेंमुनिनेंछैप्रश्नहेंतेकीयेतिनप्रश्ननमेंचारकोउत्तरसूतजीदुसरीअ
ध्यायमेदेहैं १ यासुनकेयाप्रकारकेजेप्रश्नतिनकरिकेसंतुष्टअसेजोरोमहर्षणकेबेटा उग्रश्रवा सोतिनकेवच

नतांपहिलेगुरदेवकोनमस्कारकरेहैंतिनश्लोककरकेजोसंन्यासलेकेंजातेऔरअकेलेहैंकर्मकरिकेसून्यहैतिनेविरहकरिके
कातअसेजोव्यासदेवजीसोहेपुत्रअसेबुलावतभए तामेंसुषदेवजीकेरूपकरिकेवृक्षजेहैंतेपिताकेप्रेमतेउत्तरदिवे
कूलियेउत्तरदेतभये जोसुषदेवजीतिनेमैंनमस्कारकरूंहूं सोसवजीवनकेहृदेमेंयोगबलकरकेप्रवेशकरेहैं २ जोशु
कदेवजीकीदयाहिरवायकहेहैं जोशुकदेवजीसंसारतरवेकीइछाकरे असेंजेसंसारीजीवतिनकोकरुणाकरके औ
रसाधारनहैप्रभावजाको सगरेवेदनकोसागर अद्वितीयआत्मतत्वकोप्रकाशकरनवारोपुराननमेंगोप्यरहसोजोभाग

सूतउवाच: यंप्रव्रजंतमनुपेतमपेतकृत्यंद्वैपायनोविरहकातरआजुहाव पुत्रेतितन्मयतयातरवोभि
नेदुस्तंसर्वभूतहृदयंमुनिमाननतोस्मि २ य:स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेकमध्यात्मदीपमतितितीर्षतां
तांतमोधं ३ संसारिणांकरुणयाहपुराणगुह्यंतंव्याससूनुमुपयामिगुरुंमुनीनां ४ नारायणंनमस्कृत्यन
रंचैवनरोत्तमंदेवीसरस्वतींचैवततोजयमुदीरयेत् सूतउवाच: मुनिय:साधुपृष्टोहंभवद्भिर्लोक
मंगलं यत्कृत:कृष्णसंप्रश्नोयेनात्मासुप्रसीदति ५ सवैपुंसांपरोधर्मोयतोभक्तिरधोक्षजे अ॰
हैतुक्यप्रतिहतायपात्मासुप्रसीदति ६ वासुदेवेभगवतिभक्तियोग:प्रयोजित:जनयत्याशुवैराग्यंज्ञा

वतऔरसवमुनीनकेगुरुहैंअसेजोव्यासपुत्रतिनकेमेंसरनजाउंहूं ३ नरनमेंउत्तमअसेजेश्रीनारायनऔरनरऔ
रसरस्वतीदेवीऔरसषदेवइनेनमस्कारकरके संसारकोजीतनवारोग्रंथताहिकहेहै औरवक्तानकूंसिखावे
है ४ हेमुनतोतुमननेमोसूंसुंदरपूछोहै तुमारोप्रश्नलोकनकूंमंगलहै यातेकृष्णविषेप्रश्नकीयोहैजा
करकेमनवेगप्रसन्नहोहै ५ पुरुषनकोजोपरमधर्महैजाधर्मतेंफलकरकेरहितविघ्नजाकोनासनकरे असी
भक्तिश्रीकृष्णमेंहोहैजाभक्तिकरिकेआत्माप्रसन्नहोहै ६ भगवानवासुदेवमेंकियोजोभक्तियोगसोशिघ्रीवैराग्यकूंउप

संदरम्प्रनुष्ठानकियोएसोजोपुर्षनकोधर्मसोहरिकथाकेविषैजोरतिकूंनउपजावेतोकेवलश्रमहीहै ८ मोक्षकोसाध
नऐसोजोधर्मताकेफलकेलिकैपुर्थतैसोयोग्यनहीहोहैं धर्महीहैफलजाकोऐसोजोअर्थताकोकामहैसोलाभनही
हैफलनहीकह्योहै ९ औरकामजोविषैभोगताकोइंद्रीनकीजोप्रीतसोफलनहीहोहै जितनेकरिकेजीवेइतनेहीता
नकोफलहै औरजीवेकेकूंमनकरिकेजोस्वर्गादिफलहैसोअर्थनहीहोहैतत्वजिज्ञासासोइजीवेकोफलहै १० तत्ववेता
हैतेजोतत्वकहेहै सोअद्वैतज्ञानरूपहैजातत्वकोब्रह्मपरमात्मभगवान्ऐसैकहेहै ११ ज्ञानवैराग्यकेयुक्तऐसेजेमुनि

धर्मः स्वनुष्ठितः पुंसां विष्वक्सेनकथासु यः नोत्पादयेद्यदिरतिं श्रमएवहिकेवलं ८ धर्मस्याह्यापवर्ग्यस्य
नार्थोर्थायोपकल्पते नार्थस्यधर्मैकांतस्यकामो लाभायहिस्मृतः ९ कामस्यनेंद्रियप्रीतिर्लाभोजीवे
तयावता जीवस्यतत्वजिज्ञासा नार्थोयश्चेहकर्मभिः १० वदंतीतत्तत्वविदस्तत्वंयत्ज्ञानमद्व
यं ब्रह्मेतिपरमात्मेतिभगवानितिशब्द्यते ११ तच्छ्रद्दधानामुनयोज्ञानवैराग्ययुक्तया पश्यं
त्यात्मनिचात्मानंभक्त्याश्रुतगृहीतया १२ अतःपुंभिर्द्विजश्रेष्ठावर्णाश्रमविभागशः स्वनुष्ठितस्य
धर्मस्यसंसिद्धिर्हरितोषणं १३ तस्मादेकेनमनसाभगवान्सात्वतांपतिः श्रोतव्यःकीर्तितव्यश्चध्येयःपूज्यः
श्चनित्यदा १४ यदनुध्यासिनायुक्ताःकर्मग्रंथिनिबंधनं छिंदंतिकोविदास्तस्यकोनकुर्यात्कथारतिं १५ शुश्रूषोः
श्रद्दधानस्यवासुदेवकथारुचिः स्यान्महत्सेवयाविप्राःपुण्यतीर्थनिषेवणात् १६ शृण्वतांस्वकथाःकृष्णःपुण्य

तेज्ञानवैराग्ययुक्तकरिकेऔरश्रवणकरिकेयुक्तएसीजोभक्तिताकरिकैआत्मामैंआत्माहैताहिदेखैहै १२ हेब्राह्मणनमेंश्रेष्ठलोव
रनआश्रमइनकेभागतैकियोजोधर्मताकोहरिप्रसन्नकरवोफलहै १३ तातेएकचितकरिकैभक्तनकेपालकजोभग
वान्सोनित्यसुनवेकूंयोग्यहै कीर्तनकरवेकूंध्यानकरवेकूंपूजाकरवेकूंजोग्यहै १४ जाभगवानकोध्यानतेही
खड्गताकरकैयुक्तजेविवेकीतेअहंकारकोबंधनवारोऐसोजोकर्मताहिकाटैहै ताभगवानकीकथामैकूंरतिकूंकोनन
करै १५ ब्राह्मणोकैपुन्यतीर्थनकेसेवननेरुचिहोहै १६ पुण्यहैश्रवणकीर्तनजिनकोसाधुनकेहृदैमेस्थितहोएसेजोश्रीकै

नित्यंभागवतनकीसेवाकरवैतेनष्टप्रायअमंगलहोहैंतवभगवानउत्तमश्लोकमेनिश्चलभक्तिहोहै १८ तासमैरजोगु
णतमोगुणतेभएऐसेजेकामलोभादिकतेभएतबऔरइनकरिकैविध्योनहीसत्वमैंस्थितएसोजोचितसोप्रसन्न
होहै १९ एसेप्रसन्नहैमनजाकोऔरमुक्तसंगताकेभगवानकेभक्तियोगतेभगवानकेतत्वकोजोविज्ञानहोहैं २० आत्मा
इश्वरदेखेसतेहृदैकीगांथअहंकारसोभेदकोप्राप्तहोहै सवसंसैहैतेकटिजाहैऔरयापुर्षकेकर्महैसोक्षीनहोहै २१ याका
रणतेकविहैतेपरमआनंदकरकेआत्माकीप्रसन्नकरनवारीऐसीजोभक्तिताहिभगवानवासुदेवकेविषेकरैहैः
२२ सत्वरजतमयेमायाकेगुणहैतिनगुणनकरिकैयुक्तऐसीजोपरमपुर्षएकहीयाविश्वकीउत्पतिस्थितसंहारतिन

नष्टप्रायेष्वभद्रेषुनित्यंभागवतसेवया भगवत्युत्तमश्लोकेभक्तिर्भवतिनैष्ठिकी १८ तदारजस्तमोभावाः
कामलोभादयश्चये चेतएतैरनाविद्धंस्थितंसत्वेप्रसीदति १९ एवंप्रसन्नमनसोभगवद्भक्तियोगतः
भगवतत्वविज्ञानंमुक्तसंगस्यजायते भिद्यतेहृदयग्रंथीश्छिद्यंतेसर्वसंशयः २० क्षीयंतेचास्यकर्मा
णिदृष्टएवात्मनीश्वरे अतोवैकवयोनित्यंभक्तिंपरमयामुदा वासुदेवेभगवतिकुर्वंत्यात्मप्रसादनीं
सत्वंरजस्तमइतिप्रकृतेर्गुणास्तैर्युक्तःपरःपुरुषएकइहास्यधत्ते स्थित्यादयेहरिविरंचहरेतिसंज्ञा श्रे
यांसितत्रखलुसत्वतनोर्नृणांस्युः पार्थिवाद्दारुणोधूमस्तस्मादग्निस्त्रयीमयः तमसस्तुरजस्तस्मा
त् सत्वंयद्ब्रह्मदर्शनं भेजिरेमुनयोथाग्रेभगवंतमधोक्षजं सत्वंविशुद्धंक्षेमायकल्पंतेयेनुतानिह २५

केलियेब्रह्माविस्नुरुद्रयेसंज्ञातिनेधारनाकरैतिनतीनोनमेसत्वमूर्तिजोभगवान्तिनतेनिश्चेकरकेअभयफल
होहैं २३ पृथ्वीविकोजोबीकारकाष्टादितातेधूमहोहै ताधूमातेत्रयीमयअग्निहोहै ऐसैतमतेरजतोयहैसत्वहोहैःस
त्वतेब्रह्मकोदर्शनहोतहैं २४ जाकारणतेमुनिहैतेअधोक्षजजोभगवान् सत्वमूर्तिहैताहीकूंभजतभ
ये जेभजनकरनवारेतिनेअनुवर्तैतेः तेयहांसंसारमेकल्पनकेअर्थमोक्षहोहै निश्चेकरिकैसंदेहनहीहै २५

जा कारन तें जे मुक्तिताय वे की इच्छा करैं ते घोर रूप भूतन के पति तिनै छोडकें नारायन की कला तिनें भजे हैं नहीं असूया जिनके २६
राजसी तामसी हैं प्रकृती जिनकी पितर भूतन के समान हैं सील जिनको ऐश्वर्य और प्रजा इन की इच्छा करें ते पितर भू
त प्रजापति इन तिनैं भजे हैं २७ वेद हैं ते वासुदेव पर हैं यज्ञ हैं ते वासुदेव पर हैं योग हैं ते वासुदेव पर हैं क्रिया है ते वासुदेव पर हैं २८
ज्ञान है ते वासुदेव पर हैं तप है सो वासुदेव पर है धर्म है सो वासुदेव पर है २९ सोई भगवान आगे कार्य्य कारण मयी ऐसी अ
पनी माया ताकरकें यह जो विश्व है ताय सृजत भये ऐसे भगवान तें आप निर्गुण हैं ३० ता माया कर किये प्रगट भए जे गुण तिन में

मुमुक्षवो घोररूपांहित्वा भूतपतीनथा नारायणकलाः शांता भजंती ह्यनसूयव २६ रजस्तमःप्रकृतयः समशी
ला भजंति वै पितृभूतप्रजेशादीन् श्रियैश्वर्यप्रजेप्सव २७ वासुदेवपरा वेदा वासुदेवपरा मखा वासुदेवपरा
योगा वासुदेवपराः क्रिया २८ वासुदेवपरं ज्ञानं वासुदेवपरं तपः वासुदेवपरो धर्म्मो वासुदेवपरा गतिः २९ स एवे
दं ससर्जाग्रे भगवानात्ममायया सदसद्रूपया चासौ गुणमय्यागुणो विभु ३० तया विलसितेष्वेषु गुणेषु गुणवानिव
अंतःप्रविष्ट आभाति विज्ञानेन विजृंभितः यथा ह्यवहितो वह्निर्दारुष्वेकः स्वयोनिषु नानेव भाति विश्वात्मा भूते
षु च तथा पुमान् ३२ असौ गुणमयैर्भावैर्भूतसूक्ष्मेंद्रियात्मभिः स्वनिर्मितेषु निर्विष्टो भुंक्ते भूतेषु तद्गुणान्
भावयत्येष सत्त्वेन लोकान्वै लोकभावनः लीलावतारानुरतो देवतिर्यङ्नरादिषु ३४ इती भाग॰ प्र॰ द्वितीयोध्या॰ २

भीतर प्रवेश करत संते गुनमान से प्रकासे हैं कैसें हैं भगवान हैं विज्ञान करिकें पुष्ट हैं ३१ ऐसें अपने प्रघट करनवारे काष्ठ
विन में अग्नि एक ही रहे है जैसे विश्व के आत्मा जो भगवान सो भूतन के विषें नाना रूप दीखें हैं ३२ भूत सूक्ष्म इंद्री मन ए जे
गुण तिन में भाव तिन कर किये आपही रचे ऐसे जे प्राणी तिन में प्रविष्ट होइ कें सो जो गुण तिन ने भोग करै है अथवा भोग करावे
है ३३ येई जो भगवान लोकन के करता देवता पशु पक्षी मनुष्यादिक तिन में लीला अवतार लै कें लोकन कें तिन ने पालन करै है ३४

इति श्री भागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे द्वितीयोध्यायः २

अवतारकथाप्रश्ने तृतीये तु तदात्मिका एकविंशावतारोक्त्या तत्र चरित्रं वर्ण्यते १ तीसरे अध्याय में अवतार कथा को
जो प्रश्न ता मैं पुरुषादिक अवतारन के हवे करिके सो सो चरित्र एके वर्णन करि कें उत्तर दे है १ सूतजी पहले पुरु
षावतार कहे हैं भगवान जो है सो महत्तत्वादिकन करिकें युक्त महत्तत्व अहंकार पंचतन्मात्रा ग्यारैं इंद्री पंचमहा
भूत ये सोलह कला जामे ऐसो जो पुरुषरूप ताहि प्रथम लोकसृजवे के लीये ग्रहन करत भये १ जोगनिद्रा कौ वि
स्तार करते हैं जल के विषें सोमते हैं ऐसो जो भगवान तिन को नाभि हृदय तामें भयो कमल ताते विश्वसृजन वारेन को

सूत उवाच: जगृहे पौरुषं रूपं भगवान्महदादिभिः संभूतं षोडशकलमादौ लोकसिसृक्षया १ यस्यांभसि शया
नस्य योगनिद्रां वितन्वतः नाभिहृदांबुजादासीद्ब्रह्मा विश्वसृजांपति २ यस्यावयवसंस्थानैः कल्पितो लोकविस्तरः
तद्वै भगवतो रूपं विशुद्धं सत्त्वमूर्ज्जितं पश्यंत्यदो रूपमदभ्रचक्षुषा सहस्रपादोरुभुजाननाद्भुतं सहस्रमूर्द्धश्र
वणाक्षिनासिकं सहस्रमौल्यंबरकुंडलोल्लसत् ४ एतन्नानावताराणां निधानं बीजमव्ययं यस्यांशांशेन सृज्यंते दे
वतिर्यङ्नरादय ५ स एव प्रथमं देवः कौमारं सर्गमाश्रितः चचार दुश्चरं ब्रह्मा ब्रह्मचर्यमखंडितं ६ द्वितीयं तु भ
वायास्य रसातलगतां महीं उद्धरिष्यन्नुपादत्त यज्ञेशः सौकरं वपु ७

पुनः ऐसो सो ब्रह्मा सो होत भयो २ जाके अंगन को रचना करकें लोकन को विस्तार रच्यो है सो भगवान को विशुद्ध सत्व
रूप है ३ हजारन जे चरन उरू भुजा मुख इन करिकें अद्भुत हजारन हैं माथे कान नेत्र नासिका जाके विषें हजा
रन जे मुकुट वस्त्र कुंडल तिन कर कें सोभायमान ऐसो जो रूप ताय ज्ञान नेत्र करिकें जोगी देखे हैं ४ यह रूप नाना
अवतारन को प्रवेस करवे को अस्थान है और उपजवे को स्थान है जाके अंस करिकें देवता पसु पक्षी मनुष्या
दिक ते सृजे हैं ५ सोई भगवान पहलें कौमार सर्ग है ताइ आश्रित होइ कें ब्राह्मण होइ कें दुश्चर अखंडित ऐसो जो
ब्रह्मचर्य ताहि करत भयो ६ दूसरे अवतार में या विश्व के उद्धार करवे के अर्थ उद्धार के लीयें रसातल में गई जो पृथ्वी

तीसरे अवतारमें जे रिषीनकौं जो सर्ग ताहि प्राप्ति होकरके नारदरूप होकरकें वैष्णवतंत्र पंचरात्र ताहि कहत भये
ताते अनेक कर्मबंधन निवर्त्ति होहै ८ चौथे अवतारमें धर्मकी स्त्री ताके सर्गमें ऋषिरूपि नरनारायण होकरके आ
त्माके उपसमन करिकें युक्त ऐसो जो दुःखरूप तप ताय करत भए ९ पांचमे अवतारमें सिद्धनके ईश्वर कपिलदेव
जिनकौं नाम सो कालकरकें नष्ट तत्वनकौं जो समूह ताकौ निर्णय जामें ऐसो जो सांख्य ताहि आसुरी ब्राह्मण
के अर्थ कहत भये १० छठे अवतारमें अनसूयाकरिकें प्राप्ति अत्रऋषिके पुत्र होकरकें अलर्क प्रह्लादादिकन
निके अर्थ आत्मविद्या ताहि कहत भये ११ तैसेई सातवें अवतारमें रुचीकी स्त्री आकूती ताके विषे यज्ञनाम

तृतीयमृषिसर्गं वै देवर्षित्वमुपेत्य सः तन्त्रं सात्वतमाचष्ट नैष्कर्म्यं कर्मणां यत ८ तुर्ये धर्मकलासर्गे
नरनारायणावृषी भूत्वात्मोपशमोपेतमकरोद्दुश्चरं तपः ९ पंचमः कपिलो नाम सिद्धेशः कालविप्लुतं
प्रोवाचासुरये सांख्यं तत्त्वग्रामविनिर्णयं १० षष्ठमत्रेरपत्यत्वं वृतः प्राप्तोऽनसूयया आन्वीक्षिकीमल
र्काय प्रह्लादादिभ्य ऊचिवान् ११ ततः सप्तम आकूत्यां रुचेर्यज्ञोऽभ्यजायत स यामाद्यैः सुरगणैरपात्स्वायं
भुवांतरं १२ अष्टमे मेरुदेव्यां तु नाभेर्जात उरुक्रमः दर्शयन्वर्त्म धीराणां सर्वाश्रमनमस्कृतं १३ ऋ
षिभिर्याचितो भेजे नवमं पार्थिवं वपुः दुग्धेमामोषधीर्विप्रास्तेनायं स उशत्तमः १४ रूपं स जगृहे मा
त्स्यं चाक्षुषोदधिसंप्लवे नाव्यारोप्य महीमय्यामपाद्वैवस्वतं मनुं १५

भगवान् जन्म लेत भए सो यज्ञ यामादिक देवतानके गणनि करकें स्वायंभुव मन्वंतरकौ पालन करत भये १२
आठमें अवतारमें नाभिकी इस्त्री मेरुदेवी तामें रिषभदेव जन्म लेत भये जो रिषभदेव सब आश्रमन करकें
नमस्कार करीये है ऐसो जो परमहंसनकौ मार्ग ताइ धीरनकूं दिखावत भए १३ नवमे अवतारमें रिषीने
प्रार्थना कीये पृथुरूप धरिकें या पृथ्वीकूं औषधि सब वस्तुनकूं दोहत भए ताकरकें ये अवतार सुंदर होत भयो १४
दशयें अवतारमें मत्स्यरूप लेकें ताहि ग्रहण करत भये जो मत्स्यदेव चाक्षुष मन्वंतरमें जो प्रलै ताके विषे पृथ्वीरूप नावमें

ग्यारहें अवतारमें विष्णु जो भगवान सो कच्छरूप धारिकें देवता असुर तिनकूं समुद्रमथन करें संते मंदिराचलकें नाहि पीठपै धार
न करत भये १६ वारहें अवतारमें धन्वंतररूप होत भए तेरहें अवतारमें मोहनी इस्त्रीरूप करिकें असुरनकूं मोहित करत
देवतानकूं अमृत प्यावत भये १७ चौदहें अवतारमें नसिंहरूप धरकें बलीजो दैत्यनकौं ईश हिरण्यकश्यप ताकौ उदर च
पनकर कैविदारत भए जैसें चटाई बुनन वारो तनकूं चीर डारे है १८ पंद्रमें अवतारमें वामनरूप करिकें राजा बलिके यज्ञ
में जात भए तीन लोकयत्न करवेकूं तीन पैड पृथ्वी मागत भये १९ सोलहें अवतारमें ब्राह्मणके द्रोही राजा तिनें देषकें

सुरासुराणामुदधिं मथ्नतां मंदराचलं दध्रे कमठरूपेण पृष्ठ एकादशे विभुः १६ धान्वंतरं द्वादशमं त्रयोदश
ममेव च अपाययत्सुरानन्यान्मोहिन्या मोहयन्स्त्रिया १७ चतुर्दशं नारसिंहं बिभ्रद्दैत्येन्द्रमूर्जितं ददार कर
जैर्वक्षस्येरकां कटकृद्यथा १८ पंचदशं वामनकं कृत्वागादध्वरं बलेः पदत्रयं याचमानः प्रत्यादित्सुस्त्रि
विष्टपं १९ अवतारे षोडशमे पश्यन्ब्रह्मद्रुहो नृपान् त्रिःसप्तकृत्वः कुपितो निःक्षत्रामकरोन्महीं २० ततः
सप्तदशे जातः सत्यवत्यां पराशरात् चक्रे वेदतरोः शाखा दृष्ट्वा पुंसोऽल्पमेधसः २१ नरदेवत्वमापन्नः सुर
कार्यचिकीर्षया समुद्रनिग्रहादीनि चक्रे वीर्याण्यतः परं २२ एकोनविंशे विंशतिमे वृष्णिषु प्राप्य जन्मनी
रामकृष्णाविति भुवो भगवानहरद्भरं २३ ततः कलौ संप्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषां बुद्धो नाम्नाजिनसुतो कि

करकीये परसराम सो इक्कीसवेर करन छत्री पृथ्वी करत भए २० ताके अनंतर सत्रहयें अवतारमें पारासरतें सत्यवतीतें वेद
व्यास होत भए जो वेदव्यास थोरी है बुद्धि जिनकी ऐसे पुरुष तिनें देषकें वेद ही जो वृक्ष ताकी जो साषा तिनें करत भये २१
याके परे अठारयें अवतारमें देवतानके कार्य करवेकी इच्छा करकें रामचंद्र होकरकें सेतबंधन आदिलेकें पराक्रम
तिनें करत भए २२ उनईसवीसमें अवतारमें भगवान् यादवनमें रामकृष्ण या नामसें जन्म पाइकें पृथ्वीकौ भा
र हरत भए २३ ताके अनंतर इक्कीसमें अवतारमें कलियुग प्रवर्त्ति भए संतें दैत्यनके मोहनके लीयें बुद्धनाम अजन

भा॰ प्र॰ ७

केअंत

जाके अनंतर कलियुगमें चोरप्राय राजानहूं भयेसंते कलि श्रीनाथ करिकैं जगतके पालिक सोविष्णुयसा ब्राह्मणके जन्मलेइंगे २५ हेब्राह्मणहो सात्वकी निधि ऐसे जो हरि तिनके असंख्यन अवतार हैं जैसे बडे सरोवरते छोटे छोटे हजारन प्रवाह होहें २६ ऋषीहें मुनिहें देवताहें बडे जिनको बल ऐसे मनुके पुत्र हैं प्रजापति सहित हरकी सगरे कलाहें २७ येजे अवतार हैं ते परमेश्वरके अंश ऐसे हे अंशविभूतीहें श्रीकृष्ण हैं सो तो स्वयं भगवान् हें येसु वतारथकारा करें दैत्यन करिकें व्याकुल जे लोक तातें जुगजुगमें सुख देहें २८ भगवान् को यह जो जन्म रहस्य है तातें पवित्र हैके जो मनुष्य सांझ प्रातःकाल भक्ति करिकें सो सब दुःखन के समूहते छूटि जातें हें २९ प्रकृतिरूपकेरितें

अथासौ युगसंध्यायां दस्युप्रायेषु राजसु जनिता विष्णुयशसो नाम्ना कल्किर्जगत्पतिः २५ अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधेर्द्विजा यथाऽविदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः २६ ऋषयो मनवो देवा मनुपुत्रा महौजसः कलाः सर्वे हरेरेव सप्रजापतयस्तथा २७ एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं इंद्रारिव्याकुलं लोकं मृडयंति युगे युगे २८ जन्म गुह्यं भगवतो य एतत्प्रयतो नरः सायं प्रातर्गृणन् भक्त्या दुःखग्रामाद्विमुच्यते २९ एतद्रूपं भगवतो ह्यरूपस्य चिदात्मनः मायागुणैर्विरचितं महदादिभिरात्मनि ३० यथा नभसि मेघौघो रेणुर्वा पार्थिवोऽनिले एवं द्रष्टरि दृश्यत्वमारोपितमबुद्धिभिः ३१ अतः परं यदव्यक्तमव्यूढगुणबृंहितं अदृष्टाश्रुतवस्तुत्वात्स जीवो यत्पुनर्भवः ३२ यत्रेमे सदसद्रूपे प्रतिषिद्धे स्वसंविदा अविद्ययात्मनि कृते इति तद्ब्रह्मदर्शनं ३३

रहत स्वरूप ऐसो जो भगवान् तिनको यह जो रूप सो माया करके गुण जो महदादिक तिनको विषे आत्माको विषे रच्यो है ३० जैसे आकासमें मेघनको समूह और पवनमें पृथ्वीकी रेनकुबुद्धिने आरोपन कीयो है ऐसो दृष्टा जो आत्मा तामें सरीरको आरोपन कीयो है ३१ जा स्थूलरूपते परें सूक्ष्मरूप और अव्यक्त गुणादिकनमें रहत न देख्यो न सुन्यो ऐसो रूप रच्यो है सो जीवको उपाधि है जा सूक्ष्मरूपले फेर जन्म होइ है ३२ जामें जे स्थूल सूक्ष्म रूप हैं ते ज्ञान करिकें निषेध करीयें हें जैसें एहें अविद्याने आत्माने

जो लवे तब स्वरूपकों देवी माया ते उपराम कों प्राप्त होले सो ह माया जो विद्या रूप वेतें न वे उपाध छोडके स्वरूपकूं प्राप्त होहें एसे ज्ञानमा न जानें हें और अपनी महिमामें विराजें हें ३४ ऐसे प्रकर्ता अजन्म अंतरजामी ताके जन्म कर्म हैं तिनें कविवर्णन करें हें वेदमें गावे हें ३५ सो ह भगवान् सफल है लीला जाकी और भूतनमें अंतरहित और स्वतंत्र सो विश्वकूं रचें हें पाले हें और संहार करें हें और आसक्त नहीं होहें छाहें ने छे इंद्री नके निषेधता हें दूर तेई जो छे इंद्रीन को जो विषे तातें गंधकी सीनाई ग्रहन करें हें ३६ जगतके विधाता एसे जो भगवान् तिनकी जो लीला तिनें कुबुद्धि जो प्रानी सो प्रकारके तर्कसें नहीं जाने हें कैसें भगवान् हें मन करिकें रूपवचन करिकें नाम तिनें विस्तार करें हें कैसें नहीं जा

यद्येषोपरता देवी माया वैशारदी मतिः संपन्न एवेति विदुर्महिम्नि स्वे महीयते ३४ एवं जन्मानि कर्माणि ह्यकर्तुरजनस्य वर्णयंति स्म कवयो वेदगुह्यानि हृत्पते ३५ स वा इदं विश्वममोघलीलः सृजत्यवत्यत्ति न सज्जतेऽस्मिन् भूतेषु चांतर्हित आत्मतंत्रः षाड्वर्गिकं जिघ्रति षड्गुणेशः ३६ न चास्य कश्चिन्निपुणेन धातुरवैति जंतुः कुमनीष ऊतीः नामानि रूपाणि मनोवचोभिः सन्तन्वतो नटचर्य्यामिवाज्ञः ३७ स वेद धातुः पदवीं परस्य दुरंतवीर्यस्य रथांगपाणेः योऽमायया संततयानुवृत्त्या भजेत तत्पादसरोजगंधं ३८ अथेह धन्या भगवंत इत्थं यद्वासुदेवेऽखिललोकनाथे कुर्वंति सर्वात्मकमात्मभावं न यत्र भूयः परिवर्त उग्रः ३९

नें हें जैसे मूर्ख लोग नटको स्वांग देखतहें नहीं जाने ३७ जगतके विधाता दुरंत है पराक्रम जाको चक्र है हाथमें जिनके एसे जे परमेश्वर तिनकी जो पदवी ताहि जाने हें ३८ जो निष्कपट होके निरंतर जो प्रभु कूं लतना करिकें तरके चरणारविंदको जो गंध ताहि भजें हें या लेतुम धन्य हो जो तुम सब लोकनके नाथ ऐसे जो वासुदेव तिनमें सर्वात्म मनको जो रेभाव ताहि करवेको जो प्रेर ताहि करो हो जैसे सो भाव है कैसा भाव मैं फिर जन्म मरण आदिक जो का महे नैन ही होय भवरस्य कूंन ही होते हें ३९

श्रीकृष्णायनमः श्रीॐनमो भगवते वासुदेवायनमः श्रीहरी नारायण वासुदेव जी तुमारी जै होय नित्यप्रतिः॥

भा॰प्र॰
८

यह श्रीभागवत वेदके संमत श्रीभगवानको है चरित्र जामें श्रीरु धन्य है मंगलको अस्थान है श्रेष्ठ है भगवान जो व्यासदेव ते करत भए लोकनके कल्यान करवेके लिये ४० सब वेद इतिहास तिनको सार सार उद्धार कीयो श्रेसो जो भागवत ताहि धीरन मे मुख्य ऐसो जो अपनो पुत्र ताय पढावत भए ४१ सो सुकदेवजी गंगामे अनुसन व्रत लेके बैठे ऋषिन करिके व्याप्त श्रेसो जो महाराज परीक्षत ताहि सुनावत भये ४२ धर्मज्ञानादिकनके सहित श्रीकृष्ण सुधामकूं गए॰ तब कलिजुगमें नष्ट हे दृष्टि जिनकी तिनके लीये पुराण रूपी जो सूर्ज सो उदे भयो है ४३ हे ब्राह्मण हो वडो है तेज जिनको तहां श्रीभागवतकूं कहते है श्रेसे जे व्यासदेव तिनते तहां वे

इदं भागवतं नाम पुराणं ब्रह्मसंमितं उत्तमश्लोकचरितं चकार भगवानृषिः ४० निःश्रेयसाय लोकस्य धन्यं स्वस्त्ययनं महत् तदिदं ग्राहयामास सुतमात्मवतां वरं ४१ सर्ववेदेतिहासानां सारं सारं समुद्धृतं स तु संश्रावयामास महाराजं परीक्षितं ४२ प्रायोपविष्टं गंगायां परीतं परमर्षिभिः कृष्णे स्वधामोपगते धर्मज्ञानादिभिः सह ४३ कलौ नष्टदृशामेषः पुराणार्कोऽधुनोदितः तत्र कीर्तयतो विप्रा विप्रर्षेर्भूरितेजसः ४४ अहं चाध्यगमं तत्र निविष्टस्तदनुग्रहात् सोऽहं वः श्रावयिष्यामि यथाधीतं यथामति ४५ इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे तृतीयोऽध्यायः ३ व्यास उवाच: इति ब्रुवाणं संस्तूय मुनीनां दीर्घसत्रिणां वृद्धः कुलपतिः सूतं बह्वृचः शौनकोऽब्रवीत् १ शौनक उवाच: सूत सूत महाभाग वद नो वदतां वर कथां भागवतीं पुण्यां यदाह भगवान्छुकः २

सूत १

सो मैं जो सो पढोंहु श्रेसी मेरी मत है मैं सो तुमकूं सुनाउंगो ४५ इती श्रीभा
ढोग श्रेसे जो सूक्ष्म सो तिनके अनुग्रहते जानत भयो ४४ सो मै जोसो पढो हुं
गवते प्रथमस्कंधे तृतीयोध्याय ३ चौथी अध्यायमें भागवतके प्रारंभको जो कारण ताकू कहके तपप्रवचनादिक इनकरके व्यासदेव
कोजो असंतोष सो वरननकरियेहे १ एसे कहते जे सूतजी तिनसूं वडो है यज्ञ जिनको एसे जे मुनि तिनमे वृद्ध ऋग्वेदी गणनमे मु
ख्य श्रेसे जे सोनक ते पूछत भए २ हे सूत हे महाभाग हे वक्तानमें श्रेष्ठ भागवत पुण्यकथा ताही हमसूं कहो तब जो कथाकूं
[illegible]

यह कथा कोनसे जुगमें कोनसे स्थानमें कोन कारनकरिके प्रवर्तहोत भई कोन करके प्रेरे मुनि जो व्यासदेव सो या संहिताकूं
करत भए ३ वडे जोगी ब्रह्मके देखनवारे नहीहे भेद जो गके एक ही है समाधी जाकी एसी ये मूढ जिनकी माया निद्राते जागे श्रो
रगुढ एसे जो व्यासपुत्र शुकदेव सो मूढमती सोहे ४ संन्यास लेकरवेको जाते श्रेसो जो अपनो पुत्र ताहि बुलायवेकूं पीछे पीछे जा
हे वस्त्र पहिरे एसे व्यास ताहि देखके जलमे कीडा करे हे एसी जे अप्सरा ते लज्जा करिके अपने अपने वस्त्र पहरत भई श्रा
नो जो पुत्र ताहि देखके वस्त्र नपैहेरत भई यह आश्चर्य देखके मुनि व्यास पूछत भए तब वे अप्सरा कहत भई उघारे ही पु

कस्मिन्युगे प्रवृत्तेयं स्थाने वा केन हेतुना कुतः संचोदितः कृष्णः कृतवान्संहितां मुनिः ३ तस्य पुत्रो महायोगी समदृङ्निर्विकल्पकः एकांतमतिरुन्निद्रो गूढो मूढ इवायते ४ दृष्ट्वाऽनुयांतमृषिमात्मजमप्यनग्नं देव्यो ह्रिया परिदधुर्न सुतस्य चित्रं तद्वीक्ष्य पृच्छति मुनौ जगदुस्तवास्ति स्त्रीपुंभिदा न तु सुतस्य विविक्तदृष्टेः ५ कथमालक्षितः पौरैः संप्राप्तः कुरुजांगलान् उन्मत्तमूकजडवद्विचरन्गजसाह्वये ६ कथं वा पांडवेयस्य राजर्षेर्मुनिना सह संवादः समभूत्तात यत्रैषा सात्वती श्रुतिः ७ स गोदोहनमात्रं हि गृहेषु गृहमेधिनां अवेक्षते महाभागस्तीर्थीकुर्वंस्तदाश्रमं ८

रखनको भेद है तुमारे पुत्रके भेद नहीहे पवित्र दृष्टि है ५ सो शुकदेव पुरके लोकन करिके केसे जानीये जो शुकदेव
कुरजांगल देशनिमे प्राप्त है उनमत मूक जड ईनकी सी नांई हस्तनापुरमे विचरे हे ६ पांडुवंसमे भयो राजान में रि
षि एसो जो परीक्षत ताको शुकदेव करिके सहित संवाद केसो होत भयो हे तात या संवादमे यह भागवत संहिता होत
भई ७ सो शुकदेव गृहस्थनके घरमें भिक्ष्याके लिये गायके दुहिवे मात्र जो काल ताहि पंडो देखे हे सो उ भिक्ष्याके
के अर्थ नही तिन गृहस्थनके आश्रम ताहि पवित्र करिवेके लिये जो एसे या ही लीये हे: ८ श्रीकृष्णायनमः ॥ १

हे सूत अभिमन्यु को वेटा परीक्षित ताहि भागवतन मे उत्तम कहते हैं ताप रिक्षत को वडो आश्चर्य रूप जन्म कर्म्म तिनें कहो ९ सो चक्रवर्ती जो परिक्षत पांडुवंस के मान को वडावन हारो कोन कारन तें राजलक्ष्मी ताहि अनादर करिके गंगा के तीर अनसन ह्वतलें कें वेठत भयो १० जाके चरन पीठकूं अपने कल्यान के लिये वैरी जे राजा हैं ते धन जे हें तिनें लाई के नमस्कार करें हें सो वीर दुस्त्यज जो राजलक्ष्मी हे ताहि प्रानन सहित तरुण अवस्था ही में छोडवे की इछा करत भयो ११ उत्तम श्लोक परायन जो जन ते लोक के लिये सम्रद्धके लीये जीवें हें अपने अर्थ नहीं जीवें हें ओर यह जो परीक्षत सो आरन कूं आश्रे

अभिमन्युसुतं सूत प्राहुर्भागवतोत्तमं तस्य जन्म महाश्चर्यं कर्माणि च गृणीहि नः ९ स सम्राट् कस्य वा हेतो पांडूनां मानवर्द्धनः प्रायोपविष्टो गंगायामनादृत्याधिराट् श्रियं १० नमंती यत्पादनिकेतमात्मनः शिवाय हानीय धनानी शत्रवः कथं स वीरः श्रियमंग दुस्त्यजां युवैषतोत्स्रष्टुमहो सहासुभिः ११ शिवाय लोकस्य भवाय भूतये य उत्तमश्लोकपरायणा जनाः जीवंती नात्मार्थमसौ पराश्रियं मुमोच निर्विद्य कुतः कलेवरं १२ तत्सर्वं नः समाचक्ष्व पृष्टो यदिह किंचन मन्ये त्वां विषये वाचां स्नातमन्यत्र छांदसात् १३ सूत उवाच ॥ द्वापरे समनुप्राप्ते तृतीये युगपर्यये जातः पराशराद्योगी वासव्यां कलया हरेः १४ स कदाचित्सरस्वत्या उपस्पृश्य जलं शुचि विविक्त एक आसीन उदिते रविमंडले १५ परावरज्ञः स ऋषिः कालेनाव्यक्तरंहसा युगधर्मव्यतिकरं प्राप्तं भुवि युगे युगे १६

ऐसे जो अपनो देह ताहि निरविकार के कोन कारन ते छोडत भयो १२ जो कछु इहां पूछें हें सो सव तुमारे आगे कहो विन दिते अन्यत वानी के विषे में तुमें पारंगत माने हें १३ सूत जी कहें हें तीसरे जोग को जो ना के विषे जो द्वापर जुग प्राप्त नये संते पराशर ते सत्यवती में ज्ञानी जो व्यास जो जन्म लेत भये १४ सो व्यास देव जी काहू समे सरस्वती के जल में स्नान करके एकांत देश में सूर्ज मंडल उदे भए वैठे भए १५ भूत भवष्यत जाने हें ऐसे जो व्यास सो अव्यक्त गति है वेग जाको ...धर्म नको संकर प्राप्त भयो ताहि देखकरि प्रसन्न भये हे १६ ओर हू

ओर ता काल ने किये जो सरीरादिक जे भाव तिनके सामर्थ्य को जो नास ताहि देखिके ओर नहीं हैं श्रद्धा जिनके निसत्व दुष्ट हे मन जिनको काल नें हरी हें आयु जिनकी १७ ओर दुर्भाग ऐसे जो जन तिनें देख के व्यासदेव जी दिव्य नेत्र करि सव वर्ण आश्रमन को जो हित हे ताहि ध्यान करत भए कैसे हैं व्यास सफल है दृष्टि जिनकी १८ प्रजान कूं शुद्ध वेद के चातुर्होत्र कर्म ताहि यज्ञ ताय विस्तार करिवे के लीये एक जो वेद ताहि चार प्रकार करत भए १९ ऋगयजु साम अथर्वन ए हें नाम तिनके ऐसे चार वेद उद्धार कीए इतिहास पुरान सो पांचयो कह्यो है २० तिनमें ऋगवेद के धरन वारे पैल ऋषि होत भए सामवेद के पढन वारे जैमिनि कवी होत भए यजुरवेद के पढन वारे एकही वैसंपायन ही होत भए २१ तिनमें ऋगवेद के धरन वारे ओर अथर्व

भौतिकानां च भावानां शक्तिह्रासं च तत्कृतं अश्रद्दधानान्निःसत्वान्दुर्मेधान् ह्रसितायुषः १७ दुर्भगांश्च जनान्वीक्ष्य मुनिर्दिव्येन चक्षुषा सर्ववर्णाश्रमाणां यद्दध्यौ हितममोघदृक् १८ चातुर्होत्रं कर्म शुद्धं प्रजानां वीक्ष्य वैदिकं व्यदधाद्यज्ञसंतत्यै वेदमेकं चतुर्विधं १९ ऋग्यजुःसामाथर्वाख्या वेदाश्चत्वार उद्धृताः इतिहासपुराणं च पंचमो वेद उच्यते २० तत्रर्ग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनी कवि वैशंपायन एवैको निष्णातो यजुषामुत २१ अथर्वांगिरसामासीत्सुमंतुर्दारुणो मुनि इतिहासपुराणानां पिता मे रोमहर्षणः २२ त एत ऋषयो वेदं स्वं स्वं व्यस्यन्ननेकधा शिष्यैः प्रशिष्यैः तच्छिष्यैः वेदास्ते शाखिनोऽभवन् २३ त एव वेदाः दुर्मेधैर्धार्यंते पुरुषैर्यथा एवं चकार भगवान् व्यासः कृपणवत्सलः २४ स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेय एवं भवेदिह २५ इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिना कृतं ॥

न वेद के पढन हारे सुमंत मुनि होत भए ओर इतिहास पुरानन के पढन वारे मेरे पिता रोमहर्षन होत भए २२ ये जे ऋषि हें तें अपने अपने वेद कूं अनेक प्रकार करत भए तिनके जे शिष्य हें प्रशिष्य हें तिनके शिष्य हें तिनकरिके वेद हें सो शाखा युक्त होत भए २३ ते ही वेद दुष्ट हे मत तिनकी ऐसे पुरुषन करि जैसें वेद हें धारन करिये हें तेसें कृपनवत्सल जो भगवान व्यास सो ऐसे करत भए स्त्री शूद्र ओर तीन वर्ण न में जे अधम हें तिनकूं तीनकूं तीन वेद कान नकूं गोचर नहीं हें कर्म रूप

कियो ता मेरकूँ जिनकूँ तांतें संपकीओ तासे जनके आसटें वकीनें कथा
रनकी व्याख्यान कीजो २५

हे वांछनगलेहोयाप्रकारभूतनकेसदाहितनकरिवेमेंप्रवृत्तीएसोजोव्यासदेवजीतिनकेंतृदेसवप्रकारकरिकेप्रसन्नहोनभ
यौ २६ नहीतेप्रसन्नहृदीजाकोधर्मकेजाननवारेसरस्वतीकेपुसन्नपवित्रतीरमैएकांतमेवैठे एसेजोव्यासदेवजीतर्क
करवोलतनभए २७ व्यारनकीयोतेब्रतजानेएसोजोमेनामैवेदगुरअग्निनेनिस्कपटकरकेपूजनकीयेइनकीग्राज्ञा
तनकीनी २८ भारतकेमिषकरिकेवेदकोग्रथीतें सोदिखायोजाभारतमेस्त्रीशूद्रादिकनकरिकेधर्मादिकतेसोदेषिये
हे २९ तोहूमेरोदेहमैभयोजोग्रात्मासोग्रपनेस्वरूपकरकेग्रसंपन्नसोभासेहैं ब्रह्मतेजकरकेजेयुक्ततिनमेंश्रेष्ठहे ३
कहाभागवतधर्महेतेमेनेवहुधानहीनिरूपनकीयेधर्मपरमहंसनकूंप्यारेहैं तेरधर्महरिकूंप्यारेहैं ३१ एसेग्रात्माकूंन्यून

एवंप्रवृत्तस्यसदाभूतानांश्रेयसिद्विजा सर्वात्मकेनापियदात्मानुस्यहृदयंततः २६ नातिप्रसीदद्धृदयः सरस्व
त्याश्शुचौविनर्कयन्विविक्तस्थ इदंप्रोवाचधर्मवित् धृतव्रतेन हि मया छंदांसि गुरवोग्नयः २८ मानता निर्व्यलीके
न गृहीतं चानुशासनं भारतव्यपदेशेन ह्याम्नायार्थश्च दर्शितः दृश्यते यत्र धर्मादि स्त्रीशूद्रादिभिरप्युत ३० अथापि
वत मे दैह्यो ह्यात्मा चैवात्मना विभुः असंपन्न इवाभाति ब्रह्मवर्चस्यसत्तम ३१ किंवा भागवता धर्मा न प्रायेण
निरूपिताः प्रियाः परमहंसानां त एव ह्यच्युतप्रियाः ३२ तस्यैवं खिलमात्मानं मन्यमानस्य खिद्यतः कृष्णस्य नारदो
भ्यागादाश्रमं प्रागुदाहृतं ३३ तमभिज्ञाय सहसा प्रत्युत्थायागतं मुनिं पूजयामास विधिवन्नारदं सुरपूजितं ३४ इति
श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे नारदव्याससंवादे नाम चतुर्थोध्यायः ४ सूत उवाच ॥ अथ तं सुखमासी
सीनं मुपासीनं बृहच्छ्रवाः देवर्षिः प्राह विप्रर्षिं वीणापाणिः स्मयन्निव १

कूं न्यून मानते हैं खेद को प्राप्त ऐसे जो व्यास तिनको पहिलें कह्यो जो आश्रम ता में नारद आवत भये व्यासदेवजी देवतान
करि पूजन एसे सो नारद तिनै जानकैं वेग उठकरकै विधिसौं पूजा करत भये ३४ इति श्रीभागवते नारदव्याससंवा
दे प्रथमस्कंधे चतुर्थोध्याय ४ पांचई अध्याय मे नारद करिकै व्यासकेचित्त प्रसन्न करवे कूं हरिके कीर्तनको जो गौरव भयो उ
पदेस करीये हे १ सूतजी कहे या के अनंतर समीप वैठे हैं सुखरूप आसन पै एसे जो व्यास तिन सुं वडो जिनको जस वीणा

है पाया तिनके उत्तम नारो जो सरीर को अभिमानी सो सरीर करिकै सोयो और मन को अभिमानी जो आत्मा सो तूं मन करिके संतुष्ट हे २
जानवे कूं इच्छ धर्मादिक सो सब तुम को संपन्न हैं सो तुम वडो अद्भुत सगरे धर्मादिक कर्कैं परिपूर्ण एसे जो भारत ता हि करत भए ३
नित्य रूप ऐसे सो जो परम ब्रह्म सो तुमने जान्यो और मन से हैं तो हूं आत्मा ते नाहि सो च करो हो सो कहा ते कैसे अर्थ करो जैसे अकृतार्थ सोच क
रेहैं ४ व्यासजी कहे हैं नारद जो तुमने कह्यो हे सो सब मेरे विषें है परंतु मेरो आत्मा नहीं प्रसन्न होत है ग्रगाध है बोध जाको हे स्वामी केवटा
एसे तुम ता ते पूछत हूं ५ सो तुम सब गुह्य में ता हि जानो हो जाते तुमने उपासना करी है जो पुरान पुरुष कारन इनको ह

॥श्रीनारद उवाच॥ पराशर्य महाभाग भवतः कच्चिदात्मना परितुष्यति शारीर आत्मा मानस एव च २ जिज्ञासितं
सुसंपन्नमपि ते महदद्भुतं कृतवान् भारतं यस्त्वं सर्वार्थपरिबृंहितं ३ जिज्ञासितमधीतं च ब्रह्म यत्तत्सनातनं त
थापि शोचस्यात्मानमकृतार्थ इव प्रभो ४ व्यास उवाच ॥ अस्त्येव मे सर्वमिदं त्वयोक्तं तथापि नात्मा परितुष्य
ते मे तन्मूलमव्यक्तमगाधबोधं पृच्छामहे त्वात्मभवात्मभूतं ५ स वै भगवान्वेद समस्तगुह्यमुपासितो यत्पु
रुषः पुराणः परावरेशो मनसैव विश्वं सृजत्यवत्यत्ति गुणैरसंगः ६ त्वं पर्यटन्नर्क इव त्रिलोकीमंतश्च
रो वायुरिवात्मसाक्षी परावरे ब्रह्मणि धर्मतो व्रतैः स्नातस्य मे न्यूनमलं विचक्ष्व ७ श्रीनारद उवाच ॥ भवतानु
दितप्रायं यशो भगवतोऽमलं येनैवासौ न तुष्येत मन्ये तद्दर्शनं खिलं ८

दुख हरे हैं और मन करिके और इन गुणन करिके युक्त विश्व जो है संसार ताय सृजत है पालन करे है फिर के संहार
करे हैं और गुणन कर के असंग हैं ६ और तुम त्रिलोक में सूर्य की सीनाई डोलो हो और पवन की सीनाई प्राणी जो है तिन
के भीतर विचारो हो ७ बुद्धि के साक्षी हो पारावार जो ब्रह्म ता मे धर्म ते और व्रतन करके पारंगत एसो जो मे ता कूं न्यूनता
है ताहि विचार करो ७ अब नारदजी कहते हैं तुमने भगवान को निर्मल जो जस है सो नहीं कह्यो है जा करके तुमारो जो
आत्मा सो नहीं प्रसन्न होते हैं यही तुमने न्यूनता न किये हैं ८ श्रीकृष्णाय नमः श्रीरामचंद्राय नमो नमः

जैसेतेमुनिननमैं श्रेष्ठ धर्मादिकजोअर्थ तेतुमनेवर्णनकीयेहैं तैसैंवासुदेवकीमहीमानहीवर्णनकीनी ८ चित्रहैपदजा मैंऐसोजोवचनसोजगतकोपवित्रकरनवारोहरिकोजोजसवर्णननहीगायो तोवचनकउआनकोतीर्थकहेहैं जावचन मैंमानसरोवरकेविचरनवारे एसैजेहैंहंसरहिकेभक्त तेनैंहीरमैहैं कैसैहंसहैं सुंदरकमलनमैहैं निवासजिनको १०सो जोवानीकोप्रयोगहैं सोजननकेपापकोनासकरैहैं जोअशुद्धहैंपरभगवानकेजसकरिकेअंकितऐसेनामहैंतोसाधुहैं तेसुनेहैं गावैहैंओरवखानैहैं ११ कर्मनकोनिवर्त्तकरनवारो उपाधिरहितएसैंहुंज्ञानहैंसोहरिकीभक्तिकरिकेरहितहैंतोसोऽ

यथाधर्मादयश्चार्थामुनिवर्य्यानुकीर्तिता नतथावासुदेवस्यमहिमाह्यनुवर्णिता ९ नयद्वचश्चित्रपदंह रेर्यशोजगत्पवित्रंप्रगृणीतकर्हिचित् तद्वायसंतीर्थमुशंतिमानसाः नयत्रहंसानिरमंत्युशिक्क्षया १० तद्वाग्वि सर्गोजनताघविप्लवोयस्मिन्प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि नामान्यनंतस्ययशोंकितानियत् शृण्वंतिगायंतिगृणं तिसाधवः ११ नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितंनशोभतेज्ञानमलंनिरंजनं कुतःपुनःशश्वदभद्रमीश्वरे नचार्पि तंकर्मयदप्यकारणं १२ अथोमहाभागभवानमोघदृक् शुचिश्रवाःसत्यरतोधृतव्रतः उरुक्रमस्याखिल बंधमुक्तयेसमाधिनानुस्मरतद्विचेष्टितं १३ ततोन्यथाकिंचनयद्विवक्षतः पृथग्दृशस्तत्कृतरूपनामभिः नकर्हिचित्क्वापिचदुःस्थितामतिर्लभेतवाताहतनौरिवास्पदं १४ जुगुप्सितंधर्मकृतेनुशासतःस्वभा वरक्तस्यमहान्व्यतिक्रमः यद्वाक्यतोधर्मइतीतरःस्थितोनमन्यतेतस्यनिवारणंजनः १५

ताकूंनहींप्राप्तहैं तुमकूंनहींदेखैहैं जोसाधनकालमैंदुखरूपनिष्काम ऐसोउजोकर्मसोईश्वरमैंअर्पनकीयोतोकहां तेसोभावकूंप्राप्तहोतहैं १२ याकारनतेहेमहाभागसफलज्ञानजाकोपवित्रहैजसजाको सत्यमैंरतिधारनकियेहैंव्रतजाने एसैजोतुमसोसवनकेबंधनछुडाइवेवारेसमाधिकरकेभगवानकीजेलीलानितिनेवर्णनकरो १४ जोभगवान लीलातेंओरवस्तुकहिवेकीइच्छाकरैहैं तालीलानैंन्यारीहैं रूप जोकीनाइच्छाकहिवेकीयेहैंतोरूपनितनकरकेंव

सुभावकेकहिवेंआसक्तिएसेजोपुरुषताकूंधर्मकेलीयेनिंदितजोकाम्यकर्मताहिसिखादेहैं ऐसेजोतुमतिनकूंयह वडोअन्यायहैं कारनैंजाकेवचननैंयहीमुख्यधर्महैं एसैनिश्चयजोप्राकृतजनसोधर्मादिककोओरनेकीयोजोनिवारन ताकिनहीमानैहैं १६ निवृत्तजोलोकहैंसोअनंतअंतपारजाकोऐसैजेविभुताकोसुखरूपजोस्वरूपताहिसवविषयनकीनि वृत्तिकरकेंजानवेकूंजोग्यहैं गुणनतेंजेसत्वादिकतिनकरकेंवर्तमान देहादिककोअभिमानी एसैजेजननताकूंतरकी जोलीलानाहिदीखावो १७ स्वधर्मछोडकेंहरिकेचरणारविंदकूंभजनकरतअपक्वतीजोभजननेभ्रष्टहोहैं अथवा

विचक्षणोस्यार्हतिवेदितुंविभोरनंतपारस्यनिवृत्तितःसुखं प्रवर्तमानस्यगुणैरनात्मनस्ततोभवान्दर्श यचेष्टितंविभो १६ त्यक्त्वास्वधर्मंचरणांबुजंहरेर्भजन्नपक्वोथपतेत्ततोयदि यत्रक्ववाभद्रमभूदमु ष्यकिंकोवार्थआप्तोभजतांस्वधर्मतः १७ तस्यैवहेतोःप्रयतेतकोविदोनलभ्यतेयद्भ्रमतामुपर्यधः तल्लभ्यतेदुःखवदन्यतःसुखंकालेनसर्वत्रगभीररंहसा १८ नवैजनोजातुकथंचनाव्रजेन्मुकुंद सेव्यन्यवदंगसंसृतिं स्मरन्मुकुंदांघ्र्युपगूहनंपुनर्विहातुमिच्छेन्नरसग्रहोजनः १९

मरेतोयाभजनकरनवारेकूंअमंगलहोतहैकहूं ओरहतोअमंगलनहीहोहैं ओरतथाभगवतकोजोभजननाहीं करैहैं जोजनमनुष्यनहीवरैहैंतोतिनमनुष्यनकूंस्वधर्मजोहैताईकीयेतेकोनसोअर्थप्राप्तहोयहैं सोसंप्रदायकर वेकहो १८ ओरकोविदजोजोलोकहैंसोताकेअर्थयत्नकरैं जोउपरनीचैंभ्रमनहोतहैतिनकूंनहीमिलेहैं ओरगंभीरहैवेगताको एसोजोकालकालनाकरिकेविषेसुखहैं सोप्राचीनकर्मकरिके दुखकीसीनाईनरक कादिकहुकेविषैमिलेहैं १९ मुकुंदसेवीजोजनहैंसोकवहुंयोनपरैहैं ओरकीइसोनाईसंसारकूंनहींप्राप्तहोहैं

हेव्यासहरिकेचरनारविंदकोआलिंगनताहिस्मरणकरतछोडवेकीइच्छानहींकरैहैंजातेपतजनरसकरिकेवे

भा॰प्र॰
२२

26

यतजो विश्व है सो भगवान ही है भगवान ते सो विश्व न्यारो है जाते जगत को स्थान निरोध संभव होत है सो तुम आ पही जानते हो तोउ तुमकूं हमने एकदेश मात्र दिखायो है २१ हे सफल दृष्टि तुम आप करके ईश्वर जन्म अज जन्म लीयो है ऐसे जो ने हो वा है ने परपुरुष की कला है ताते महान भाव जो हरि तिनके जो पराक्रम सो जगत कूं तिन करके ही लीये वर्नन करो २२ याते पुरुष कूं तप को अरु वेद को इष्ट को सूक्त को बुद्धि दान को ये विद्वान ने सफल कह्यो है जो उत्तम श्लोक के जो गुण तिन को वर्णन करे है २३ अव सतसंग से हरि कथा दिक नको फल अपने वृत्तांत करिके कहे है में पहले कल्प में पहिले जन्म में वेदवादीन की को

इदं हि विश्वं भगवानिवेतरो यतो जगत्स्थाननिरोधसंभवः तद्धि स्वयं वेद भवांस्तथापि ते प्रादेशमात्रं भवतः प्रदर्शितं २१ त्वमात्मनात्मानमवेह्यमोघदृक्परस्य पुंसः परमात्मनः कलां अजं प्रजातं जगतः शिवाय तन्महानुभावाभ्युदयोऽधिगण्यतां २२ इदं हि पुंसस्तपसः श्रुतस्य वा स्विष्टस्य सूक्तस्य च बुद्धिदत्तयो अविच्युतोऽर्थः कविभिर्निरूपितो यदुत्तमश्लोकगुणानुवर्णनं २३ अहं पुरातीतभवेऽभवं मुने दास्यास्तु कस्याश्चन वेदवादिनां निरूपितो बालक एव योगिनां शुश्रूषणे प्रावृषि निर्विविक्षतां २४ ते मय्यपेताखिलचापलेऽर्भके दान्तेऽधृतक्रीडनकेऽनुवर्तिनि चक्रुः कृपां यद्यपि तुल्यदर्शनाः शुश्रूषमाणे मुनयोऽल्पभाषिणि २५ उच्छिष्टलेपाननुमोदितो द्विजैः सकृत्स्म भुंजे तदपास्तकिल्बिषः एवं प्रवृत्तस्य विशुद्धचेतसस्तद्धर्म एवात्मरुचिः प्रजायते २६

ई एक दासी ता ते होत भयो तब चातुर्मास में ता वर्षी में एक ठौर वस वे की इच्छा करे है ऐसे जे जोगी तिन की टहल करने में लगायो के सो में बालक हो २४ त्याग कीये है सब चापल जाने इंद्रीन को जीतन वारो नहीं धारन की यो है खिलोणा जाने ऐसो बोलूं टहल करूं ऐसो में ता के विषे तुल्य है दृष्टि जिन की ऐसे जे मुनि ने कृपा करत भए २५ ब्राह्मन ने करिके अपनी उछी ष्ट यां आज्ञा दीयो एक बेर भोजन करत भए ता भोजन करि दूर भयो पाप जाको ऐसे प्रवृत्ति विशुद्ध जाको चित है तिन की धर्म

27

तरांनि सोन त्यक सं कथा गामें ऐसे जे मुनि तिन के अनुग्रह करिके मनोहर जो कथा ति ने सुनत भयो अद्धा करिके छिन छिन में तिन कथान कूं सुनतें ऐसो जो में ता को प्यारो है जस जाको ऐसो जो भगवान ता के विषे रुचि होत भई ता २७ ता समें ते महामते प्यारो है जस जिन को ऐसो जो भगवत भगवान तिन के विषे पाई है रुचि जाने ऐसो जो में ता की स्थित मति होत भई जा मति करिके प्रपंच ते न्यारो ब्रह्मरूप ऐसो में ता के विषे स्थूल सूक्ष्म ऐसो जो सरीर सो आपनी अविद्या करिके कल्पित है २८ या प्रकार सरद वरसा रितु में त्रिकाल निर्मल हरि को यस सुनत हूं ता के रजतम इन की नास करन वारी ऐसी भक्ति है सो प्रवृत्त होत भई

तत्रान्वहं कृष्णकथाः प्रगायतामनुग्रहेणाशृणवं मनोहराः ताः श्रद्धया मेऽनुपदं विशृण्वतः प्रियश्रवस्यंग ममाभवद्रुचि २६ तस्मिंस्तदा लब्धरुचेर्महामते प्रियश्रवस्यस्खलिता मतिर्मम ययाहमेतत्सदसत्स्वमायया पश्ये मयि ब्रह्मणि कल्पितं परे २७ इत्थं शरत्प्रावृषिकावृतू हरेर्विशृण्वतो मेऽनुसवं यशोऽमलं संकीर्त्यमानं मुनिभिर्महात्मभिर्भक्तिः प्रवृत्तात्मरजस्तमोपहा २८ तस्यैवं मेऽनुरक्तस्य प्रश्रितस्य हतैनसः श्रद्धधानस्य बालस्य दान्तस्यानुचरस्य च २९ ज्ञानं गुह्यतमं यत्तत्साक्षाद्भगवतोदितं अन्ववोचन्गमिष्यन्तः कृपया दीनवत्सलाः ३० येनैवाहं भगवतो वासुदेवस्य वेधसः मायानुभावमविदं येन गच्छन्ति तत्पदं ३१ एतत्संसूचितं ब्रह्मंस्तापत्रयचिकित्सितं यदीश्वरे भगवति कर्म ब्रह्मणि भावितं ३२

कैसें जस है महात्मा जे मुनि तिन करिके गायो है २८ ऐसे अनुरक्त नम्र पाप है जाके नष्ट हो गए हैं श्रद्धायुक्त बालक जितेंद्रि मुनि नु के दास ता कूं दिन वसल जा वे की इच्छा करे हैं ऐसे जे मुनि ति ने कृपा करिके साक्षात भगवान ने कह्यो अति गोप्य ऐसो जो ज्ञान ता सि करत भए ३० जा ज्ञान करिके सर्वज्ञ भगवान वासुदेव जिन की माया को जो प्रभाव ता सि जानत भयो जा ज्ञान करके हरि को जो पद है ताहि प्राप्ति है ३१ हे ब्रह्मन यह तिन ताप को निवृत्त करन वारो ऐसो जो सूचित कीयो है कौन सो ईश्वर भगवान ब्रह्मन ता के विषे

जाकू विके प्रारानन के रोग है सो उपजै है सुव्रत तिसोई जो द्रव्य है सोवो रोग है ताय निवृत्ति न ती करै है जो चित्त सन्त होय तो पवित्र करै है ३३ याप्रकार मनुष्यन कूं क्रियायोग है ते सब संसार के कारन है तेई क्रियायोग ईस्वर ने अर्पन करै तो कर्म निवृत्ति करवेकूं समर्थ होहै ३४ जो यामें भगवान कूं प्रसन्न करन वारो एसो जो कर्म सो करियेहै और जो ज्ञान है सो भक्ति के आधीन है के सोग्यान है भक्ति करकै युक्त है ३५ जा समै में भगवान की सीक्षा करके कर्म है तिनकूं करै ता समै में श्रीकृष्ण के नाम तिने गावै है और श्रीकृष्ण को स्मरन करै है ३६ सो जो भगवान वासुदेव तिनके अर्थ मनकरके हम नमस्कार करै है प्रद्युम्न अनुरुद्ध संकर्षण तिनके अर्थ नमस्का

आमयो यश्च भूतानां जायते येन सुव्रत तदेव ह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सितं ३३ एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वे संसृतिहेतवः त एवात्मविनाशाय कल्पंते कल्पिताः परे ३४ यदत्र क्रियते कर्म भगवत्परितोषणं ज्ञानं यत्तदधीनं हि भक्तियोगसमन्वितं ३५ कुर्वाणा यत्र कर्माणि भगवच्छिक्षयाऽसकृत् गृणंति गुणनामानि कृष्णस्यानुस्मरंति च ३६ नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि प्रद्युम्नायाऽनिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च ३७ इति मूर्त्यभिधानेन मंत्रमूर्तिममूर्तिकं यजते यज्ञपुरुषं स सम्यग्दर्शनः पुमान् ३८ इमं स्वनिगमं ब्रह्मन्नवेत्य मदनुष्ठितं आदान्मे ज्ञानमैश्वर्यं स्वस्मिन् भावं च केशव ३९ त्वमप्यदभ्रश्रुत विश्रुतं विभोः समाप्यते येन विदां बुभुत्सितं प्रख्याहि दुःखैर्मुहुरर्दितात्मनां संक्लेशनिर्वाणमुशंति नान्यथा ४०

रै है ३७ एसे मूर्तिन के नाम करके मंत्रमूर्ति आकार रहित करके रहित एसो जो यज्ञपुरुष ताहि जो पुरुष पूजन करै है सो सम्यक् ज्ञान मानै है ३८ यह अपनो उपदेश मैं ने अनुष्ठान कीयो ताहि जानके भगवान ने सो अपने विषै भाव ज्ञान एस्वर्ज ताहि मो कूं देत भए ३९ बडो है जस जीन को एसे व्यास तुम हूं दुःखन करके पीडीन वेर वेर ऐसे जीव तिनके क्लेश को नास करन वारो हरि को जस जा जस कर के विद्वानन की जानवे की इछा सो समाप्त होहै ४० श्रीकृष्णाय नमः श्री

इति श्रीभागवते प्रथमस्कंधे पंचमोऽध्यायः ५ छठे अध्याय में नारद है सो विश्वास के लीये कृष्ण संकीर्तन नरां भयो और पूर्व ही जन्म भयो ऐसो अपनो आपहि वरनन करै है १ जहां सूत जी एस कहत है एसे नारद जो जन्म कर्म सुन करिके फेर सत्य वती के बेटा भगवान व्यास सो नारद सूं पूछै है १ तुम कूं विज्ञान के देनवारे हात एदुर देश कूं गए तब वालक अवस्था में वर्तमान सो कहा करत भए २ तेवां सारे पुत्र कौन सी जीवका करके उत्तर जो आवुर्दा सो वितीत कीनी कालमान भए संते यह जो दासी पुत्र देह ताहि कैसे छोडत भए ३ यह देवतान में अब जरूरी है के ल्यावे भयो ऐसी जो स्मृति सो क्यों नहीं दूर भई

इति श्रीभागवते प्रथमस्कंधे पंचमोऽध्यायः ५ सूत उवाच एवं निशम्य भगवान् देवर्षेर्जन्म कर्म च भूयः पप्रच्छ तं ब्रह्मन् व्यासः सत्यवतीसुतः १ व्यास उवाच भिक्षुभिर्विप्रवसिते विज्ञानादेष्टृभिस्तव वर्तमानो वयस्याद्ये ततः किमकरोद्भवान् २ स्वायंभुव कया वृत्त्या वर्तितं ते परं वयः कथं चेदमुदस्राक्षीः काले प्राप्ते कलेवरं ३ प्राक्कल्पविषयामेतां स्मृतिं ते सुरसत्तम न ह्येष व्यवधात्काल एष सर्वनिराकृतिः ४ नारद उवाच भिक्षुभिर्विप्रवसिते विज्ञानादेष्टृभिर्मम वर्तमानो वयस्याद्ये तत एतदकारषं ५ एकात्मजा मे जननी योषिन्मूढा च किंकरी मय्यात्मजेऽनन्यगतौ चक्रे स्नेहानुबंधनं ६ सास्वतंत्रा न कल्पाऽसीद्योगक्षेमं ममेच्छती ईशस्य हि वशे लोको योषा दारुमयी यथा ७

लोप करन वारो एसो जो काल सो काहे सो नहीं खंडन करत भयो ४ नारद जी कहे है मो को विज्ञान के देन वारे एसे वेद जाके एसी मेरी माता सो नहीं है और गति जाके ऐसो मैं पुत्र ता में स्नेह वंधन करत भई ६ मेरे योगक्षेम की इछा करे है और पराधीन सो समर्थ न होत भई ईश्वर लोक जो है सो सर्वत्र ईश्वर के वश है वे से वस में रहे जैसे काठ की जो पुतरी है सो वाजीगर के वस में रहत है नित्य प्रति ही वाजीगर के ही आधीन है ७

एसे जो मिथ्या रूप लोक के परसे प्रकार ... ईश्वर के वस में रहे ...
१४ नप्रियकं ... सीजा

नामाता के अपेक्षा करके नाबंलकुलके विषे मे बसत भयो कैसो मैंहूं दिसा देश काल इनने नहीं जानतु और पंच वर्षको बालक हूं ८ एक समै गायदुहायवेकूं घर तें निकसी एसी मेरी माता ता नाहि कालको प्रेर्यो पाउ करवे दष्यो ऐसो जो साप सो काटत भयो कैसी माता है कृपन है ९ ता समै भक्तन की सुषकी इछा करै एसो जो इस्वर तिनको जो अनुग्रहता हि मान के उत्तर दिसाकूं जात भयो जा उत्तर दिसा मे समृध जो देस हैं पुर हैं ब्रज हैं षेत न के नीचे गाम षेती करन वारेन के गाम फूलन की बारी वन उपवन नानां तरे की जे धातु तिनके जे विचित्र ऐसे पर्वत ता धीने तोर हैं

अहं च तद्ब्रह्मकुले ऊषिवांस्तदपेक्षया दिग्देशकालाव्युत्पन्नो बालकः पंचहायनः ८ एकदा निर्गतां गेहात् दुहंतीं निसि गां पथि सर्पोऽदशत् पदा स्पृष्टः कृपणां कालनोदितः ९ तदा तदहमीशस्य भक्तानां शमभीप्सतः अनुग्रहं मन्यमानः प्रातिष्ठं दिशमुत्तरां १० स्फीतान् जनपदांस्तत्र पुरग्रामव्रजाकरान् खेट खर्वट वाटीश्च वनान्युपवनानि च ११ चित्रधातु विचित्राद्रीन् इभभग्न भुजद्रुमान् जलाशयान् शिवजलान् नलीनीः सुरसेवितान् १२ चित्रस्वनैः पत्ररथैर्विभ्रमद् भ्रमरश्रियः नलवेणु शरस्तंब कुश कीचक गह्वरं एक एवातियातोऽहमद्राक्षं विपिनं महत् १३ घोरं प्रतिभयाकारं व्यालोलूक शिवाजिरं

१४

साषा जीन की एसे वृक्ष निर्मल है जल जिनको एसे सरोवर देवतान करि के सेवित एसी सरोवरी चित्र है शब्द जिनको एसे जे पंछी तिनकर के भ्रमाये एसे जे भौरा तिन करि के सोभा जीनकी नरसल नयावास सरकंडे इनके अस्त नपोले बांस तिनकर के गहर बडो वन ता हि देषत भयो कैसो मैं हूं सब को अतिक्रम कर के जाहूं के सो है वन के सो है दुस्तर है भय करते साप उल्लू स्यार इन के षेलवे को स्थान है १३ परिश्रांत है इंद्री देह जाको [illegible] भयो १४ [illegible] सो जो वन ता मे पीपर के नीचे बैठो ऐसो जो मैं सो बुद्धकर के हृदे मे स्थीत एसो जो परमात्मा ता रउ श्रुति आसन की कला कर के युक्त ने वजाके ऐसो जो मै ता के हृदै मे सैं तरवा तर प्रघट होत भयो १७ प्रेम के अतिभार हे भयो कैसो मैं हूं ध्यान करतु भयो २५ भाव करिके जीत्यो जो चित ता करि के चरणारविंदकूं ध्यान करंतु औ करवै रोमांच है अंग है जाको अतिआनंदित और आनंद मैं है अपार मे डुब्यो एसो मैं ते जु ने आप कूं और कूं नहीं नही देषत भयो १८ भगवान को जो रूप सुंदर मन कूं सोक दूर करन वारो ताहि मै न देषत सी घ्र उठत भयो कैसो मैं हूं व्याकु

परिश्रांतेंद्रियात्माहं तृट् परीतो बुभुक्षितः स्नात्वा पित्वा ह्रदेनद्या उपस्पृष्टो गतश्रमः १५ तस्मिन्निर्मनुजेरण्ये पिप्पलोपस्थ आश्रितः आत्मनात्मानमात्मस्थं यथाश्रुतमचिंतयन् १६ ध्यायतश्चरणांभोजं भावनिर्जितचेतसा औत्कंठ्याश्रुकलाक्षस्य हृद्यासीन्मे शनैर्हरिः १७ प्रेमातिभरनिर्भिन्नपुलकांगोतिनिर्वृतः आनंदसंप्लवे लीनो नापस्यमुभयं मुने १८ रूपं भगवतो यत्तन्मनःकांतं शुचापहं अपस्यन्सहसोत्तस्थे वैक्लव्यात् दुर्मना इव १९ दिदृक्षुस्तदहं भूयः प्रणिधाय मनो हृदि वीक्षमाणोपि नापस्यमवितृप्त इवातुरः २० एवं यतंतं विजने मामाहागोचरो गिरां गंभीरश्लक्ष्णया वाचा शुचः प्रशमयन्निव २१ हंतास्मिन् जन्मनि भवान् न मां द्रष्टुमिहार्हति अविपक्वकषायाणां दुर्दर्शोहं कुयोगिनां २२ सकृद्यद्दर्शितं रूपमेतत्कामाय तेनघ मत्कामः शनकैः साधुः सर्वान्मुंचति हृच्छयान् २३

लता करकै दुखित मन सो हूं १८ सो मै फेर हृदै मैं मन कूं थिर कर के देखवे की इछा करतुं और देखतुं परि न देष न नहीन भयो एसो मै आतुर सो होत भयो १९ एसे निर्जन वन मै यत्न करतु हूं ऐसो जो मै ता सूं बानी न करि के अगोचर एसे जो भगवान् सो गंभीर सुंदर बानी करि के सोक दूर करत से बोलत भए २० जा जन्म मै तू मो कूं देषवे जोग्य नहीं है नहीं जरे हैं कामादिक जिन के एसे जे कुयोगी तिन कूं मैं नहीं देषवे कूं आउतुं २१ हे निष्पाप तेरे अनुराग के लीये एक बेर यह रूप मैने दिषायो है मत कामना जो साधु है सो धीरे धीरे सब कामना जे हैं तिन्हे छोडे है २२

नहीं है मनुष्य जामें ऐसो जो वन: वहुत करी साधन की सेवा ता करकें मोमें स्तितारी दृढ मति होय अवनिंद जो यह देह ताहि छोड
कें मेरे पार्षद भाव कूं प्राप्त होयुगे २३ मोपर मेरे वर में वाधी ऐसी वो मती लोक वहू नष्ट न होयुइगी प्रजान को जो संग और
संघार ता हू में मेरे अनुग्रह तें इस्मरन रहेगो २४ इतनी कहिकें आकास में हैं मूर्ति तिनको रहेते मिले नहीं मत ढूत ए
सो जो इस्वर सो उपराम को प्राप्ति होत भये इतने महात्मन कें मैं श्रेष्ठ एसे जो भगवान् तिनके अर्थ में तिन कहि कें सिर न
वायके प्रनाम करत भयो कैसो मैं हूं तिन करके अनुकंपित हूं २५ त्याग करी है लाज जाने और गई हैं चाह जीन की संनु

सत्सेवया दीर्घयापि जाता मयि दृढा मति हीत्वावद्यमिमं लोकं गंता मज्जनतामसि २३ मतिर्मयि निब
द्धेयं न विपद्येत कर्हिचित् प्रजासर्गनिरोधेपि स्मृतिश्च मदनुग्रहात् २४ एतावदुक्तोपरराम तन्महद्भूतं
नभोलिंगमलिंगमीस्वरं अहं च तस्मै महतां महीयसे शीर्ष्णावनामं विदधेनुकंपिता २६ नामान्यनं
तस्य हतत्रपः पठन् गुह्यानि भद्राणि कृतानि च स्मरन् गां पर्यटन् तुष्टमना गतस्पृहा कालं
प्रतिक्षन् विदो विमदो विमत्सरः २७ एवं कृष्णमतेर्ब्रह्मन् आसक्तस्यामलात्मना कालः प्राद
रभूत्काले तडित्सौदामिनी यथा २८ प्रयुंजमाने मयि तां शुद्धां भागवतीं तनुं आरब्धकर्मनिर्वाणो
न्यपतत्पांचभौतिकः २९ कल्पांत इदमादाय शयानेंभस्युदन्वतः शिशयिषोरनुप्राणं वि
वेसांतरहं विभोः ३०

इहे मन जाको गयो तें मद जाको ऐसो मैं पृथ्वी में डोलत भगवान के गुह्य मांगल नाम कर्म तिनैं स्मरन करत का
लकि प्रतिक्षा करत विमत्सर होत भयो २६ एसें कृष्ण तें मति जाकी आसक्ति नहिं है आत्मा जाको एसो जो मैं ता कूं अ
पने अवसर में काल है सो प्रगट होत भयो कैसें जैसें सुदामा पर्वत में विजुली प्रगट होत हैं २७ भगवान कहिकें मेरे वि
षे शुद्ध भागवती तनु दीये संतें आरब्ध कर्म की पूरे समाप्त जामें जामें एसो पंचभूत को देह गिरत परत भयो २८
कल्पांत में त्रिलोकी संधार करके समुद्र के जल में सोये नारायन तिन में सोइवे की इच्छा करें एसो जो ब्रह्मा ताके स्वास में

जाय हिताके सुने तें परम पुरुष के जन भगवान श्री कृष्ण तिन में पुरुषन के सोक मोह भय इनकी नास करनवारी एसी जो भक्ति सो
उपजै है ७ सो व्यास देव जी भागवती संहिता है ताय करिकें सो धिकरिकें निवृत्त मार्ग में रति एसो जो अपनो शुक देव जी ताहि पढावत
भए ८ शौनक पूछें हैं सो शुकदेव जी निवृत्त मार्ग में रति हैं सर्वत्र उपेक्षक हैं आत्माराम हैं सो कौन कारन करिकें या संहिता कूं पढत
भए ९ सूत जी कहत भए आत्माराम ग्रंथन तें निवृत्त जयो एसो मुनि हैं तेहू भगवान के विषें अहैतुकी जो भक्ति ताहि करें हैं हरि या प्र
कार के हैं गुन जिनके एसे हैं १० हरि के गुनन करिकें आक्षिप्त है मति जाकी एसो भगवान शुकदेव जी सो वडो आख्यान श्री भागवत ता

यस्यां वै श्रूयमाणायां कृष्णे परमपुरुषे भक्तिरुत्पद्यते पुंसां शोकमोहभयापहा ७ स संहितां भगवतीं कृत्वानुक्र
म्य चात्मजं शुकमध्यापयामास निवृत्तिनिरतं मुनिं ८ शौनक उवाच: स वै निवृत्तिनिरतः सर्वत्रोपेक्षको मुनि क
स्य वा वृहतीमेतामात्माराम: समभ्यसत् ९ सूत उवाच: आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रंथा अप्युरुक्रमे कुर्वं
त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरि १० हरेर्गुणाक्षिप्तमतिर्भगवान्वादरायणि अध्यगान्महदाख्यानं नि
त्यं विष्णुजनप्रिया ११ परीक्षितोथ राजर्षेर्जन्मकर्मविलापनं संस्थां च पांडुपुत्राणां वक्ष्ये कृष्णकथोदयं
१२ यदा मृधे कौरवसंजयानां वीरेष्वथो वीरगतिं गतेषु वृकोदराविद्धगदाभिमर्शभग्नोरुदंडे धृ
तराष्ट्रपुत्रे १३ भर्तुः प्रियं द्रौणिरिति स्म पश्यन् कृष्णासुतानां स्वपतां शिरांसी उपाहरद्विप्रियमेव तस्य
जुगुप्सितं कर्म विगर्हयंति १४

दि पढत भए कैसे शुकदेव जी हैं नित्य विष्णुजन प्यारे हैं तिनकूं ११ याके अनंतर राजऋषि जो परीक्षित है ताको जन्म
कर्म मरसु और पांडव पुत्रन को मृताम स्थान ताहि कृष्ण कथा सो उदै होई जैसें तैसें कहूंगो १२ जा समै संग्राम में कौरव
और संजय इनके जे वीर ते मरसु के प्राप्त भए और भीम की गदा के स्पर्स करिकें टूट गई हैं जांघ जाकी एसो जो धृत
राष्ट्र को वेटा दुर्योधन जव भयो १३ तव दुर्योधन कौ प्रिय [illegible] देखें हैं ऐसो जो अस्वत्थामा सो प्यायो द्रौपदी

माताजो द्रोपदीसो बालपुत्रनको नाससुनिकरिकैं जोरतायरोवत भई और आंसूनकरब्याकुल भए नेत्रनाकेए सीद्रोपदीताहिसमाधानकरअर्जुनवोले २५ हे भद्रेजासमैंवालकनमैं नीचआततार्ई एसोजो अस्वत्थामाताकोजोशिरताहिगांडीवतें छुटेजेवानतिनकरिकेतेरेपासलाउंगोपिवुजाको आसनकरिकेजरंलेपुत्रजाके असीजो तुस्नानकरैगी तासमैंतेरेसोककेआंसूनकोपोछौंगो २६ असैजोअर्जुनप्यारीजोद्रोपदीताहिसमाधानकरत सुंदरविचित्रवचनकरिकेंसमाधानकरकेश्रीकृष्णहैमित्रसारथीजाके उगलेधनुषजाकोवांध्योहैवचनजाने हनुमानतेध्वजामेंजामेंजाके असोअर्जुनगुरुपुत्रतेतालियकरिकेपीछेदोरतभयो २७ वालकनकोमारनवारोकांपेहेंबहेजा

मानाधिश्रवनांनिधनंस्तनांनांनिसम्यघोरंपरितप्यमाना नदारुदद्वाष्पकलाकुलाक्षीतांसांत्वयन्नाहकिरीटमाली २५ तदाशुचस्तेप्रमृजामिभद्रेयद्ब्रह्मवंधोःशिरआततायिनः गांडीवमुक्तैर्विशिखैरुपाहरेत्वाक्रम्ययत्स्नास्यसिदग्धपुत्रा २६ इतिप्रियांवल्गुविचित्रजल्पैःससांत्वयित्वाच्युतमित्रसूतः अन्वद्रवद्दंसितउग्रधन्वाकपिध्वजोगुरुपुत्रंरथेन २७ समापतंतंसवलक्ष्यदूरात् कुमारहोद्विग्नमनारथेनः २७ पराद्रवत्प्राणपरीप्सुरुर्व्यांयावद्गमंरुद्रभयायथार्कः २८ यदाशरणमात्मानमैक्षतश्रांतवाजिनं अस्त्रंब्रह्मशिरोमेनेआत्मत्राणंद्विजात्मजः २९ अथोपस्पृश्यसलिलंसंदधेतत्समाहितः अजानन्नपिसंहारंप्राणकृच्छ्रउपस्थिते ३०

कोमारणवचायवेंकोतेहग्याजाके एसोजोअश्वत्थामाआवतजोअर्जुनताहिदेषकें जहांताईजाकेजायवेकी सामर्थ्यहैंजहांताईएथ्वीमैंभाजतभयो जैसेरुद्रके भयतेंब्रह्माभाज्यौ अथवासूर्यजैसेंभजतभयो नहींहैसरनजाकुंताहिदेषोजाके असोजासमैंआपकुंदेषतभयो तासमेंवालकनकोजोपुत्रअश्वत्थामासोअपनीरक्षाकेलीयेब्रह्मस्त्रहैताहिमानतभयो २९ याकेअनंतरआचमनकरिकेंध्यानकरकेंब्रह्मास्त्रकेजायसंधानकरततभयो नाग्रहजूकेंचेवेवतनहीजाने तोउप्राणनकुंकष्टदेषकेंब्रह्मास्त्रचलावतभयो ३० श्रीकृष्णायनमः श्रीहरेनारायनवासुदे

नाअस्त्रतेंप्रचंडसवदिशानमैंतेजहैसोप्रगटहोतभयो प्राननकेनासकरनवारोतेजताहिदेषकेंअर्जुनश्रीकृष्णसंकुलतभयो ३१ हेकृष्णहेकृष्णहेमहावाहो भक्तनकेंअभयकरनवारे संसारतेंजेजरेहैंतिनकुंसंसारकेनासकरनवारेतुमहो ३२ तुमआदिपुरुषहो साक्षातईश्वरहो परेहोमायातेंविछिन्नकरकेंमायाकुंदूरकरिकेंस्वरूपजोआत्माताकेविषेंस्थितहो ३३ मायातेंमोहितहैचित्तजाको असोजोजीवलोकताकुंअपनेप्रभावकरिकेंधर्मादिजोफलताहितुमदेहो ३४ तैसेंईतुमारोयहअवतारएथ्वीकेभारहेतिनेहरवेंकेलीयेहैं औरअनन्यजोभक्तिजोग्

ततःप्रादुःकृतंतेजःप्रचंडंसर्वतोदिशं प्राणापदमभिप्रेक्ष्यविष्णुंजिष्णुरुवाचह ३१ अर्जुनउवाच कृष्णकृष्णमहाबाहोभक्तानामभयंकर त्वमेकोदह्यमानानामपवर्गोसिसंसृतेः ३२ त्वमाद्यःपुरुषःसाक्षादीश्वरःप्रकृतेःपरः मायांव्युदस्यचिच्छक्त्याकैवल्येस्थितआत्मनि ३३ सएवजीवलोकस्यमायामोहितचेतसः विधत्सेस्वेनवीर्येणश्रेयोधर्मादिलक्षणं ३४ तथायंचावतारस्तेभुवोभारजिहीर्षया स्वानांचानन्यभावानां अनुध्यानायचासकृत् ३५ किमिदंस्वित्कुतोवेतिदेवदेवनवेद्म्यहं सर्वतोमुखमायातितेजःपरमदारुणं ३६ श्रीभगवानुवाच वेत्थेदंद्रोणपुत्रस्यब्राह्ममस्त्रंप्रदर्शितं नैवासौवेदसंहारंप्राणवाधउपस्थिते ३७ नह्यस्यान्यतमंकिंचिदस्त्रंप्रत्यवकर्शनं जह्यस्त्रतेजउन्नद्धमस्त्रज्ञोह्यस्त्रतेजसा ३८ सूतउवाच श्रुत्वाभगवताप्रोक्तंफाल्गुनःपरवीरहा स्पृष्ट्वापस्तंपरिक्रम्यब्राह्मंब्राह्मायसंदधे ३९

पनेभक्तितिनकेअनंतरध्यानकेअर्थहैं ३५ हेदेवनकेदेवयहतेजकहांतेसवओरतेंमुखजाकोवडोभयंकरएसोजेजहांतेंआवैहै ३६ भगवानकहतेहेंअर्जुनद्रोणपुत्रअश्वत्थामाकोब्रह्मास्त्रहे नातीमेप्राननकुंवाधाभयेसंतेदिषायोहैयहसंहारकुंनहीजानेहेंगजानैहे ३७ अस्त्रकोनिवारनकरनवारोकोईनहीहैं यहअस्त्रमेजउत्कटहैताहिअस्त्रकोजाननवारोतुंअपनेअस्त्रतेजकरकेंनासकरहेउ ३८ सूतजीकहैहैंभगवानकोवचनकरसुनकरकेंवैरीनकोमारनवारोअर्जुनसोजलकोआचमनकरिकेंश्रीकृष्णकीपरिक्रमादेकेंब्रह्मास्त्रकुंनिवर्तकरवेंकेलीयेअपनोब्रह्मास्त्रसंधान

भा·प्र·
१८

36

दोउ अस्त्रनके तेज परस्पर मिलकरिकै बाननकरि कै वेढीत आकाश पृथ्वी इनैं आवरन करिकै वढत भए जैसे प्रले
मैं सूर्य अग्नि वढे हैं ३० दोउ अस्त्रनको तेज तिन लोकनकूं जरावै हैं वढो है ताहि देखकै जरे जैसे सगरी प्रजा ते प्रले मानत
भई ३१ प्रजानको नास देखकै और लोकनकूं जरावै हैं लोकनको नास देखकै श्रीकृष्णको मति जानिकै अर्जुन दोनो
अस्त्रनको संघार करत भयो ३२ जेवरी सूं बांधकरिकै बलतें डेरान मैं लीये जाय है ऐसो अर्जुन सो क्रुद्ध हो कृष्ण अस्वत्था
मा नारी बांधत भयो जैसे पसुकूं डोरी करिकै बांधे है जेवरी सूं बांधकरिकै बलतें डेरान मैं लीयें जात है ऐसो अर्जुन तासूं कृ

संहत्यान्योन्यमुभयोस्तेजसी शरसंवृते आवृत्य रोदसी खं च ववृधातेऽर्कवह्निवत् ३० दृष्ट्वास्त्रतेजः
स्तु तयोस्त्रींल्लोकान् प्रदहन्महत् दह्यमानाः प्रजाः सर्वाः सांवर्तकममंसत ३१ प्रजोपद्रवमालक्ष्य लोकव्य
तिकरं चितं मतं च वासुदेवस्य संजहारार्जुनो द्वयं ३२ ततः आसाद्य तरसा दारुणं गौतमीसुतं बबंधा
मर्षताम्राक्ष पशुं रशनया यथा ३३ शिवराय निनीसंतं रज्ज्वा बध्वा रिपुं बलात् प्राहार्जुनं प्रकुपितं भग
वानंबुजेक्षण ३४ मैनं पार्थार्हसि त्रातुं ब्रह्मबंधुमिमं जहि योसावनागसः सुप्तानवधीन्निशि बाल
कान् ३५ मत्तं प्रमत्तमुन्मत्तं सुप्तं बालं स्त्रियं जडं प्रपन्नं विरथं भीतं न रिपुं हंति धर्मवित् ३६ स्वप्रा
णान्यः परप्राणैः प्रपुष्णात्यघृणः खलः तद्वधस्तस्य हि श्रेयो यद्दोषाद्यात्यधः पुमान् ३७ प्रतिश्रुतं च भ
वता पांचाल्यै शृण्वतो मम आहरिष्ये शिरस्तस्य यस्ते मानिनि पुत्रहा ३८

मतवारे नें अजित के क्रोध करि है ऐसे जो भगवान सो बोलत भए ३४ अर्जुन याहि रक्षा करिवेकूं जोग नहीं है ब्रा
ह्मणन मैं नीच यह अस्वत्थामा नाहि मारि जो यह निरपराध राजीमें सोये बालकनि ने मारत भयो ३५ जो मतवारे
असावधान तें सो पीत बालक है जड है स्त्री है सरण आयो है टूटे रथ वारो डरप्यो है ऐसे जो वैरी ताहि धर्मवे
त्ता है सो नहीं मारे है ३६ जो अपने प्राणहि तिनें औरनके प्राणन करिकै पोषन करे है निर्दई है दुष्ट है ताको वध है
सो कल्याण है जाके दोष ते पुरुष नरक मैं नहीं जाय है ३७ मैंने मेरे सुनत द्रौपदी के अर्थ प्रतिज्ञा करी ही है मानिनी

... आततायी है अवनीहूं अपने बंधुनको मारनवारो जा जोधनको प्रिय करिवेवारो है औ
रकुलमैं दूसन है याही तें हे वीर वध करवेकूं जोग है ३९ एसे धर्मकी परीक्षा करत करत जो कृष्ण तिन्हें प्रेर्यो सो
जो अर्जुन सो गुरुपुत्र तें मारिवेकी नहीं इच्छा करत भयो यद्यपि पुत्रनको मारनवारो है तै ४० जाके अनंतर गोविंद है प्या
रे सारथी जाके एसो अर्जुन सो अपने डेरान मैं आयके मरे बेटानको सोच करत द्रौपदी ताके अर्थ अस्वत्थामा नाहि नि
वेदन करत भयो ४१ पशुवत् बंधिके लायो पापकर्मकी नाई पासन सूं बंध्यो निंदित कर्म करिके नीचो है मुख जाको अपकार

37

तदसौ वध्यतां पाप आततायात्मबंधुहा भर्तुश्च विप्रियं वीर कृतवान्कुलपांसनः ३९ एवं परी
क्षता धर्मं पार्थः कृष्णेन चोदितः नैच्छद्धंतुं गुरुसुतं यद्यप्यात्महनं महान् ४० अथोपेत्य स्वशिवि
रं गोविंदप्रियसारथीः निवेदयत्प्रियायै तं शोचंत्या आत्मजान्हतान् ४१ तथाहृतं पशुवत्पाशबद्ध
मवाङ्मुखं कर्मजुगुप्सितेन निरीक्ष्य कृष्णापकृतं गुरोः सुतं वामस्वभावा कृपया ननाम च ४२ उवा
च चासहंत्यस्य बंधनानयनं सती मुच्यतां मुच्यतामेष ब्राह्मणो नितरां गुरुः ४३ सरहस्यो धनुर्वेदः
सविसर्गोपसंयमः अस्त्रग्रामश्च भवता शिक्षितो यदनुग्रहात् ४४ स एष भगवान्द्रोणः प्रजारूपेण वर्त
ते तस्यात्मनोऽर्धं पत्न्यास्ते नान्वगाद्वीरसूः कृपी ४५ तद्धर्मज्ञ महाभाग भवद्भिर्गौरवं कुलं वृजिनं नार्हति
प्राप्तुं पूज्यं वंद्यमभीक्ष्णशः ४६ मा रोदीदस्य जननी गौतमी पतिदेवता यथाहं मृतवत्सार्ता रोदिम्य

करनवारो एसो गुरुको पुत्र ताहि तहां प्राप्त करिकै देख करकै कोमल है सुभाव जाको
याकूं बांध करिकै जो लायवो ताहि न सहती सरावै है एसी जो द्रौपदी नमस्कार करत भई ४२
गुरुतें गुप्त मंत्र करिकै सहित धनुर्वेद विद्या और अस्त्रको चलायवो और निवारवो सो तैं अर्जुन सीखे याते छोडि देहु ४३ जाने अस्त्र
है ४४ सो यह अस्वत्थामा भगवान द्रोणाचार्य तें पुत्ररूप करिकै वर्ते है तिनको अर्ध अंग
नाहि द्रोणाको जो आतपना को अर्धधर्मपत्नी कृपी है ४५

तातें हे धर्मज्ञ हे महाभाग नुम कविके गुरु नको कुल दुख पाइवे कं जोग्य नहींहैं रजवे कं वंधना करवे कं योग्य हैं ४७ पतिहे देवता जाके एसी जो मा कृपी सोम तिरोओ मरेहें पुत्र जाके दुखी आसं बहैहें मुख मेजाके एसी मेवे रवे रोउदूं ४८ नहींशुद्धहैं आत्मा जिनको एसेजे क्षत्री तिन नने कोधकं प्राप्त कीयोहैं एसो जो वंस कुल सो कवा हे व्या मए सो जो क्षत्रीने को कुल तें नाति परवार सहित जरायदीयो ५० द्रौपदी को धर्मके रवे युक्त न्याय युक्त वैयुक्त व्याण साहित निस्कपट समान अग्रेष एसो जो वचन ताहि राजा युधिष्ठिर तें राजाम तो अनुमोदन करत भयो ५१ नकुलसहदेव

धर्म्यं न्याय्यं सकरुणं निर्व्यलीकं समं महत् राजा धर्मसुतो राज्ञाः प्रत्यनन्दद्वचो द्विजा ४९ नकुलः सहदेवश्च युयुधानो धनंजयः भगवान्देवकीपुत्रो ये चान्ये याश्च योषिताः ५० तत्राहामर्षितो भीमस्तस्य श्रेयान्वधः स्मृता न भर्तुर्नात्मनश्चार्थे योऽहन्सुप्तान्शिशून्वृथा ५१ निशम्य भीमगदितं द्रौपद्याश्च चतुर्भुजः आलोक्य वदनं सख्युरिदमाह हसन्निव ५२ श्रीभगवानुवाचः ब्रह्मबंधुर्न हंतव्य आततायी वधार्हणः मयैवोभयमाम्नातं परिपाह्यनुशासनं ५३

नकुल सहदेव सात्यकी अर्जुन देवकीपुत्र भगवान् हैं सो जे और स्त्रीहैं ते अनुमोदन करत भये ५२ भीमसेन बोलत भयो याको वध ही करिबेजोग्य है ... निसमें भीमके वचन सुनके द्रौपदीके वचन सुन ... भयो ५३ भीमको वचन सुनके और द्रौपदीको वचन सुनके ... कहत भए ५४

हे ईस लोहे को तपो हैयोरे सो वान मेरे सन्मुख आवे हैं सो हे नाथ मोकु भलेहि दग्ध करे मेरो गर्भ नहीं गिरे ९ ... भक्तवत्सल जो भगवान् सो उतराको वचन सुनिके पांडवनको वंस नष्ट करवेकं अश्वत्थामा को अस्त्र जानत भए ११ हे शौनक ता समे पांडवनहूने आपने सन्मुख आवे ऐसे पांच बान निनको देखिके आपने अस्त्र लेत भए १२ अनन्य विषय हैं आत्मा जिनको एसे जे पांडव तिनको दुख देखके आपनो अस्त्र सुदर्शनचक्र ताकरि

अभिद्रवति मामीश शरस्तप्तायसो विभो कामं दहतु मां नाथ मा मे गर्भो निपात्यतां १० सूत उवाचः उपधार्य वचस्तस्या भगवान्भक्तवत्सलः अपांडवमिदं कर्तुं द्रौणेरस्त्रमबुध्यत ११ तर्ह्येवाथ मुनिश्रेष्ठ पांडवाः पंच सायकान् आत्मनोऽभिमुखान्दीप्तानालक्ष्यास्त्राण्युपाददुः १२ व्यसनं वीक्ष्य तत्तेषामनन्यविषयात्मनां सुदर्शनेन स्वास्त्रेण स्वानां रक्षां व्यधाद्विभुः १३ अंतस्थः सर्वभूतानामात्मा योगेश्वरो हरिः स्वमाययावृणोद्गर्भं वैराट्याः कुरुतंतवे १४ यद्यप्यस्त्रं ब्रह्मशिरस्त्वमोघं चाप्रतिक्रियं वैष्णवं तेज आसाद्य समशाम्यद्भृगूद्वह १५ मा मंस्था ह्येतदाश्चर्यं सर्वाश्चर्यमयेऽच्युते य इदं मायया देव्या सृजत्यवति हंत्यजः १६ ब्रह्मतेजोविनिर्मुक्तैरात्मजैः सह कृष्णया प्रयाणाभिमुखं कृष्णमिदमाह पृथा सती १७ कुंत्युवाचः नमस्ये पुरुषं त्वाद्यमीश्वरं प्रकृतेः परं अलक्ष्यं सर्वभूतानामंतर्बहि

के श्रीकृष्ण आपनेन की रक्षा करत भए १३ सगरे विभूतनके आत्मा योगेश्वर हरि सो उतराके भीतर स्थित तो हैं पांडवनके वंस बढाइवे केलीये आपनी मायाकरिके गर्भ हे मारी आवृत करत भए १४ हे सौनक यद्यपि वृह्मास्त्र है सो सफल हैं नहीं है प्रतिक्रिया जाकी ऐसो है परवे सवने जरे नारिपापवेकरिके शांति होत भए १५ सव आश्चर्यमय श्रीकृष्ण तिनमें यह आश्चर्य मति मानौ जो भगवान् माया देवीकरके यह जो विश्व है ताहि सृजेहें पालेहें और नास करेहें १६ वृह्मतेजने छुटे एसे आपने पुत्रनि नकरके द्रौपदी सहित ... श्रीकृष्ण तिनसो यह कहत भए १७ माया

मायारूपरूचिकरवैठके है अथो ह्यज अव्यय एसे तुमनितिनै नमस्कारकरूं हूं देहाभिमानकरिके तुमनहीलखिवेमे आयेहो कैसे नाटको धरनवारो नटहै सोनहीलखीवेमे आवेहै: १९ ते सेनिर्मलहै आत्माजिनको एसेपरमहंसमुनि तिनकूं भक्तियोगदेवेकेलीयेप्रगटभयेतुमतिनै हमस्त्रीकैसेदेखे २० वसुदेवकेपुत्रदेवकीकोआनंदकेदेनवारेएसेजेकृ ष्णतिनकेतिनके अर्थनमस्कार नंदराजकुमारगोविंदतिनके अर्थनमस्कार २१ कमलहैनाभिमेजिनके कमलकीहै मालाजिनके कमलसेहेनेत्रजिनके कमलसेहैंचरणजिनके २२ हेऋषिकेपाडुपुत्रजोवेसतानैवतुनादेनवंदीखानेते

मायाजवनिकाछन्नमज्ञाधोक्षजमव्ययं नलक्ष्यसे मूढदृशानटोनाट्यधरोयथा १९ तथापरमहंसा नांमुनिनाममलात्मनां भक्तियोगविधानार्थं कथंपश्येमहिस्त्रियः २० कृष्णायवासुदेवायदेवकीनंदना यच नंदगोपकुमारायगोविंदायनमोनमः २१ नमःपंकजनाभायनमःपंकजमालिने नमःपंकज नेत्रायनमस्तेपंकजांघ्रये २२ यथाहृषीकेशखलेनदेवकीकंसेनरुद्धातिचिरंसचार्पिता विमोचिऽ ताहंचसहात्मजाविभोत्वयैवनाथेनमुहुर्विपद्गणात् २३ विषान्महाग्नेःपुरुषाददर्शनादसत्स भायावनवासकृच्छ्रतः मृधेमृधेनेकमहारथास्त्रतोद्रौण्यस्त्रतश्चास्महरेभिरक्षिताः २४ विपदःसंतु नःशश्वत्तत्रतत्रजगद्गुरोभवतोदर्शनंयत्स्यादपुनर्भवदर्शनं २५

कीलोककरिकैपिडीत एसीजोदेवकीसोतुमनेजैसेछुडाईहैसेसेमोकूं कहां छुडाई मोकूंतोतुमहीजोनाथतिननेवेर कैरविपतनकेसमूहतेतिनतेपुत्रनकरकेसहितछुडाइदीनीयानेमातातूंनेमोमेनुसारी प्रथिकमीनहै: २३ वि षतेवडीअग्नितेडंवादिकराक्षसनकेदर्शननते जूआकेऽस्थानतेवनवासकेदुःखतेव हेसंग्राममेंअनेकमहारथीनकेअस्त्रनतेअस्वत्थामाकेअस्त्रतेहेहरेतुमनेहमारीरक्षाकरी २४ हेजगतगुरोत मनसंगरमहूंविपतहै जोनिरंतरहोइ जिनविपतनमेतुमारोदरशनहोहै जादर्शननेफिरसंसारकोदर्शनहूनहीहोहै २५

जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदःपुमान् नैवार्हत्यभिधातुंवैत्वामकिंचनगोचरं २६ नमोकिंचन वित्तायनिवृत्तगुणवृत्तये आत्मारामायशांतायकैवल्यपतयेनमः २७ मन्येत्वांकालमीशानमनादि निधनंविभुं समंचरंतंसर्वत्रभूतानांयन्मिथःकलिः २८ नवेदकश्चिद्भगवंश्चिकीर्षितंतवेहमानस्य नृणांविडंबनं नयस्यकश्चिद्दयितोस्तिकर्हिचिद्द्वेष्यश्चयस्मिन्विषमामतिर्नृणां २९ जन्मकर्मचवि श्वात्मन्नजस्याकर्तुरात्मनः तिर्यङ्नृषिषुयादस्सुतदत्यंतविडंबनं ३० गोप्याददेत्वयिकृतागसिदामता वद्यावदस्साश्रुकलिलांजनसंभ्रमाक्षं वक्त्रंनिनीयभयभावनयास्थितस्यसामांविमोहयतिभी रपियद्बिभेति ३१ केचिदाहुरजंजातंपुण्यश्लोकस्यकीर्तये यदोःप्रियस्यान्ववायेमलयस्येवचंदनं

कीतुमविषैमनिहोहै: २९ हेविस्वकेआत्मापशुनमैंमनुष्यनमैंजलजंतुनमैंअजन्माअकर्तातुमतिनकोजो जन्मकर्मसोअत्यंतविडंवनहै ३० जासमैंतुमनेदहीकीमाटफोरीसोतवजसोदानमारेलाथवांधवेकूंडोरलेत भई तावेरकीसोतुमारीअवस्थामोकूंमोहतकरेहैः ३१ जोतुमआंसूनसंवछोकाजरजिनमेव्याकुलहैनेवजा मेंऐसोअपनोमुखनाचिनीचोकरकेभयकीभावनाकरिकेस्थितहोतजातुमतेभयहैसोउडरीयेहै ३१ कोईएक पुण्यश्लोकजोयुधिष्ठरतिनकीकीर्तिकेलीयेंअजन्माजन्मलिएहैं ऐसेकैहैहैंकोईएकप्यारोजोयदुतिनकीकीर्तकेली

तेवंसमैंजन्मलीयोहैजैसेमलयाचलकीकीर्तिकेलीयेचंदनजनमैहै

भा॰प्र॰
२२

नहां बेठे मैं यान सहित युधिष्ठिर ओर धृतराष्ट्र ओर गांधारी पुत्रशोक करकें दुःखन एसी द्रोपदी तातिष्ठी ओर सु
सुनिनकूं संग लेके समाधान करत भए कैसे तें मरे हैं बंधु जिनके शोक करकें पीडत ए भक्तनकूं मैं उपाप जाको न
हीं ऐसी कालकी गति लाहि दिखामें ४ धुतियो दिना दिकनि ननें तरि लीनो एसो जो अपनो राज्य नासी राजा युधि
ष्ठिरकूं देखरिकें द्रोपदीके केशनको स्पर्श तानें नष्टभई आयु जिनकी एसे जे दुष्ट राजा तिनें वध कराइकें ५ उत्तमरे

नत्रासीमं कुरपतिं धृतराष्ट्रं सहानुजं गांधारीं पुत्रशोकार्तां पृथां कृष्णां च माधवः ३ सांत्वयामास
मुनिभिः हतबंधुन् शुचार्पितान् भूतेषु कालस्य गतिं दर्शयन्नप्रतिक्रियां ४ साधयित्वाजातशत्रोः
स्वं राज्यं कितवैर्हृतं घातयित्वासतो राज्ञः कचस्पर्शक्षतायुषः ५ याजयित्वाश्वमेधैस्तं त्रिभिरुत्तमक
ल्पकैः तद्यशः पावनं दिक्षु शतमन्योरिवातनोत् ६ आमंत्र्य पांडुपुत्रांश्च शैनेयोद्धवसंयुतः द्वैपा
यनादिभिर्विप्रैः पूजितैः प्रतिपूजितः ७ गंतुं कृतमतिर्ब्रह्मन् द्वारकां रथमास्थितः उपलेभेऽभि
धावंतीमुत्तरां भयविह्वलां ८ पाहि पाहि महायोगिन् देवदेव जगत्पते नान्यं त्वदभयं पश्ये य

सामिश्रीजिनमें ऐसे तीन अश्वमेध तिनकरिकें यजन करायके नाराजाको पवित्र कीजो जस ताही दि
सानमें विस्तार करत भए कैसे कैं जैसे इंद्रकी जसजो विस्तार कीयो है ६ सात्यकी उद्धव इनकरिकें स
हित व्यासादिकनसों सनकर एजाविये ७ ऐसे श्रीकृष्णने सो पांडुन तें तिनें आज्ञा मांगकें द्वारका जायवे
कूं कृत्ति मति जिनमें रथमें बैठे जो श्रीकृष्ण सो भयकरकें विह्वल अपने सन्मुख दोरी आवे हें एसी उत्त
रा ... ८ अब उत्तरा श्रीकृष्णजीकी प्रार्थना करे है: हे महायोगीन् हे देव ते ... जगतपति मेरी र

... कृपादिक चिन्ह तिनकरिकें चिन्हित एसे जे तुम्हारे चरण तिनकरिकें अविन यत
... नें से तुम्हारे गये पीछे नहीं सोभित होइगी ३९ सुंदर तें स्वाधि जिनमें एसे जे ये देश ते ओर
वन पर्वत नदी समुद्र ते तुम्हारी चितवनकरिकें सोभित होवे ४० हे विश्वेश हे विश्वात्मन हे विश्वमूर्ति अपने जे
यादव पांडव तिनमें मेरो दृढ स्नेहरूप जो बंधन ताहि काटि डारो ४१ हे मधुपते तुममें अनन्य विषें मेरी मति सो नि
रंतर प्रीतिकूं प्राप्त होउ जैसे गंगाको प्रवाह समुद्रमें प्रतिबंधरूं नहीं जिनें हें तैसे मेरी मति विघन हे तिनें मत

न पंसो ... चित्रपथे हा नीगदाधरः त्वत्पदैरंकिता भाति स्वलक्षणविलक्षितैः ३९ इमे जनपदाः
स्वृद्धाः सुपक्वौषधिवीरुधः वनाद्रिनद्युदन्वंतो ह्येधंते तव वीक्षितैः ४० अथ विश्वेश विश्वात्मन् विश्व
मूर्ते स्वकेषु मे स्नेहपाशमिमं छिंधि दृढं पांडुषु वृष्णिषु ४१ त्वयि मेऽनन्यविषया मतिर्मधुपतेऽसकृत्
रतिमुद्वहतादद्धा गंगेवौघमुदन्वति ४२ श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग्राजन्यवंशदह
नानपवर्ग्यवीर्य गोविंद गोद्विजसुरार्तिहरावतार योगेश्वराखिलगुरो भगवन्नमस्ते ४३ सूत
उवाचः पृथयेत्थं कलपदैः परिणूताखिलोदयः मंदं जहास वैकुंठो मोहयन्निव मायया ४४ तां वाढ
मित्युपामंत्र्य प्रविश्य गजसाह्वयं स्त्रियश्च स्वपुरं यास्यन् प्रेम्णा राज्ञा निवारितः ४५

गिनो ४२ हे श्रीकृष्ण हे अर्जुनके मित्र हे यादवनमें श्रेष्ठ पृथ्वीसो द्रोह करे हें एसे क्षत्री तिनके वंशज राव नतारे
नही क्षीण हे प्रभाव जिनको हे गोविंद गो ब्राह्मण देवता इनको दुःख दूर करन वारो हे: अवतार जिनको हे जोग
श्वर हे सबनके गुरु हैं हे भगवान तुमकूं नमस्कार करे हें: ४३ या प्रकार सुंदर हे पद जिनमें एसे वचन नकरिके अ
स्तुत करे हें: सब महिमा जाकी एसे जो कृष्ण माया करिके मोहित से करत जन करत भए ४४ सो श्रीकृष्ण कुंती
कीजो प्रार्थना तें ना हिं अंगीकार करिके रथके स्थान तें हस्तनापुर में आई कर पीछे कुंती ओर सुभद्रादिक स्त्री ती

५४

४५

इश्वरकी चेष्टाकूं नहीं जानें हैं व्यासादिक तिन नें अद्भुतकर्मा श्रीकृष्ण तिन्नें इतिहास नकरिकें समझाये तोउ राजा युधिष्ठिर सोक करिकें पीडित नहीं समझत भये ४६ धर्मपुत्र जो राजा युधीष्ठिर सो ते ब्राह्मणो सुहृद जनकों जो वध तातें ताकी चिंता करत स्नेह मोह केवस हो कें अज्ञानकूं प्राप्त एसे जो चिंतन ताकरिकें वोलत भए ४७ दुष्ट है आत्मा जाको एसो जो मैं ताको हृदे मे वढो असेजो अज्ञान ताहि देखो कुन्ता सपरको आहार एसो जो देह ताके अर्थ मैंने वहुतजे अक्षौहिनी सेना तेमारी ४८ वालक ब्राह्मण सुहृद मित्र पिता भैया गुरु इनको द्रोही एसो मैं ताको नर्कनें लाख

व्यासाद्यैरीश्वरेहाज्ञैः कृष्णेनाद्भुतकर्मणा प्रबोधितोऽपीतिहासैर्नाबुध्यत शुचार्पितः ४६ आह रा जा धर्मसुतश्चिंतयन् सुहृदां वधं प्राकृतेनात्मना विप्राः स्नेहमोहवशं गतः ४७ अहो मे पश्यता ज्ञानं हृदि रूढं दुरात्मनः पारक्यस्यैव देहस्य वह्यो मेक्षौहिणीर्हताः ४८ वालद्विजसुहृन्मित्रपितृऽ भ्रातृगुरुद्रुहः नमे स्यान्निरयान्मोक्षो ह्यपि वर्षायुतायुतैः ४९ नैनो राज्ञः प्रजाभर्तुर्धर्मयुद्धे वधो द्विषां इति मे न तु बोधाय कल्पते शास्वतं वचः ५० स्त्रीणां मद्धतबंधूनां द्रोहो यो सा विहोत्थितः कर्म भिर्गृहमेधीयैर्नाहं कल्पो व्यपोहितुं ५१ यथा पंकेन पंकांभः सुरया वा सुराकृतं भूतहत्यां तथैवैकां न यज्ञैर्मार्ष्टुमर्हति ५२ इति श्रीभागवते प्रथमस्कंधे परीक्षज्जन्मनि युधीष्ठिरसवादे अष्ट

न वर्षन करिकें हू मोक्ष सो न होयगो ४९ प्रजान को भर्ता जो राजा ता कूं युद्ध में वैरीन को वध सो धर्म है पाप जो सो शास्त्र वचन है सो मोकूं वोधके लीये नहीं होइ है ५० मैंने मारे हैं वंधु जिनके एसी जे स्त्री तिनको ई हां उठो जो द्रोह ताहि गृहस्थन के जे धर्म जे जग्यादिक तिनकरिकें दुर करिवे कूं मै नहीं समर्थ हूं ५१ जैसे कीच करिकें कीच वो सो जल ते नहीं धुवै है मदिरा करिकें मदिरा की ये जो पवित्रता सो नहीं धुवै है तैसे वई जो प्राणीन की

नोमे अध्याय मैं भीष्मजी नै युधिष्ठिर के अर्थ सगरे धर्मन को निरूपन कियो और श्रीकृष्ण अस्तुत कीनी भीऽ ष्मजी की मुक्त भई जिन वर्णन करियें हैं १ एसे प्रजा द्रोह तें डरप्यो राजा सो सब धर्मन की जानवे की इछा ताकरिके कुरुक्षेत्र तें तहां जात भये जहां भीष्म पडे हे २ ता समे सगरे भैया भी सारथि नें सोने नकरिकें भूषित सुंदर घोडा जुरे हैं जिनमैं एसे रथन मै वैठकरवें पीछे ते जात भए हे सो नका हि करो व्यास धोम्यादिक में जात भए हे सो नक भगवान् हे सो ऊ अर्जुन सहित रथ मै वैठ वे जात भए राजा युधीष्ठिर इन सवन करिके सो भा कूं प्राप्त भयो जैसे ज

सूत उवाचः इति भीतः प्रजाद्रोहात्सर्वधर्मविवित्सया ततो विनशनं प्रागाद्यत्र देवव्रतोऽपत त १ तदा तं भ्रातरः सर्वे सदश्वैः स्वर्णभूषितैः अन्वगच्छन्रथैर्विप्रे व्यासधौम्यादयस्तथा २ भग वानपि विप्रर्षे रथेन सधनंजयः सतैर्व्यरोचत नृपः कुवेर इव गुह्यकैः ३ दृष्ट्वा निपतितं भूमौ ऽ दिवश्च्युतमिवामरं प्रणेमुः पांडवा भीष्मं सानुगाः सह चक्रिणा ४ तत्र ब्रह्मर्षयः सर्वे देवर्षयश्च स त्तमा राजर्षयश्च तत्रासन्द्रष्टुं भरतपुंगवं ५ पर्वतो नारदो धौम्यो भगवान्वादरायणः वृह दश्वो भरद्वाजः सशिष्यो रेणुकासुतः ६ वसिष्ठ इंद्रप्रमदस्त्रितो गृत्समदोऽसितः कक्षीवां गौ तमोऽत्रिश्च कौसीकोऽथ सुदर्शनः ७ अन्ये च मुनयो व्रह्मन्व्रह्मरातादयोमला शिष्यैरुपेता आजग्मुः क

क्षन करके कुवेर हे सो सोभा कूं प्राप्त होते हैं भूमि मै परे एसे जे भीष्मजी तिन्नें देव के अनुगन करके सहित श्री कृष्ण करके सहित पांडव हैं ते प्रनाम करत भये कैसे भीष्म परे हैं स्वर्ग तें गीरो देवता जैसो ४ ता समै ता स्थान मैं सवरे व्रह्मरिषि देवऋषि राजाऋषि ते भीष्मजी के देषवे कूं आवत भए ५ परवत नारद धूम्य भगवान् व्यास वृहदश्व भारद्वाज शिष्यन सहित परसराम ६ वसिष्ठ इंद्र प्रमद त्रित ग्रतसमिध असीत कक्षीवान् गौतम अत्र कौसीक सुदर्शन एसव आवत भये ७ तेसो नक और माने हे सुक देवजी आदि लै आवत भए और

वसुनमे उत्तम जो भीष्म यमके जाननवारे हे देशकालके विभाग जाहि जानेहे सो वडोहैं भाग्य जिनको अपने पास आये एसे जे ऋषि तिने पूजा करत भए ९ जगतके इश्वर हृदे मे स्थित मायाकर धारन कीयो है स्वरूप जिने अपने आगे बेठे एसे जो श्रीकृष्ण तिने पूजा करत भये वे सी भीष्म हें श्रीकृष्णके प्रभावकुं जाने हें १० अपने पास बेठे विनयसे नम्र इनकरिके संगति एसे जे पांडव के वेटा तिने बोलत भए अनुरागके आंसुनकरि के अंधी भई हे नेत्र जाकी एसे देषत भए ११ हे धर्मनंदनहो वडे कष्टहै वडो अन्याय है जो तुम लोग जे ऐसे हो पतेसे जीवेकुं नहीं योग्य हो त्यां सताप धर्मवान् येहे आश्रय जिनकुं १२ अतिरथी पांडव मरे संते बालक है पुत्र जाके एसी सो वधु कुंती सो तुम्हारे लीये दुः

तत्स्समेतान्महाभागानुपश्यन्वसवस्सतम पूजयामास धर्मज्ञो देशकालविभागवत् ९ कृष्णंच तत्प्रभावज्ञ आसीनं जगदीश्वरं हृदिस्थं पूजयामास मायया पात्तविग्रहं १० पांडुपुत्रानुपासीनान्प्रश्रयप्रेमसंगतान् अभ्याचष्टानुरागास्रैरंधीभूतेन चक्षुषा ११ अहो कष्टमहोऽन्याय्यं यद्यूयं धर्मनंदनाः जीवितुं नार्हथ क्लिष्टं विप्रधर्माच्युताश्रयाः १२ संस्थिते तिरथे पांडौ पृथा बालप्रजा वधूः युष्मत्कृते बहून्क्लेशान्प्राप्ता तोकवती मुहुः १३ सर्वं कालकृतं मन्ये भवतां च यदप्रियं सपालो यद्वशे लोको वायोरिव घनावली १४ यत्र धर्मसुतो राजा गदापाणिर्वृकोदरः कृष्णोऽस्त्री गांडीवं चापं सुहृत्कृष्णस्ततो विपत् १५ न ह्यस्य कर्हिचिद्राजन्पुमान्वेद विधित्सितं यद्विजिज्ञासया युक्ता मुह्यंति कवयोऽपि हि १६ तस्मादिदं दैवतंत्रं व्यवस्य भरतर्षभ तस्यानुविहितोऽनाथा नाथ पाहि प्रजाः प्रभो १७

त्रनसे बेत लेके पाले तिने प्राप्त होत भई १३ जो तुमकुं दुःख है सो सब कालको कीयो मानत हूं सो काल हे जाके वसमें सब लोक है के से जैसे पवन के सब बादर नकी पंगति हे १४ जहां धर्मको पुत्र राजा युधिष्ठिर हे गदा हाथमे लीये भीम श्रो

रजराज अस्त्रनको धूनवारो अर्जुन गांडीव धनुष श्रीकृष्ण से सुहृद तहां विपत्ति होत भई १५ हे राजन कृष्ण के करवेकी जो इच्छा ताहि जानिवेकुं कोई पुरुष केसेहु नहीं समर्थ हे जाके जानिवेकी इच्छा करके पंडित विसेहु मो

यह कृष्ण ही साक्षात भगवान हैं आदिपुरुष यातें नारायण हें माया करिके लोकनकुं मोहित करत गुप्त भये जादवनमे विचरे हैं १८ अत्यन्त करिके गुप्त याके प्रभावना हि भगवान जो महादेव जो जाने हें और देवऋषि नारद जाने हें साक्षात भगवान जो कपिल देव हे सो जाने हें १९ जाहि सत भामाको वेटा जानो हो प्यारो मित्र सुहृद मानो हो और सुहृद जानते मंत्री करो हो दुत करो हो सारथी करो हो २० सबनको आत्मा समान दृष्टि जाकी अद्वैत नहीं है अहंकार जाके रागादिक ताल एसो जो ईश्वर श्रीकृष्ण हे ता के उंचे नीचे जे कर्म हें तिन करिके की ये मतको विसंभावलो कहु नहीं है २१ हे राजन तो हू एकांत भक्तनमें अ

एष वै भगवान्साक्षादाद्यो नारायणः पुमान् मोहयन्मायया लोकं गूढश्चरति वृष्णिषु १८ अस्यानुभावं भगवान्वेद गुह्यतमं शिवः देवर्षिर्नारदः साक्षाद्भगवान्कपिलो मुनिः १९ यं मन्यसे मातुलेयं प्रियं मित्रं सुहृत्तमं अकरोः सचिवं दूतं सौहृदादथ सारथिं २० सर्वात्मनः समदृशो ह्यद्वयस्यानहंकृतेः तत्कृतं मतिवैषम्यं निरवद्यस्य न क्वचित् २१ तथाप्येकांतभक्तेषु पश्य भूपानुकंपितं यन्मेऽसूंस्त्यजतः साक्षात्कृष्णो दर्शनमागतः २२ भक्त्यावेश्य मनो यस्मिन्वाचा यन्नाम कीर्तयन् त्यजन्कलेवरं योगी मुच्यते कामकर्मभिः २३ स देवदेवो भगवान्प्रतीक्षतां कलेवरं यावदिदं हिनोम्यहं प्रसन्नहासारुणलोचनोल्लसन्मुखांबुजो ध्यानपथश्चतुर्भुजः २४ सूत उवाच युधिष्ठिरस्तदाकर्ण्य शयानं शरपंजरे अपृच्छद्विविधान्धर्मानृषीणां चानुशृण्वतां २५ पुरुषस्वभावविहितान्यथावर्णं यथाश्रमं वैराग्यरागोपाधिभ्यामाम्नातोभयलक्षणान् २६

नुकंपा देषो जा अनुकंपाते प्राननतें छोडत जो मैं ताकुं साक्षात कृष्ण दर्शनकुं प्राप्त होत भए २२ मन प्रवेश करवा नीसो जाके नामको कीर्तन करत योगी देह छोडे हे सो काम कर्म करिके मुक्त होते हे २३ सो देवनको देव भगवान जवताई मे देह छोडूं जवताई पेंडो देषो वे सो कृष्ण में प्रसन्नतासों करिके अरुन नेत्रनकरके सुंदर है मुखकमल जाको ध्यानके विषे हे चार भुजा जाके २४ युधिष्ठिर हे सो भीष्मजीको वचन सुनके सरनके पींजरा मे सोमे हे जिनसुं ऋषिनके सुनत सबके धर्मनकुं पूछत भए २५ पुरुषके स्वभावकर रचे हे वर्णके आश्रमनके धर्म और राग निवृत्ति रूप धर्म तिने पूछत भए २६

दानधर्म राजधर्म मोक्षधर्म स्त्रीनकेधर्म भगवत्‌धर्म तिनेंरुच्चन भए २७ भीष्मजीसंक्षेपमैं विस्तारतें धर्म हैं
तिनैं ओर उपाय सहित धर्म अर्थ काम मोक्ष तिनैं हैं सो नक्रुयथा जो अपनानाआख्यान जिनमैं एसें जेइतीहास तिनैमैं तिनें से
वर्णन करत भए २८ धर्मनकूं कहतजो भीष्मजी तिनकूं सो काल प्राप्त होत भयो जो उत्तरायण काल स्वछंद मृत्युयोगीकूं
वांछतहैं २९ नासमैंरजार रथीनके पालन करनवारो भीष्म सो वानी हैं तिनैं रोककरिकै पीतांवरपहीरे चारभुजाजीन

दानधर्मान्‌राजधर्मान्‌मोक्षधर्मान्विभागशः स्त्रीधर्मान्‌भगवद्धर्मान्समासव्यासयोगतः २७ धर्मार्थका
ममोक्षांश्च सहोपायान्यथा मुने नानाख्यानेतिहासेषु वर्णयामास तत्ववित् २८ धर्म्मंप्रवदतस्तस्य
सकालः प्रत्युपस्थितः योगिनश्छंदमृत्योर्वांछितस्तूत्तरायणः २९ तदोपसंहृत्य गिरः सहस्रणीर्विमुक्तसं
गंमनआदिपूरुषे कृष्णेलसत्पीतपटेचतुर्भुजेपुरः स्थितेमीलितदृग्व्यधारयत् ३० विशुद्धयाधारणया
हताशुभस्तदीक्षयैवाशुगतायुधश्रमः निवृत्तसर्वेंद्रियवृत्तिविभ्रमस्तुष्टावजन्यंविसृजन्‌जना
र्दनं ३१ भीष्मउवाच इतिमतिरुपकल्पिता वितृष्णा भगवति सात्वतपुंगवे विभूम्नि स्वसुखं
उपगते क्वचिद्विहर्तुंप्रकृतिमुपेयुषियद्भवप्रवाहः ३२ श्रीहरयेनमः श्रीकृष्णायनमोनमः

हैं अपने आगे ठाडे एसें जे श्रीकृष्ण तिनमैंनिःसंग अपनो मन ताहि धारन करत भए ३० विशुद्ध धारणा करि
कै दूर भए हैं अशुभ जीनके तिनश्रीकृष्णकी कृपा करिकैं गइहैं आयुधनकी व्यथा जिनकी पाछीकूं आनंदकूं
प्राप्त सर्व इंद्रीनको भ्रमन जाते सो भीष्मजी देहकूं छोडत श्रीकृष्णकी अस्तुति करत भए ३१ अव कहूं कहैं
मइहैं तृष्णा जाकी ऐसी जो मेरी मत सो भैने यादवन मैं श्रेष्ठ जाने ओर वडो नही एसो परमेश्वर ता मैं समर्पन कर

त्रिलोकी मैं कामिनी पनमाल सो है श्याम वर्ण जाको सूर्ज की किरण सोहै पीत वस्त्र ताके विषै अलकनके समू
हकरिकै आवृत हैं मुखकमल जाके विषैं ऐसो जो शरीर ता हि धारन करै अर्जुन के सखा श्रीकृष्ण तिनमैं निरउपत
मेरी रत हैं सो होउ ३३ युद्धमैं घोडनके खुरनकी रज करिकैं धूसर हुन उनकूं लैहैं एसेंजे केश तिन करिकैं विकीरण जे
पसीनानकी वूंद ता करिकैं अलंकृत हैं मुखजाको मेरे पैंनेवानन करिकैं विद्यमान हैं त्वचाजाकी सोभायमान हैं वच
नजिनको एसेंजे श्रीकृष्ण तिनमैं मेरो मनहैं सोहोउ ३४ दोउसेनानके वीचमैं मेरो रथहैं यह अर्जुन के वचन सुनिकै

त्रिभुवनकमनंतमालवर्णंरविकरगौरवरांवरंदधाने वपुरलककुलावृताननाब्जंविजयसखेरतिर
स्तुमेऽनवद्या ३३ युधितुरगरजोविधूम्रविष्वक्कचलुलितश्रमवार्यलंकृतास्ये ममनिशितशरैर्विभि
द्यमानत्वचिविलसत्कवचेस्तुकृष्णआत्मा ३४ सपदिसखिवचोनिशम्यमध्येनिजपरयोर्वलयोरथं
निवेश्य स्थितवतिपरसैनिकायुरक्ष्णाहृतवतिपार्थिसखेरतिर्ममास्तु ३५ व्यवहितपृतनामुखंनि
रीक्ष्यस्वजनवधाद्विमुखस्यदोषबुद्ध्या कुमतिमहरदात्मविद्ययायश्चरणरतिःपरमस्यतस्यमेस्तु ३६
स्वनिगममपहायमत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्तुमवप्लुतोरथस्थः धृतरथचरणोभ्ययाच्चलद्गुर्हरिरिव
हंतुमिभंगतोत्तरीयः ३७ श्रीहरयेनमः

सीघ्र दोउसेनानकेवीचरथ धरि नाहि ठाडो करकै स्थित होत भए ओर वैरीनकेसेनाके लोकनकी काल दृष्टकरि
कै आयुहरलेत भए अर्जुनके सखा तिनमैं मेरी रति हैं सो होउ ३५ दूर मैं स्थित ऐसी जो सेना ताको मुख देखकै सीनाई
आगे ठाडे भीष्मादिक तिनैं देखकै दोषबुद्धि करिकैं विमुख भयौ ३६ एसो जो अर्जुन ताकी कुबुद्धि आत्मविद्या करि
कै हरलेत भए एसो जो श्रीकृष्ण तिनके चरनमैं रति होउ ३६ विनासत्रुतीमैं सहाय मात्र ही करूंगो यह जो अपनी
प्रतिज्ञा ताहि छोडिकै मेरी प्रतिज्ञा ताहि मैं श्रीकृष्णकूं सस्त्र गहाय देउंगो ताहि साचकरिवेकूं रथतें उतरकै चक्र हाथमें

पैंनेवाननिकरिकैमारेहुटगयोकवचजिनकोरुधरकरिकैव्याप्तजोश्रीकृष्णसोआतताईजोमैंनाकेमारिवेकूं वलनैंआवतहै सोभगवान्मुकुंदमोकूंमतिदेऊ ३८ अर्जुनकोरथहीहै कुटंवजाकोधारनकीयोहै पैंनीयाज्ञा नैंऔरधारनकरीहैंघोडानकीनसजानैसारथीपनेकीसोभाकरकेदेखवेलायककू एसेभगवान्तिनमैमरवेकी इछाकरतजोमैं ताकीरतहैसोहोउ जाश्रीकृष्णकूंयुद्धमेदेखकरकेजेमरेतेइनकेरूपकूंप्राप्तभये ३९ ललितजोगति औरविलास लंदरहास्य औरस्नेहताकरिकेजोचितवनताकरिकेपायोहैमांनजिननेश्रीकृष्णकेजेकर्मगोवर्ध

पीतविधिरिखवहतोवीथीएीहंस्रा:ह्यतनजपरिभ्रुतमातिनापनेोमे मलभमनभिसलारम वधारथंसभवतु ऽ स्तेभगवानागतिर्मुकुंद ३८ विजयरथकुटुंब:आतततोत्रेधृतप्रतिपरस्मिनितद्रिये ह्यणीवे भगवतरति रस्तुमेमुमूर्षोर्यमिहनिरीक्ष्यहतागतास्वरूपं ३९ ललितगतिविलासवल्गुहासप्रणयनिरीक्षणकल्पि तोरुमाना कृतमनुकृतवत्यउन्मदांधा प्रकृतिमगन्किलयस्यगोपवध्वा ४० मुनिगणनृपवर्यसं कुलेत:सदसियुधिष्ठिरराजासूयएषां अर्हणमुपपेदईक्षणीयो ममदृशिगोचरएषआविरा त्मा ४१ तमिममहमजंशरीरभाजांहृदिहृदिधिष्ठितमात्मकल्पितानां प्रतिदृशमिवनैकधार्क मेकंसमधिगतोस्मिविधूतभेदमोहः ४२ सूतउवाच कृष्णएवंभगवतिमनोवाग्दृष्टिवृत्तिभिः आत्मन्यात्मानमावेश्यसोंतःश्वासउपारमत् ४३ ॥

नोमममजमनसनातिरा धीतृदीपरिरभ्रजतामीमर्धीनिडं ४२

नोधरणीदिकूतिनकोअनुकरणीकरैहै उन्मादकरिकैअंधएसीजोगोपवधूतेजाश्रीकृष्णकेस्वरूपकूंप्राप्तहोतभ ई ४० मुनिनके जेगनतिनकरिकैं औरजेराजानमेश्रेष्ठतिनकरिकैंव्याप्त ऐसीजोसभाताकेमध्यमैं युधिष्ठिर केराजसूयज्ञमैंमुनिगनकूंराजानकूंदेखवेलाइक ऐसेजेश्रीकृष्णसोएजोहैंनाहिप्राप्तहोतभए सोश्रीकृष्ण मेरीआंखिनकेआगेप्रगटहोतभए मेरोवडोभाग्यहै ४१ आपकरकेरचेएसेजेप्राणीजिनकेहृदेहृदेमैंस्थितहैं जैसेएकसूर्यअनेकप्रकारदीखतहै तैसेइनकूंअनेकप्रकारमाननितहै:दूरभयोहैभेदमोहजाकोंएसोमैंश्रीकृष्णतिने

तनजीकहेहैं हेऐसेभीष्मजीभगवांनश्रीकृष्णमैंमनवांनीदृष्टीइनकीवृत्तिनकरिकैं अपनोमनहैंताप्रवेशकरिकै: भीतरलीनकीनोहैंस्वासजिन्नेसोउपरामकूंप्राप्तहोतभए ४३ निरउपाधिजोब्रह्मताकेविषैमाप्तभये एसेजेभीष्मजीतिनै जानिकैंसगरेचुप्पहोतभए कैसेजैसेसंध्याकेसमयपक्षीचुप्पहैजातहैं ४४ तासमैदेवतामनुष्यननैंवजाए ऐसेनगारेसज्जन भए राजानमैंसाधुहैंनेसत्कारकरतभए आकासतैंफूलनकीवर्षाहोतभई ४५ हेसोनकयुधिष्ठिरसोयुक्तभए भीष्मतिन

सूतउवाच: कृष्णएवंभगवतिमनोवाग्दृष्टिवृत्तिभिः आत्मन्यात्मानमावेश्यसोंतःश्वासउपारमत् ४३ संपद्यमानमाज्ञायभीष्मंब्रह्मणिनिष्कले सर्वेवभूवुस्तेतूष्णींवयांसीवदिनात्यये ४४ तत्रदुंदुभयोनेदुर्देव वदानववादिताः शशंसुःसाधवोराज्ञांखात्पेतुःपुष्पवृष्टयः ४५ तस्यनिर्हरणादीनिसंपरेतस्यभार्गव युधिष्ठिरःकारयित्वामुहूर्तंदुःखितोभवत् ४६ तुष्टुवुर्मुनयोहृष्टाःकृष्णंतद्गुह्यनामभिः ततस्तेकृष्ण हृदयाःस्वाश्रमान्प्रययुःपुनः ४७ ततोयुधिष्ठिरोगत्वासहकृष्णोगजाह्वयं पितरंसांत्वयामासगांधारीं चतपस्विनीं ४८ पित्रानुमोदितोराजावासुदेवानुमोदितः चकारराज्यंधर्मेणपितृपैतामहंविभुः ४९ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेनवमोध्यायः ९ श्रीकृष्णायनमोनमः

केदारतेंआदिलेरसंस्कारतिनेकरायकेंदोघरीतांईदुःखीतहोतभई ४६ प्रसंन्नजेमुनितेगुह्यनामनकरि कें श्रीकृष्णकीअस्तुतीकरतभए ताकेअनंतरश्रीकृष्णहीहैंहृदेमेजिनकें ऐसेतेमुनिफेरअपनेआश्रमनकूं जातभए ताकेअनंतरश्रीकृष्णहीहैहृदेमैंजिनके ऐसेतेमुनिफेरअपनेआश्रमकूंजातभए ४७ ताकीछेऽ युधिष्ठिरश्रीकृष्णसहितहस्तनापुरधृतराष्ट्रसंतापवतीगंधारीताहिसमझावतभए ४८ धृतराष्ट्रकीआज्ञोलै कें श्रीकृष्णनैंअनुमोदनकीयेराजायुधिष्ठिरसोपितापितामहतेचल्योआयोएसोराज्यताहिकरतभए ४९ इतीभागवते:

स॰ भा॰
२१

दसमैं अध्यायमैं कीयोहै सर्वकार्य्य जिननैं स्वीने स्तुन कीनी असेजी श्रीकृष्ण तिनको हस्तापुरतैं द्वारकाआय
बोवर्णन करेहैं १ सौनक पूछेहैं अपने धनकेहरनवारे आततांई एसे वेरीनकै मारकरिकै धर्मधारीनमैं श्रेष्ठ एसे
जैयुधिष्ठिरसो भैयानसेतैन पायोहै राज्य जिनने सो राज्यमैं कैसे प्रवृत्ति भए और राज्य पायकै कहा करत भए सो कहो १
सूतजी कहेंहैं कुरुकोजो वंश ताको भयो वनताने उपज्यो क्रोधरूप अग्नि ताकरकै जरयो ताकूं तापसताकै पालनकरनवा
रे हरिसो अंकुररूप करिकै अपने राज्य मैं युधिष्ठिरकूं वेठारकरकै आप मसन्नमन होत भए २ भीष्मजीने कह्योतासि

सौनक उवाच: हत्वा स्वरिक्थस्पृध आततायिनो युधिष्ठिरो धर्मभृतां वरिष्ठः। सहानुजैः प्रत्यवरुद्ध
भोजनः कथं प्रवृत्तः किमकार्षीत्ततः १ श्रीसूत उवाच: वंशं कुरोर्वंशदवाग्निनिर्हृतं संरोहयित्वा भवभ
वनो हरिः। निवेशयित्वा निजराज्य ईश्वरो युधिष्ठिरं प्रीतमना बभूव ह २ निशम्य भीष्मोक्तमथाच्युतो
दितं प्रवृत्तविज्ञानविधूतविभ्रमः। शशास गामिन्द्र इवाजिताश्रयः परिध्युपान्तामनुजानुवर्तितः ३
कामं ववर्ष पर्जन्यः सर्वकामदुघा मही। सिषिचुः स्म व्रजान् गावः पयसोधस्वतीर्मुदा ४ नद्यः समुद्रा गिर
यः सवनस्पतिवीरुधः। फलन्त्योषधयः सर्वाः काममन्वृतु तस्य वै ५ श्रीकृष्णकृष्णायनमः

छनिकैं और श्रीकृष्णने कह्यो ताहि सुनिकै मप्रवृत्ति भयोहै: जो विज्ञान ताकरकै दूर भयोहै मोह जाको भैयान
करिकै सेवित श्रीकृष्णहीहै आश्रय जाकूं एसैजो राजा युधिष्ठिर समुद्र पर्यंत पृथ्वी तेताहि पालन करत भए ३
युधिष्ठिरके राज्यमैं लोकनकों वर्षा कीइच्छाहोई तब मेघ वर्षत भए सबकामको पूरनकरनवारी पृथ्वी होत भ
ई वडेवडे हैं थैन जिनकैं असी जे गाइ ते दूधकरिकै धीरनकरि चिंतन भई ४ नदी समुद्र पर्वत वनस्प
तीन सहित लता सगरी औषधन ते ऋतुनमैं फलत भई हैं ५ श्रीकृष्णायनमोनमः श्रीकृष्णायनमः

आधिव्याधितें न होत भई औरदैव भूत आत्माये है कारन जिनके असे जे क्लेश ते राजा युधिष्ठिरके राज्यमैं प्राणनकूं क
बहुं न होत भई ६ हस्तनापुरमैं श्रीकृष्ण कितनेक महीना वसिकरिकैं सुहृदनको शोक दूर करिकै और अपनी व
हन सुभद्राकौ प्रसन्न करिकैं ७ सबन तें आज्ञा लेकैं सबनतें मिलकैं बडेनकूं प्रणाम करिकैं रथपै ताप चढत भए कैसे है
श्रीकृष्ण कितनेक लोकनकूं तो आप मिलेहैं औरनै नाम करेहैं ८ सुभद्रा द्रौपदी कुंती विराटकी बेटी उत्तरा गंधारी
धृतराष्ट्र युयुत्सु कृपाचार्य नकुल सहदेव ९ भीमसेन धौम्य सत्यवती आदि लैकै जे स्त्री ते श्रीकृष्णको साधने

नाधमोव्याधयः क्लेशा दैवभूतात्महेतवः। अजातशत्रावभवन् जन्तूनां राज्ञि कर्हिचित् ६ उषित्वा हास्ति
नपुरे मासान् कतिपयान् हरिः। सुहृदां च विशोकाय स्वसुश्च प्रियकाम्यया ७ आमन्त्र्य चाभ्यनुज्ञातः परिष्व
ज्याभिवाद्य तान्। आरुरोह रथं कैश्चित्परिष्वक्तोऽभिवादितः ८ सुभद्रा द्रौपदी कुंती विराटतनया तथा
गांधारी धृतराष्ट्रश्च युयुत्सुर्गौतमो यमौ ९ वृकोदरश्च धौम्यश्च स्त्रियो मत्स्यसुतादयः। न सेहिरे विमुह्यन्तो
विरहं शार्ङ्गधन्वनः १० सत्सङ्गान्मुक्तदुःसङ्गो हातुं नोत्सहते बुधः। कीर्त्यमानं यशो यस्य सकृदाकर्ण्य रोचनम् ११
तस्मिन्न्यस्तधियः पार्थाः सहेरन् विरहं कथम्। दर्शनस्पर्शसंलापशयनासनभोजनैः १२ सर्वे तेऽनिमिषैरक्षै
स्तमनुद्रुतचेतसः। वीक्षन्तः स्नेहसम्बद्धा विचेलुस्तत्र तत्र ह १३ न्यरुन्धन्नुद्गलद्बाष्पमौत्कण्ठ्याद्देवकीसुते। नि
र्यात्यगारान्नोऽभद्रमिति स्याद्बान्धवस्त्रियः १४ मृदङ्गशङ्खभेर्यश्च वीणापणवगोमुखाः। धुन्धुर्यानकघण्टा

गावोजो सुंदरजस ताहिएकवेर सुनकरिकैं सतसंग छोडिवे कौइच्छा नहीं करेहैं साधुनके संगतें छुटगयोहै दुष्ट संग जाको
असोजो ज्ञानमान सो जा श्रीकृष्णको साधुनेगायो जो जस ताहि एकवेर सुनिकरिकै श्रीकृष्णमें राखीहैं बुद्धि जीननैं असे जेपा
ण्डव ते श्रीकृष्णके विरहकूं एसे सहारें ११ सगरे नहीं लगेहै पलक जिनमैं असे जे नेत्र तिनकरकैं देखेहैं: श्रीकृष्णके चलि
वेके समैं बंधुनकी जे स्त्री हैं ते आंषिनमें नीकरे जे आंसू तिने आंखनमें ही रोकलेतभई औरो कहत भई चलतीवेर श्रीकृष्ण

अंगनेकमनकी उयानेरोकतभई १४ मृदंगशंखवेणुकैतः कैवेतः

नकः घंटा: कगोरे: नेसवैना कौदंकसंखवाजनलगर १५

55

श्रीकृष्णकी देखिवेकी इच्छा करिके मैंहलनकी उपर चढी प्रेमलज्जा सहित मुसकाई पूर्वक चितवनकीनी एसीजे कौरव
नकी स्त्रीने फूलनकी इच्छा करि वर्षा करत भई २६ मोतीनकी मालानकरिकें अथवा रत्ननकी डांडीजाकी एसोजो श्रीकृ
ष्णको खपे दक्ष्त्र ताहि प्यारो जो अर्जुन सो करत भयो २७ उद्धव सात्यकी ते परम अद्भुत एसे जे चमर तिनने ग्रहन करत भए
रत्ननकी नीवर्षा करी है जिनके उपर एसो जो श्रीकृष्ण सो मार्गमें सोभाकूं प्राप्त भए २८ जहांतहां ब्राह्मणने कहे सत्यजे आसी
रवाद ते सुनत भए कैसे आसीर्वाद हैं निर्गुण के अनुरूप नहीं हैं और गुणात्मा के अनुरूप हैं २९ नेजे हस्तनापुरकी स्त्री

मस्तारु यिवि.... रवावी हि हश्यया: वहवः कृष्णमें प्रेमवूडास्मिने रा २६ सितात पत्रं जगा
ह मुक्ता दाम विभूषितं रत्नदंडं गुडाकेश: प्रय: प्रीयतमस्य ह २७ उद्धव: सात्यकीश्चैव व्यजने परमाद्भुते
अवकीर्यमाण: कुसुमैरेजे मधुपति: पथि: २८ अश्रूयंताशिष: सत्यास्तत्र तत्र द्विजेरिता नानुरूपानु
रूपाश्च निर्गुणस्य गुणात्मना २९ अन्योन्यमासीत्संजल्प उत्तमश्लोक चेतसां कौरवेंद्र पुरस्त्रीणां सर्वश्रु
तिमनोहर: ३० स वै किलायं पुरुष: पुरातनो य एक आसिदविशेष आत्मनि अग्रे गुणेभ्यो जगदात्मनी
श्वरे निमीलितात्मन्निशि सुप्तशक्तिषु: ३१ स एव भूयो निजवीर्यचोदितां स्वजीवमायां प्रकृतिं सि सृ
क्षती अनामरूपात्मनि रूपनामनी विधित्समानो नुससार शास्त्रकृत् ३२ श्रीकृष्णायनम:

कृष्ण मैं है चित जिनमें सगरी स्त्रीनको मन हरन वारो एसो संजल्प परस्पर संवाद सो होत भयो ३० हे सखी तो
जो एक ही आद्य पुरुष होत भयो सोई ए श्रीकृष्ण हैं कौन समै भयो गुणन ते आगे प्रलय होत भयो प्रपंच रहित अ
पनो स्वरूप ताके विषें एसे पहलें ईश्वर मैं लीन जीव भए सत्तेमें यह एक ही होत भयो ३१ सोई यह श्रीकृष्ण अपनी
काल शक्ति करिके प्रेरी जीवनकूं मोह करनवारी सृजवेकी इच्छा करै एसी जे माया ता विस्थीन होत भयो कारे केले
ये नहीं हैं नामरूप जाके एसो जो जीवनाम है नामरूप करिवेके लीये और करमैरे तिनै करावेके लीयें वं दहै तिनेकर

जीनी है इंद्री जिन्ने जीते है प्राण जिन्ने एसे जे सतने भक्ति करिकें उत्कंठित निर्मल एसी जो अपनी बुद्धि ता करिके जा श्रीकृष्ण के
पदकूं देखे है सो यह श्रीकृष्ण हमारो बुद्ध जो है ताय शुद्ध करिवेकूं योग्य हैं ३३ हे सखी वेदन के विषें गुह्य वादीन करिके गाये हैं
कथा जिनकी एसो जो ईश्वर यह श्रीकृष्ण हैं सो अपनी लीला करिकें जगतकूं सृजे है पाले हैं संघार करे है और ता जगत के विषें नः
हीं आसक्ति होहै ३४ जा समै तमकरिकें आच्छन्न है बुद्धि जिनकी एसे जे राजा ते अधर्म करिकें केवल जीमें है ता समैं यह श्रीकृष्ण सत्वगु
णते ऐश्वर्य सत्य रीन दया पराक्रम तिने धारन करे हैं और युग युग के विषें लोचन के कसारण के रूप हैं तिने धारन करे है ३५ हे सखी

स वा अयं यत्पदमत्र सूरयो जितेंद्रिया: निर्जीत मातरिश्वन: पश्यंति भक्त्युत्कलितामलात्मना नन्वेष सत्वं परि
मार्ष्टुमर्हति: ३३ स वा अयं सख्यनुगीत सत्कथो वेदेषु गुह्येषु च गुह्यवादिभि: य एक ईशो जगदात्म लीलया
सृजत्यवत्यत्ति न तत्र सज्जते ३४ यदा ह्यधर्मेण तमोधियो नृपा: जीवंति तत्रैष हि सत्वत: किल धत्ते भगं सत्य
मृतं दयां यशो भवाय रूपाणि दधद्युगे युगे ३५ अहो अलं श्लाघ्यतमं यदो: कुलं महो अलं पुण्यतमं मधोर्वनं
यदेष पुंसामृषभ: श्रियपति: स्वजन्मना चंक्रमणेन चांचति ३६ अहो वत स्वर्यशस्तिरस्करी कुशस्थ
लीपुण्ययशस्करी भुव: पश्यंति नित्यं यदनुग्रहेषितं स्मितावलोकं स्वपतीं स्म यत्प्रजा ३७ श्रीकृष्णायनम:

हे सखी सो यदुको जो कुल है सो अतिसय करिकें बडाई लायक है और मधुरा है सो अतिसय करिके बडाई लायक है जाते य
ह पुरुषोत्तम लक्ष्मीको पति सो अपने जन्म करिके यदु कुल जो है ताकूं पूजित करे है और अपने डोलवे करिके मधु
रा है ताहि सत्कार करे है ३५ हे सखी ये बडो आश्चर्य है कौन सो यह द्वारका स्वर्ग को बडो जो जस ताको तिरस्कार कर
नवारी है और भूमीको पुण्य जो है यस कीं करनवारी है या ते या द्वारकाकी प्रजा ते अपने अनुग्रह के लीयें प्रेरी ए
सी है मंद मुसक्यानि पूर्वक चितवन एसे जे अपने पति श्रीकृष्ण तिनें नित्य प्रति विलोकें है दृष्टी कर देखे हैं ३७

हे सखी या कृष्ण को गहनन की पोरे तब जिन्हे एसी सो जो रुक्मणी आदि जिन्ने हन स्नान नहो मइत्या दिक करके इ स्वरते सो
निश्चेक रिके पूजन की पोरें जे कृष्ण कां नाते जे कृष्ण को जो अधरामृत है ना पिपी मैरें जा अधरामृत मैं रेचित जिन को
एसी जे ब्रजस्त्री जे गोपी ते मोहकुं आप्त होत भई २८ पराक्रम जो मोल ना करिके स्वयंवर मैरे री प्रद्युम्न सांब अंबइनते
आदिले रे पुत्र जिनके एसी जे रुक्मणि आदिकने और भूमासुर को मारके हरी सो ले तजाद सो उपर नेक रा करिके री
शिशुपाल ने आदिलेर मन वारे जे राजा जिनने जिन करिके लरीहैं २९ ने स्त्रगरी नहीं रे स्वनं त्रजामें नहीं रे पवित्र ता जामें र

नूनं व्रत स्नान हुताहिनेश्वरः समर्चितो ह्यस्य गृहीत पाणिभिः पिबंति याः सख्यधरामृतं मुहुर्व्रजस्त्रियः सं
मुमुहुर्यदाशयाः २८ या वीर्यशुल्केन हृताः स्वयंवरे प्रमथ्य चैद्यप्रमुखान् हि शुष्मिणः प्रद्युम्न सांबादि
सुताद्ययो परा याश्चाहृता भौमवधे सहस्रशः २९ एताः परं स्त्रीत्वमपास्त पेशलं निरस्त शौचं बत साधु
कुर्वते यासां गृहात् पुष्करलोचनः पतिर्न जात्वपैत्याहृतिभिर्हृदि स्पृशन् ३० एवंविधा गदंती
नां स गिरः पुरयोषितां निरीक्षणेनाभिनंदन् सस्मितेन ययौ हरिः ३१ अजातशत्रुः पृतनां गोपीथाय मधु
द्विषः परेभ्यः शंकितः स्नेहात् प्रायुंक्त चतुरंगिणीं ३२ अथ दूरागतान् शौरिः कौरवान् विरहातुरान्
संनिवर्त्य दृढं स्निग्धान् प्रायात्स्वनगरीं प्रियैः ३३ कुरुजांगल पांचालान् शूरसेनान् सयामुनान् ब्रह्मावर्तं
कुरुक्षेत्रं मत्स्यान् सारस्वतानथ ३४

जो स्त्रीभाव ना हि सो भितव रैहैं जिनके घरके कमल दल लोचन जो श्रीकृष्ण सो वचन करिकें हृदेकुं मान दे देत वा
हरक बहु नही जाहैं ३० एसे कहत जो पुरकी स्त्री जिनकी या प्रकार की जे वानी तिनै मुसक्यान सहत जो चितवन ताकरि
कें अभिनंदन करत जात भए ३१ वैरीन सो संकित जो राजा युधिष्ठिर सो श्रीकृष्ण की रक्षा के लीये चतुरंगनी सो
सेना नाहि संग मे देत भए ३२ विरह करिके आतुर स्नेह करके युक्त दूर आए तिनै निवृत्त करिकें प्यारे जे उद्धवा

मरुदेश धन्वदेश शोवीर देश अभीर देश आनर्त देश तिनै अतिक्रमन करिकें तनन कुं आंनते घोडा जिनके एसे जे श्रीकृ
सो धारिके नाहि प्राप्त होत भए ३५ नाना देशमें तहां के भये जे लोक तिनने दीनो है भेट जिनकुं एसे जो हरि सो संध्याकाल मे
पश्चिम दिशा है ताहि प्राप्त भए तासमें स्वर्ग मैं स्थित जो सूर्य सो जल मैं पृथवी मे होत भये अथवा सायंकाल के धाममें रथतें
उतरिकें भूमी मैं स्थित होकें जलके पास जायके संध्यावंदन करत भए इती प्रथमे दशमो ध्याय १० आगे अध्याय
मैं श्रीकृष्ण द्वारिका में प्रवेश करिकें बंधुनैं स्तुत कीये और पुरवासीन्नें स्तुति कीये एसे जो श्रीकृष्ण तिनकी जो रति

मरुधन्वमतिक्रम्य सौवीराभीरयोः परान् आनर्तान् भार्गवोपागाच्छ्रांतवाहो मनाग्विभुः ३ तत्र तत्र ह तत्रत्यै
र्हरिः प्रत्युद्यतार्हणः सायं भेजे दिशं पश्चाद् गविष्ठो गां गतस्तदा ३६ इती श्रीभागवते महापुराणे प्रथम स्कंधे
दशमो ध्यायः १० सूत उवाच आनर्तान्‌ स उपव्रज्य स्वृद्धान् जनपदान् स्वकान् दध्मौ दरवरं तेषां विषादं
शमयन्निव १ स उच्चकाशे धवलोदरो दरोप्युरुक्रमस्याधरशोणशोणिमा दाध्मायमानः करकंजसंपुटे
यथाब्जखंडे कलहंस उत्स्वनः २ तमुपश्रुत्य निनदं जगद्भयभयापहं प्रत्युद्ययुः प्रजाः सर्वा भर्तृदर्शनलाल
सा ३ तत्रोपनीत बलयो रवेर्दीपमिवादृताः आत्मारामं पूर्णकामं निजलाभेन नित्यदा ४ प्रीत्युत्फुल्ल

सोवर्णन करिये हैं १ सूत जी कहे हैं समृद्ध युक्त ऐसे जे अपने आनर्त देश तिनै आइ करिकें प्रजा न को जो दुखना
हि दूर करन श्रीकृष्णचंद्र पंचजन्य जो शंख सो ना हि बजावत भए १ श्रीकृष्ण के अधरन की ललाई ताकरिके लाल स्वेत
है उदर जाको और श्रीकृष्ण के हस्तकमल तिनके मध्य मे वर्तमान ऐसो जो बजत संख सो सोभा कूं प्राप्त होत भये हैं
केसे लाल कमलन के समूह मे बैठो बोलतो राजहंस जेसे २ जगत के भय कूं नास करे एसो जो संखको नाद ताहि सु
निकरकें श्रीकृष्ण की देखवे की है लालसा जिनके एसी जो प्रजा सगरी आवत भई ३ श्रीकृष्ण कूं अर्पन करी है भेट
जिन्नें आदर करिकें युक्त प्रीत करके फूले हैं मुख जिनके सो ऐसी जो प्रजा तैने निज लाभ करिके पूर्णकाम आत्माराम ४

सबके सुहृद अपनी रक्षा करनवारे ऐसे जो श्री कृष्ण तिन सूं रसिक करिकैं गद्गद ऐसी जो वाणी ता करकैं बोलत भ
ई कैसें जैसे बालक अपने पिता सूं बोलें हैं: ५ हे नाथ ब्रह्मा के वेटा देवतानके इंद्र तिन करिकें वंदित जे क्षेम कीइ
च्छा करें हैं तिनकूं परम आश्रय एसो जो तुम्हारो चरणारविंद ताहि हम नमस्कार करें हैं जा चरनके विषे ब्रह्मादि
कनको जो काल सो उनहीं प्रभाव करे हैं ६ हे विश्वके पालक तुम हमारे कल्यानके लीये हो तुम ही हमारे माता पिता हो
सुहृत हो पति हो हमारे गुरू हो हमारे देवता हो जा तुम्हारी टहल करके हम कृतार्थ होवें ७ तुमने हम सनाथ कीये जाते

प्रीत्युत्फुल्लमुखाः प्रोचुर्हर्षगद्गदया गिरा पितरं सर्वसुहृदमवितारमिवार्भकाः ५ नताः स्मते नाथ सदांघ्रिपं
कजं विरंचिवैरिंचिसुरेंद्रवंदितं परायणं क्षेममिहेच्छतां परं न यत्र कालः प्रभवेत्परः प्रभुः ६ भवाय न
स्त्वं भव विश्वभावन त्वमेव माताथ सुहृत्पतिः पिता त्वं सद्गुरुर्नः परमं च दैवतं यस्यानुवृत्त्या कृतिनो ब
भूविम ७ अहो सनाथा भवता स्म यद्वयं त्रैविष्टपानामपि दूरदर्शनं प्रेमस्मितस्निग्धनिरीक्षणाननं प
श्येम रूपं तव सर्वसौभगं ८ यर्ह्यंबुजाक्षापससार भो भवान् कुरून्मधून्वाथ सुहृद्दिदृक्षया तत्रा
ब्दकोटिप्रतिमः क्षणो भवेद्रविं विनाक्ष्णोरिव नस्तवाच्युत ९ इतीचोदीरिता वाचः प्रजानां भक्तिवत्स
ला शृण्वानोनुग्रहं दृष्ट्या वितन्वन्प्राविशत्पुरीं १०

देवतानकूं दुर्लभ है दर्शन जाको प्रेम करिकें जो स्मित ता करिकें युक्त चितवन जाके विषे एसो है मुख
जाको और सब अंगनमें सुंदर एसो तुम्हारो रूप ताहि देखें हैं ८ हे कमलदललोचन तुम कुरु देश मधु देश वि
में सुहृदनकौ देखवेकी इच्छा करिकें गये तासमे एक एक क्षिण मैं किरोर किरोर वर्ष बीते वरोवर तुम्हारे जैसे सम
दिनके होत भयौ जैसे सूर्ज विना नेत्रनकूं होहै ९ हे नाथ तुम कौ वहुत काल पर देश मैं वसे संते सर

ऐसें कही जे प्रजा ने वाणी तिनें सुनिकें भक्तवत्सल श्री कृष्ण सो दृष्टि करिकें अनुग्रह करत पुरी में प्रवेश करत भये १०
कैसी पुरी है अपने तुल्य है वल जिनको ऐसे जे मधु भोज दसार्ह अर्ह कुकुर अंधक वृष्णि तिन करिकें रक्षित है कैसें
नागन करकैं भोगवती जैसे रक्षा करी ये हैं ११ फेर कैसी पुरी है सगरी रितुनमें हैं सगरे वैभव फूलफल इनतें आदि लें
ऐसें जे पुण्य वृक्षलता हैं जिनमें ऐसें जे उद्यान उपवन आराम तिन करिकें युक्त ऐसे जे पद्माकर सरोवर तिन करिकें
है सोभा जाके विषै १२ फेर कैसी द्वारिका है पुर के द्वार घरके द्वार और मार्ग इनमे उत्सव करिकें वांधे वंदनवार हैं जा

मधुभोजदशार्हार्हकुकुरांधकवृष्णिभिः आत्मतुल्यबलैर्गुप्तां नागैर्भोगवतीमिव ११ सर्वर्तुसर्वविभवैः
पुण्यवृक्षलताश्रमैः उद्यानोपवनारामैर्वृतपद्माकरश्रियं गोपुरद्वारमार्गेषु कृतकौतुकतोरणां चित्र
ध्वजपताकाग्रैरंतः प्रतिहतातपां १३ संमार्जितमहामार्गरथ्यापणकचत्वरां सिक्तां गंधजलैरुप्तां फलपुष्पा
क्षतांकुरैः १४ द्वारि द्वारि गृहाणां च दध्यक्षतफलेक्षुभिः अलंकृतां पूर्णकुंभैर्बलिभिर्धूपदीपकैः १५
निशम्य प्रेष्ठमायांतं वसुदेवो महामनाः अक्रूरश्चोग्रसेनश्च रामश्चाद्भुतविक्रमः १६ प्रद्युम्नश्चारुदे
ष्णश्च चारुष्णावगदादयः प्रहर्षवेगोछ्वसितशयनासनभोजना १७ श्रीकृष्णाय नमो नमः ॥

के विषें १४ विचित्र जो ध्वजा पताका तिनके जे अग्र तिन करिकें भीतर दूरि कीयो है ताप जाके विषें १४ फेर कैसी
सी द्वारिका है नहीं है रज तिनमें ऐसें हैं राजमार्ग गली वजार चौक जाके विषें और सुगंध के जल करिकें छिरकी है
फल फूल अक्षत अंकुर विखरे हैं जामे १५ फेर कैसी है द्वारिका दही अक्षत फल मिठाई इन करिकें और पूर्ण जे ज
लके कलश फूलनके समूह धूप दीप इन करिकें अलंकृत है १६ प्रद्युम्न चारुदेष्ण जांबवती के बेटा सांब ने
प्यारे श्री कृष्ण तिनें आवत सुनि करिकें वडो है मन जिनको ऐसे वसुदेव अक्रूर अद्भुत पराक्रम जाकौ ऐसे बल

प्रद्युम्न चारुदेष्णु जाम्बवती के बेटा शाम्ब ले हाथि हैं नाहि आगे करिकें मंगल जे वस्तु तिनैं लाय मेलैकें शंख तुरही बजवत
ब्राह्मणन के वेदपाठ करि सहित रथनपै बैठकें श्रीकृष्ण के सन्मुख जात भये १८ कैसे सगरे हैं आनंद के वेग करिके छोटे
है सयन आसन भोजन जिनके आदर करिकें उठके और हस्ति रथ करिकें न यो है संभ्रम जिनकें १९ सैकरान जे वार
मुख्या वेश्या ते रथन मे बैठी के जात भई कैसी हैं श्रीकृष्ण के दर्शन करिवे में है उत्कंठा जिनकी सोभायमान जे कुंडल ति
नकरिके प्रकासित ऐसे जे कपोल तिन करिकें मुखन की है सोभा जिनकी २० नट नाचनवारे गंधर्व सूत मागध वंदी

वारणेन्द्रं पुरस्कृत्य ब्राह्मणैः ससुमंगलैः शंखतूर्यनिनादेन ब्रह्मघोषेण चादृताः १८ प्रतिजग्मू रथैर्हृष्टाः प्र
णयागतसाध्वसाः वारमुख्याश्च शतशो यानैस्तद्दर्शनोत्सुकाः १९ लसत्कुण्डलनिर्भातकपोलवदनश्रियः
नटनर्तकगंधर्वाः सूतमागधवंदिनः २० गायंति चोत्तमश्लोकचरितान्यद्भुतानि च भगवांस्तत्र बंधूनां पौराणा
मनुवर्तिनां २१ यथाविध्युपसंगम्य सर्वेषां मानमादधे प्रह्वाभिवादनाश्लेषकरस्पर्शस्मितेक्षणैः २२ आ
श्वास्य चाश्वपाकेभ्यो वरैश्चाभिमतैर्विभुः स्वयं च गुरुभिर्विप्रैः सदारैः स्थविरैरपि २३ आशीर्भिर्युज्य
मानोऽन्यैर्वंदिभिश्चाविशत्पुरीं राजमार्गं गते कृष्णे द्वारकायाः कुलस्त्रियः २४ हर्म्याण्यारुरुहुर्विप्र तदीक्ष
णमहोत्सवाः २५

जन ते श्रीकृष्ण के जे अद्भुत चरित्र तिनै गावत भये २१ तासमें बंधुन कूं पुरके लोगन कूं जे अपने सेवक तिन
कूं जैसो उचित होइ तैसे मिलकें सबको सन्मान करत भए २२ कैसे सन्मान कीयो सो कहै हैं कितनेन कूं माथो नवा
इ नमस्कार करी कितनेन कूं वाणी करिके प्रणाम करि बरोबर केन सूं मिले काहूको हाथ सूं हाथ पकरिकें सन्मान क
रत भये कितनेन कूं मुसिकाइकें देखत भए ऐसे चांडाल पर्यंत जिनैं अभिमत दै करिकैं अभी वन जे दान तिनकरिकें
सन्मान करत भए २३ दयोनक आप श्रीकृष्ण हैं सो गुरु स्त्रीन सहित ब्राह्मण और वृद्धलोक तिननैं आसी
र्वादन करिकें युक्त कीये सो अपने पुर में प्रवेश करत भये २४ श्रीकृष्णाय नमः ॥

है सौनक श्रीकृष्ण के देखबे कूं है उत्सव जिनकैं ऐसी जे द्वारका में कुल की स्त्री ते राजमार्ग में आए जो श्रीकृष्ण तिनके देख
बे केलीये महलन पै चढत भई २५ लक्ष्मी को धाम ऐसो है अंग जिनको ऐसे जे अच्युत श्रीकृष्ण तिनैं नित्य देखबे मैं ऐ
से है नेत्र द्वारिकावासीन के नेत्र तृप्त नहीं होत भए २६ जिन श्रीकृष्ण को वक्षस्थल है सो लक्ष्मी को निवास है और
जिनको मुख सगरे प्राणीन के नेत्रन कूं सोहवी मतपान के अर्थ पात्र है जिनकी भुजा है ते लोकपालन को निवास है
जिनके चरणारविंद हैं सो सार के आगमनवारे भक्तन को निवास है २७ स्वेत छत्र विराजमान चमर इनकरिके युक्त:

नित्यं निरीक्षमाणानां यदपि द्वारकौकसां न वितृप्यंति हि दृशः श्रियो धामांगमच्युतं २५ श्रियो निवासो यस्यो
रः पानपात्रं मुखं दृशां बाहवो लोकपालानां सारंगाणां पदांबुजं २६ सितातपत्रव्यजनैरुपस्कृतः प्रसून
वर्षैरभिवर्षितः पथि पिशंगवासा वनमालया बभौ घनो यथार्कोडुपचापवैद्युतैः २७ प्रविष्टस्तु गृहं पित्रोः
परिष्वक्तः स्वमातृभिः ववंदे शिरसा सप्त देवकीप्रमुखा मुदा २८ ताः पुत्रमंकमारोप्य स्नेहस्नुतपयोधराः
हर्षविह्वलितात्मानः सिषिचुर्नेत्रजैर्जलैः २९ अथाविशत्स्वभवनं सर्वकाममनुत्तमं प्रासादा यत्र पत्नी
नां सहस्राणि च षोडश ३० पत्न्यः पतिं प्रोष्य गृहानुपागतं विलोक्य संजातमनोमहोत्सवाः उत्तस्थुरारात्सह
सासनाशयात् साकं व्रतैर्व्रीडितलोचनाननाः ३१

फूलन की वर्षा करिके वर्षीय पितांबर पहरे बनमाला पहरे एसे जो श्रीकृष्ण सो मार्ग में सोभित भए कैसे जैसे सूर्य
चंद्रमा इंद्र को धनुष बीजरी को तेज इन करिकें मेघ है सो सोभित होहै २८ पिता माता नकौं जो घर ताहि प्रवेश करत भ
ए कैसें जैसें सूर्य चंद्रमा तिन करकें मिलें ऐसे श्रीकृष्ण हैं सो देवकी जीन में मुख्य ऐसी सात माता तिनें सिर करकें नमस्का
र करत भए स्नेह करिकें बढै है दूध जीनमें स्तन करिकें अस्तुबलते आत्मा जिनकी ऐसी जे माता ते पुत्र कूं गोद में बैठायकें ने
त्रन सें निकरे जे जल तिन करिकें सींचित भई याके अनंतर सब हैं काम जामें जाते और उत्तम नहीं सोलह हजार एकसो आ

दसकौनकै भक्तनैनाये ६ मैजों अपनो भवन ताहि प्रवेश करत भये ३६

परदेश हो करिकें अपने घर में आए प्यारे जो श्री कृष्ण तिनें देखकें बडो भयो है उत्सव जिनकें ऐसी जे स्त्री ते सो घरी आसन तें औ
र आसन करन तें बलतन करनैं सहित उठत भई कैसी हैं लज्जायुक्त हैं लोचन अरु वजिनके ३२ दुरंत है भाव जिनको ऐसी जे कृ
ष्ण कांत ते अपने पति जो श्री कृष्ण तिनें पहलें बुद्धी करकें मिलत भई तापीछें उनन करिकें मिलत भई फेर दृष्टि करकें मि
लत भई और हे सोनिक लज्जा करिकें युक्त ऐसी जे स्त्री तिनके नेत्रन तें राक्यो जो जल सो विवसपने तें वहत भयो ३३ यद्य
पि जो श्री कृष्ण सो अपने पास रहे हैं एकांत में मिले हैं तोउ तिन श्री कृष्ण को चरन छिन छिन में नयो नयो होते है कौनसी स्त्री

तमात्मजैर्दृष्टिभिरंतरात्मना दुरंतभावाः परिरेभिरे पतिं निरुद्धमप्यास्रवदंबुनेत्रयोर्विलज्जतीनां भृगुवर्य वै
क्लवात् ३२ यद्यप्यसौ पार्श्वगतो रहोगतः तथापि तस्यांघ्रियुगं नवंनवं पदे पदे का विरमेत तत्पदाच्चलापि यच्छ्रीर्न ज
हाति कर्हिचित् ३३ एवं नृपाणां क्षितिभारजन्मनामक्षौहिणीभिः परिवृत्ततेजसां विधाय वैरं श्वसनो यथानलं मि
थो वधेनोपरतो निरायुधः ३४ स एष नरलोकेस्मिन्नवतीर्णः स्वमायया रेमे स्त्रीरत्नकूटस्थो भगवान्प्राकृ
तो यथा ३५ उद्दामभावपिशुनामलवल्गुहासव्रीडावलोकनिहतो मदनोपि यासां संमुह्य चापमजहात्प्रमदोत्तमा
स्ता यस्येंद्रियं विमथितुं कुहकैर्न शेकुः ३६

हैं जो श्री कृष्ण के चरन तें विराम होइ जाते चंचल है स्वभाव जाको ऐसी लक्ष्मी हू जिन श्री कृष्ण हूं कबहू नहीं त्याग करै है ३४
या प्रकार पृथ्वी कूं भार ताके लिये है जन्म जिनको अक्षौहिणीन करिकें फैल्यो है प्रभाव जिनको ऐसे जे राजा तिन में पर
स्पर वैर करायकें उपराम कों प्राप्ति होत भए और आयुधकों त्याग करत भए कैसें जैसें पवन है सो बांसन में परस्पर सं
घर्षण करिकें अग्नि है ता करि विकें बांसन को दाह करिकें जैसें सांति होइहै ३५ सो ये श्री कृष्ण या नरलोक के विषें अप
नी माया करिकें अवतार लेकें स्त्री रत्न को जो समूह ता में स्थित होके रमत भए कैसें जैसें प्राकृत लोक रमै है ३६ ॥श्री०॥

जिनको गंभीर जो अभिप्राय ताको वताबनवारो निर्मल सुंदर हास्य और लज्जा पूर्वक चितवन तिन करिके मोहि
त कीयो जो महादेव सो उन्मोहित होइकें अपनो जो धनुष ता त्याग करत भयो ऐसो है प्रभाव जिनको ऐसी स्त्रीन
में उत्तम स्त्री हैं ते कपट करिकें जा श्री कृष्ण को जो मन ताहि छोभ करिवे कूं नहीं समर्थ होत भई ३७ तिन श्री कृष्ण कूं यह
जो प्राकृत लोक है सो अपनी उपमा करिकें संग कों करन वारो व्यापार करन वारो मनुष्य है ऐसें माने है याते यह लोक
अज्ञानी है ३८ ईश्वर को यही ईश्वरता है कौनसी जो प्रकृती में स्थित हू है और जे प्रकृति गुणन में है सुख दुःखादि

तमयं मन्यते लोको ह्यसंगमपि संगिनं आत्मौपम्येन मनुजं व्यापृण्वानं यतोऽबुधः ३७ एतदीशन
मीशस्य प्रकृतिस्थोपि तद्गुणैः न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ३८ तं मेनिरेऽबला मौढ्यात्
स्त्रैणं चानुव्रतं रहः अप्रमाणविदो भर्तुरीश्वरं मतयो यथा ३९ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे
प्रथमस्कंधे पारिक्षिते पर्वणि एकादशोऽध्यायः ११ श्री सौनिक उवाच

कतिन करिकें सदा युक्त नहीं होत है कैसें नहीं होत हैं जैसें बुद्धि जो है सो आत्मा में स्थित ऐसें जे आनंदादिक तिन करिकें
आत्मा आश्रय जो बुद्धि है सो लिप्त नहीं होत है ३८ मूढ जे अबला स्त्री हैं ते अपने वस एकांत में स्थित ऐसें श्री कृष्ण कूं मान
त भई कैसी स्त्री हैं भर्ता जो श्री कृष्ण तिनके प्रमाण कूं नहीं जाने हैं कैसें न जानत भई जैसें अहंकार की जो वृत्ती है
ते ईश्वर जो क्षेत्रज्ञ ताहि अपने आधीन अपने धर्म करिकें युक्त माने हैं अथवा तिनकी जे मति हैं कल्पना ते श्री कृ
ष्ण कूं अपने आधीन माने है ४० इति श्रीमद्भागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे टीकायां एकादशोऽध्यायः ११ ॥श्री॥

जाके प्रसंग के लीयें अस्वथ्यामा को दंडादिक विस्तार तें पहिलें कह्यों ता राजा परीक्षत को जो जन्म सो वारवें अध्याय में वर्णन करीयें है सौनक पूछे हैं अस्वथ्यामा नैं चलायो वडो जाकों तेज ऐसो जो ब्रह्मास्त्र ताकरकैं उत्तरा को जो गर्भ सो नष्ट भयो हो परि फेर ईश्वर नैं वचायों १ वडी है बुधि जाकी महात्मा ऐसो जो परिक्षित ताको जो जन्म कर्म और मृत्यु ताई करिकैं जैसें परलोक कूं जात भयों २ जो कहिवे कूं मानों तो यह हम सुनिवे की इछ्या करे हैं ऐसें हम हैं श्रद्धा करिके पूछ्ते हैं राजा ताकूं शुकदेवजी ज्ञान देत भये ३ सूतजी सोनक नतें कहैं हैं धर्मपुत्र जो युधिष्ठर सो पिता की सी नाई प्रजा हेति

शौनक उवाच: अश्वत्थाम्नोपसृष्टेन ब्रह्मशीर्ष्णोरुतेजसा उत्तराया हतो गर्भ ईशेनाजीवितः पुनः १ तस्य जन्म महाबुद्धेः कर्माणि च महात्मनः निधनं च यथैवासीत् स प्रेत्य गतवान् यथा २ तदिदं श्रोतुमिच्छामि गदितुं यदि मन्यसे ब्रूहि नः श्रद्दधानानां यस्य ज्ञानमदाच्छुकः ३ सूत उवाच: अपीपलद्धर्मराजः पितृवद्रंजयन् प्रजाः निस्पृहः सर्वकामेभ्यः कृष्णपादानुसेवया ४ संपदः क्रतवो विप्रा महिषी भ्रातरो मही जंबूद्वीपाधिपत्यं च यशश्च त्रिदिवं गतं ५ किं ते कामाः सुरस्पार्हा मुकुंदमनसो द्विजाः अधिजह्रुर्मुदं राज्ञः क्षुधितस्य यथेतरे ६ मातुर्गर्भगतो वीरः स तदा भृगुनंदन ददर्श पुरुषं कंचिद् दह्यमानो

नें आनंद देत पालन करत भए कैसे युधिष्ठर है श्रीकृष्ण के चरनन की सेवा करिके सर्व काम नतें निस्पृह है ४ संपत यज्ञ लोक प्राणी में या वेउ ए छ्वी जंबुद्वीप को राज्य कर स्वर्ग में गयो जस ५ देवता जिनकी चाहना करें ऐसे जे विषय ते सगरे श्रीकृष्ण में मन जाको ऐसो जो राजा युधिष्ठर ताकूं कहा प्रीत करत भए नहीं करत भए जे सें भूषे कूं माला चंदन स्त्री ये प्रीत नहीं करे है तैसें नहीं करत भये ६ हे शोनक नासमें माता के गर्भ में प्राप्त ब्रह्मास्त्र के तेज कर के जरे है ऐसो जो वीर वालक है सो कोई एक पुरुष ताहि देखत भयो ७ श्रीकृष्णाय नमो नमः॥

कैसो पुरुष है अंगुष्ठ के प्रमाण है निर्मल है सुंदर है सोने को मुकट जाके सुंदर है दर्शन जाको सांमरो है विजुरी सो है पीतांवर जाको निर्विकार है ८ सो भायमान चार है भुजा जाके सोने के है कुंडल जाके लाल है नेत्र गदा है लाय कैवि षैं जाकें अपने चारो ओर फिरावे हैं उलका कसी हैं कांन जाकी एसी जो गदा ता हि वेर वेर भ्रमावे हैं ९ अस्त्र ने जकूं अपनी गदा ते नास करें हैं जैसें सूर्य जी कोहरा को नास करें हैं सो यह वालक समीप में देखत भयो देखके यह को न है एसी परीक्षा करत भयो १० अप्रमेय है आत्मा जिनको धर्म के रक्षा करन वारे ओर परिपूर्ण एसे जो भगवान सो अस्त्र तेज

अंगुष्ठमात्रममलं स्फुरत्पुरटमौलिनं अपीच्यदर्शनं स्यामं तडिद्वाससमच्युतं ८ श्रीमद्दीर्घचतुर्बाहुं तप्तकांचनकुंडलं क्षतजाक्षं गदापाणिमात्मनः सर्वतो दिशं ९ परिभ्रमंतमुल्काभां भ्रामयंतं गदां मुहुः अस्त्रतेजः स्वगदया नीहारमिव गोपतिः १० विधमंतं सन्निकर्षे पर्यैक्षत क इत्यसौ विधूय तदमेयात्मा भगवान् धर्मगुब् विभुः ११ मिषतो दशमासस्य तत्रैवांतर्दधे हरिः ततः सर्वगुणोदर्के सानुकूल ग्रहोदये १२ जज्ञे वंशधरः पांडोर्भूयः पांडुरिवौजसा तस्य प्रीतमना राजा विप्रैर्धौम्यकृपादिभिः १३ जातकं कारयामास वाचयित्वा च मंगलं हिरण्यं गां महीं ग्रामान् हस्त्यश्वान्नृपतिर्वरान् १४ प्रादात्स्वन्नं च विप्रेभ्यः प्रजातीर्थे स तीर्थवित् १५ ॥

कुंदर करिके दसम हीना को जो वालक देखत संतें अंतर्धान होत भये ११ ताके अनंतर सगरे गुणान को है उत्तम फल जामें अनुकूल जे ग्रह जिन करिके सहित है उदय जाको एसे जो लगन ता में पांडु के वंस को धारन वारो एसो जो वालक सो प्रगट होत भयो वालक कैसे फेर पांडव ही सो होत भयो प्रसन्न है मन जाको एसो जो राजा युधिष्ठिर सो धौम्य कृपाचार्य इनतें आदि लेवें जे ब्राह्मण तिन करिकें सत्य वचन वचायकें जातकर्म ता हि करावत भयो १३ सुवर्ण गाई पृथ्वी गांम हाथी घोडा सुंदर अन्न तिनें पुत्र के जन्म समै में ब्राह्मणन के अर्थ

संतुष्ट भए जे ब्राह्मण तिनै नम्रता करिकै पूछ्यो एसो जो युधिष्ठिर ताके बोलत भए हे कुरवंसीन मै श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर यह जो बालक है सो तुम्हारी संतानके विषै २५ अप्रतिघात जो दैव ताने महत्को नाश करे ता तै त्रिभुवन शील जो विष्णु तिनैं तुमयह अनुग्रह करिकै तारपही यो है २६ याते लोकमैं नाम करिकै यह बालक विष्णुरात होयगा संदेह नही और महाभागवत होयगो वडो तेजस्वी जाको एसो होयगो २७ ब्राह्मणन सूं राजा युधिष्ठिर पूछै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण हो पुण्य ते यस जिनको वडो है मन जिनको और उन महावंस मै भये एसे जे राजऋषि तिनै यह बालक यस करिकै साधुवाद करवैंकरता अनुवर्ती गो २८ ब्राह्मण कहे है है मध्यावंश ए यह बालक प्रजान कोर

नम चक्षीलत्वात्तुष्टा राजानं प्रश्रयान्वितं एष ह्यस्मिन् प्रजातंतौ कुरूणांपौरवर्षभ २५ दैवेनाप्रतिघातेन शुक्ले संस्थामुपेयुषि २६ रातो वो नुग्रहार्थाय विष्णुना प्रभविष्णुना तस्मान्नाम्ना विष्णुरात इति लोके बृहच्छ्रवा २७ भविष्यति न संदेहो महाभागवतो महान् राजोवाच अप्येष वंश्यान् राजऋषीन् पुण्यश्लोकान् महात्मना २८ अनुवर्तिता स्विद्यशसा साधुवादेन सत्तमा ब्राह्मणा ऊचुः पार्थ प्रजाविता साक्षादिक्ष्वाकुरिव मानवः २९ ब्रह्मण्यः सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यथा ३० एष दाता शरण्यश्च यथा ह्यौशीनरः शिविः यशो वितनिता स्वानां दौष्यंतिरिव यज्वनां ३१ धन्विनामग्रणीरेष तुल्यश्चार्जुनयोर्द्वयोः हुताशइव दुर्धर्षः समुद्रइव दुस्तरः ३२ मृगेंद्र इव विक्रांतो निषेव्यो हिमवानिव तितिक्षुर्वसुधेवासौ सहिष्णुः पितराविव ३३

होयगो एसै मनुके पुत्र इक्ष्वाकु होत भए और ब्राह्मण सत्य प्रतिज्ञा जाकी एसो होयगो जैसे दसरथ के बेटा राम भए २९ और सरन आये सरनागत को देनवारो होयगो जैसे उसीनर देशको राजा शिबि होत भयो अपनी ज्ञानको और यज्ञ करनवारेनको यस इन ताहि विस्तार करैगो जैसे दुष्यंत के बेटा भरत होत भये ३० धनुषधारीन मै यह श्रेष्ठ होयगो दोई अर्जुनके निनके समान होयगो अग्नि सो दुःसह होयगो समुद्र सो दुस्तर होयगो ३१ सिंह सो प

समता मै हिमालय के समान होयगो प्रसाद करवे मै महादेव के समान होयगो सबरे प्राणीनको आश्रय होयगो जैसे लक्ष्मी को आश्रय हरि है ३३ सगरे सुंदर गुणनि करकै जो महान माना के विषै श्रीकृष्णकी तुल्य होयगो रंतिदेव राजा सो उदार होयगो ययाती सो धर्मात्मा होयगो ३४ और धीरज करिकै बलिके समान होयगो और श्रीकृष्ण मै प्रह्लाद की सी नाई आग्रह करैगो अश्वमेध यज्ञको करनवारो होयगो वृधनकी उपासना करैगो ३५ राजऋषि जे जन्मेजयादिक पुत्रनि ने उपजावैगो उत्पथगामिनी कीसी शिक्षा देयगो पृथ्वी मैं धर्मके कारन ते यह कलजुग कौ निग्रह करैगो ३६ ब्राह्मणके पुत्रने पठायो

पितामहसमः साम्ये प्रसादे गिरिशोपमः आश्रयः सर्वभूतानां यथा देवो रमाश्रया ३३ सर्वसद्गुणमाहात्म्ये एष कृष्णमनुव्रतः रंतिदेवइवोदारो ययातिरिव धार्मिकः ३४ धृत्या बलिसमः कृष्णे प्रह्राद इव सद्ग्रहः आहर्तैषोऽश्वमेधानां वृद्धानां पर्युपासकः ३५ राजर्षीणां जनयिता शास्ता चोत्पथगामिनां निग्रहीता कलेरेष भुवो धर्मस्य कारणात् ३६ तक्षकादात्मनो मृत्युं द्विजपुत्रोपसर्जितात् प्रपत्स्यत उपश्रुत्य मुक्तसंगः पदं हरेः ३७ जिज्ञासितात्मयाथार्थ्यो मुनेर्व्याससुतादसौ हित्वेदं नृप गंगायां यास्यत्यद्धाकुतोभयं ३८ इति राज्ञ उपादिश्य विप्रा जातककोविदाः लब्धापचितयः सर्वे प्रतिजग्मुः स्वकान् गृहान् ३९ स एव लोके विख्यातः परीक्षिदिति यत्प्रभुः गर्भे दृष्टमनुध्यायन् परीक्षेत नरेष्विह ३० श्रीहरिः ॥

जो तक्षक नाते अपनी मृत्यु है ताहि सुनिकरकै मुक्तसंग होकै हरिको जो परमपद ताहि प्राप्त होयगो व्यासपुत्र जो शुकदेवजी तिनतै जानो है आत्माको स्वरूप जानो एसो जो यह तुम्हारो पुत्र सो गंगा के विषै सरीर छोडिकै नहीं है काहू को भय जाके विषै एसो जो हरिको पद ताहि प्राप्त होइगो ३८ जो तस मै निपुन एसे जे ब्राह्मण ते एसे राजा कूं उपदेश करिकै पाइ है पूजा जिन्नें ते सब अपने अपने घरकूं जात भये ३९ गर्भ मै जो देख्यो पुरुष ताहि ध्यान करत लोकन मैं यह वडी है करता एसे परीक्षा करत भयो याते यह लोक मैं परिक्षत नाम करिकै विख्यात होत भयो है ३०

स्वस्तिपकी साधुनकोते भावना कीसी नाईंसवनकरवेकुं जोयह होयगो १४
कीनकोहगे पितामाताकी नाईं पीतिकरैगो १५

भा॰प्र॰
३५

सोराजपुत्रसीघ्रवटनभयोजेसैंशुक्लपक्षमेचंद्रमावढैहै: वैसेसोराजपुत्रहैयुधिष्ठिरादिकनकरिकैंनित्यनित्यपालनक रैहैं ३१ ज्ञातकोजोद्रोहताकेनासकरिवेकीइछाकरिकै अश्वमेधजज्ञकरिकैंप्रजाकरयोचाहे एसोजोराजायुधिष्ठिरसोक रतिनग्रोरदंडइननतेग्रोरठोरनतीपायेहैं धनजिन्नैसोचिंताकरतभयो ३२ ताग्रभिप्रायकेजानकेंश्रीकृस्नने प्रेरे: ग्रैसेभीमादिकननेउतरदिसामेंमरूतकेयज्ञमैंत्यागकीयोवहुतनधनताहिलावतभए ३३ ताधनकरिकैंसिद्धकीयेहैं: यज्ञकीसामिग्रीजानैं एसोजोधर्मपुत्रयुधिष्ठिर सोतिनग्रस्वमेधजज्ञपकरिकेहरकीप्रजाकरतभए ३४ राजायुधि

स राजपुत्रोववृधे आशुशुक्ल इवोडुप आपूर्यमाणः पितृभिः काष्ठाभिरिव सोन्वहं ३१ यक्षमाणोश्व मेधेन ज्ञातद्रोहजिहासया राजालब्धधनो दध्यौ नान्यत्र करदंडयो ३२ तदभिप्रेतमालक्ष्य भ्रातरोच्यु तचोदिता धनं प्रहीणमाजह्रुरुदीच्यां दिशि भूरिशः ३३ तेन संभृतसंभारो धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः वा जिमेधैस्त्रिभिर्भीतो यज्ञैः समयजद्धरिं ३४ आहूतो भगवान्राजा याजयित्वा द्विजैर्नृपं उवास कति चिन्मासान्सुहृदां प्रियकाम्यया ३५ ततो राज्ञाभ्यनुज्ञातः कृष्णया सहबंधुभिः ययौ द्वारवतीं ब्रह्मन् सार्जुनो यदुभिर्वृतः ३६ इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे परीक्षितपर्वणि द्वादशोध्यायः १२ सूत उवाच: विदुरस्तीर्थयात्रायां मैत्रेयादात्मनो गतिं ज्ञात्वागाद्धास्तिनपुरं तयावाप्तविवित्सितः १

ष्ठिरनैवुलाए एसेजोभगवान्सोब्राह्मणनकरिकेंग्राज्ञादीये ग्रैसेजोराजातेनाईजज्ञकरायकेंं स्वजनकेप्रि यकरिवेकेलीयेकितनेंकमहीनावसतभए ३५ ताकेग्रनंतरराजाकरिकेंग्राज्ञादीये एसेजोश्रीकृस्नसोद्रो पदीग्रोरवंधुनिसहितकरिकें हेसौनक ग्रर्जुनकूंसंगलेकै यादवनसहितद्वारिकाजातभये ३६ इतिभागवते प्रथमेद्वादसोध्याय: १२ तेरैकीग्रध्यायमेपरिक्षितकेराजग्रभिसेककरिकेयुधिष्ठरकोमहापथहै नारित क़ै कोविदुरकेवचनकरिकैं धर्मराजकोवनकूंजायवोसोवर्ननकरैहै १ सूतजीसोनकनतेकहैहै हेसौनकवि

विदुरहैसोमैत्रेयकेग्रागेंजिननेग्रात्मकरनभए तिनतेंगोविंदमेंभक्तिहैभईजिनके ग्रैसेजोविदुरसोतिनप्रसन्नसंउप राजकूंप्राप्तहोतभए २ ग्रपनेवंधुविदुरतिनैग्राएजानिकैं भैयानकेसहितराजायुधिष्ठिरधृतराष्ट्रयुयुत्सु संजय कृपा चार्यकुंती ३ गांधारीद्रौपदीसुभद्राउत्तराक्रपीग्रोरजातकीस्त्री ग्रोरसववस्त्रीपुत्रनसहितविदुरजीकेदेखवेकेलीयेजा तभए ४ कैसेजातभए कमलन्प्राणादिदोसनतेप्राणलीनरहैहैं तवतायपायइंद्रीनिग्रेसेहोयकै फेरजवदेहमेप्राणग्रावेतें तवसवइंद्रीउठठाडीहोवैजांयहैं तैसेसवउठतभए ५ विधिसंसवसन्मुखहोयकैं विदुरजीसोमिलकेप्रणामकरकें वि

प्रत्युज्जग्मुः प्रहर्षेण प्राणं तन्व इवागतं अभिसंगम्य विधिवत्परिष्वंगाभिवादनैः ५ मुमुचुः प्रेमबाष्पौघं विरहौत्कंठ्यकातराः राजा तमर्हयांचक्रे कृ तासनं परिग्रहं ६ तं भुक्तवंतं विश्रांतमासीनं सुखमासने प्रश्रयावनतो राजा प्राह तेषां च शृण्वतां ७ युधिष्ठिर उवाच: अपि स्मरथ नो युष्मत्पक्षच्छायासमेधितान् विपद्गणाद्विषाग्न्यादेर्मोचिता यत्समातृकाः ८ कया वृत्त्या वर्तितं वश्चरद्भिः क्षितिमंडलं तीर्थानि क्षेत्रमुख्यानि सेवितानीह भूतले ९ भव द्विधा भागवतास्तीर्थभूताः स्वयं विभो तीर्थीकुर्वंति तीर्थानि स्वांतःस्थेन गदाभृता १०

पावंते: कृतवान्प्रस्मान् हसताकैवारवागत: जातेहमविहेजोविदेहनेभयह्योपररामर २ बंधुवंमागतं द्रष्याधर्मपुत्रसहानुज: धृतराष्ट्रोयुयुत्सुश्चसूत: सरद्वतस्तथा ३ गांधारीद्रौपदीब्रह्मन्सुभद्राचोत राक्रपी ग्रन्याश्चपःनयः पांडोर्ज्ञातयाससुतास्त्रिय: ४

खकरिकैंउत्कंठाताकरिकैंकातरएसेजेयुधिष्ठिरादिकतेप्रेमकरिकैंग्रांसूनकूंडारतभए राजायुधिष्ठिरहैसो विदुरजीकूंग्रासनपैंवैठारकेपूजाकरतभए ६ भोजनजिन्नेंकीयोहै ग्रमजिनकोगयो सुखसूंग्रासनपैंवैठेए सेजोविदुरजीतिनसूंनम्रहोइकै सवनकेसुनतराजापूछतभए ७ तुम्हारेपक्षयानकीछायाकरिकेवढेएसे जोहमतिनैकवाहूस्मरनकरतभये जिनतुमनैंविषतैग्रग्नितैविपतीगणननतैंमातासहितछुटाये ८ कौन सीजीवकाकरिकैंपृथ्वीकौनिर्वाहकीयो कौनकौनसोतीर्थक्षेत्रनेयाभूतलमैसेवनकीयो ९ श्रीरामजी

70

71

हे प्रभो तुम संसार के भागवत हो आपही तीर्थरूप हो कौन कौन से तीर्थ क्षेत्र ने या भूमंडल में हैं परिभ्रमण करि के तीर्थ रूप भगवान् तिहारे हृदय में स्थित जो भगवान् ता करिके तिन तीर्थ नकूं पवित्र करो हो १० हे हे काका विदुर हमारे बंधु और सुहृद जे देवता जी नके एसे जे यादव ते अपनी पुरी में कहा सुख से बसे है तुम ने कहु देखे अथवा सुने ११ ऐसे धर्मराज जो युधिष्ठिर तिन ने पूछे विदुर जी सो जैसे तीर्थ किये तैसे सब क्रम से वर्णन करत भए एक जदुकुल के नासकूं न कहत भये १२ क्यों न कह्यो सोही कहे हैं मनुष्यनकूं सहिवे में न आवें ऐसें जो दुख सो आपही प्राप्त होते हैं याते दया मान जो विदुर सो यदुकुल को नासन

अपिनः सुहृदस्तात बांधवाः कृष्णदेवता दृष्टाः श्रुता वा यदवः स्वपुर्यां सुखमासते १० इत्युक्तो धर्मराजेन सर्वं तत्समवर्णयत् यथानुभूतं क्रमशो विना यदुकुलक्षयं ११ नन्वप्रियं दुर्विषहं नृणां स्वयमुपस्थितं नावेदयत्सकरुणो दुःखितान्द्रष्टुमक्षमः १२ किंचित्कालमथावात्सीत्सत्कृतो देववत्सुखं भ्रातुर्ज्येष्ठस्य श्रेयस्कृत्सर्वेषां सुखमावहन् १३ अबिभ्रदर्यमा दंडं यथावदघकारिषु यावद्दधार शूद्रत्वं शापाद्वर्षशतं यमः १४ युधिष्ठिरो लब्धराज्यो दृष्ट्वा पौत्रं कुलंधरं भ्रातृभिर्लोकपालाभैः मुमुदे परया श्रिया १५ श्रीकृष्णाय रामचंद्राय नमो नमः श्रीकृष्णाय नारायणाय नमो नमः ॥१५

करत भए कैसे विदुर हैं दुखीन कूं देखवे कूं योग्य नही हैं १३ देवतान की नाई सतकार कीये और जेठे भैया जे धृतराष्ट्र ता के श्रेय के करन वारे ऐसे जे विदुर ऐसें जे विदुर सो सबन कूं मीन देत कितने क दिवस न घर में वसत भए १४ अरु हे कैसे उपदेश कीये न ताकूं कहे हैं यम धर्मराज विदुर रूप हैं कैसे भये तो या को कारन कहे हैं अणीमांडव्य के जन्म तीये दंड को न दीये अपेक्षा में कहो हे पाप के करन वारे न कूं अर्पना नाम जो पितर सो यथा योग्य दंड देत भयो अब नाई सो वषि मांडव्य ऋषि के साप ते यम राज सूद्र योनि कूं प्राप्त भयो अब नाई दंड देत भयो १५ पायो है

ऐसे घरन में आसक्त घरन के व्यापार करि कैं आसक्त तिन कूं नही जानवे में आवे परम दुस्तर ऐसो जो काल सो अंत कूं न करत भयो अथवा तिन को पराभव करत भयो १७ विदुर है सो ता काल कूं जानि करि के धृतराष्ट्र सो बोलत भए हे राजा धृतराष्ट्र वेग घर ते निकरो यह आसो जो भय ता हि देखो १८ या भय कहि प्रभु काउ ने काहू से वैसे तु प्रतिक्रिया नही हैं सो यह भगवान् काल तम कूं और सबन कूं आय प्राप्त भयो १९ या काल करि ग्रस्यो जो यह जन सो प्यारे प्राणन करि कैं तत्काल वियोग कूं प्राप्त हो है और जो धनादिक हैं तिन करि के वियोग होई या में कहा कहे भोरे २० तुम्हा

एवं गृहेषु सक्तानां प्रमत्तानां तदीहया अत्यक्रामदविज्ञातः कालः परमदुस्तरः १६ विदुरस्तदभिप्रेत्य धृतराष्ट्रमभाषत राजन्निर्गम्यतां शीघ्रं पश्येदं भयमागतं १७ प्रतिक्रिया न यस्येह कुतश्चित्कर्हिचित्प्रभो स एष भगवान्कालः सर्वेषां नः समागतः १८ येन चैवाभिपन्नोयं प्राणैः प्रियतमैरपि जनः सद्यो वियुज्येत किमुतान्यैर्धनादिभिः १९ पितृभ्रातृसुहृत्पुत्रा हतास्ते विगतं वयः आत्मा च जरया ग्रस्तः परगेहमुपाससे २० अहो महीयसी जंतोर्जीविताशा यथा भवान् भीमापवर्जितं पिंडमादत्ते गृहपालवत् २१ अग्निर्निसृष्टो दत्तश्च गरो दाराश्च दूषिता हृतं क्षेत्रं धनं येषां तद्दत्तैरसुभिः कियत् २२ तस्यापि तव देहोयं कृपणस्य जिजीविषोः परैत्यनिच्छतो जीर्णो जरया वाससी इव २३ गतस्वार्थमिमं देहं विरक्तो मुक्तबंधनः अविज्ञातगतिर्जह्यात्स वै धीर उदाहृतः २४

रे पिता भैया सुहृद पुत्र ते मरो तुम्हारी आयु वितीत भई देह है सो जरा अवस्था ने ग्रस लीयो सो तुम पराए घर कूं सेवन करो हैं २१ अहो प्राणी कूं जीवे की आसा बडी हैं जे आसा करके भीम ने दीयो जो अन्न ता हि खायो जैसे द्वार पे टूक खायो करें हैं ऐसे तुम पायो ऐसे तुम खाओ हो जिन पांडवन कूं तुम ने आग में जराए विष के लडू आप वाए जिन की स्त्रीन कूं दुख दीयो जिने दुखः जिन के धन क्षेत्र तेरे रे जिन ने दीये जो प्राण तिन करि कै कहा प्रयोजन है २३ जीवे की इच्छा करते और कृपन है तप कोई दुजो देह सो विना इच्छा ही जरा अवस्था करि कैं जीरन हो है जैसे जैसे ते सेवस्त्र अजीरन हे जा

गयोते स्वार्थजाको एसोजोइतदेरनाहिछुटेतैबंधनजाके ओरविरक्ततैं ओरकरागयोकैसेनहीजानीहैगतिजाकी ऐसेसोहैकेजोदेतछोडेहैं २५ जोआपनेओरतैंभयोहैनिर्वेदजाकें ओरवुद्धमानतैं सोहृदेमैंहरिकूंधरघरतेंनिकरैसोनरमैउतमकहोहैं २६ पाकारनतेंअपनेकरकेनहीजानेतैंगतिजाकी ऐसेजेनुमसोउतरदिशाहेनाहिजाउःतुमारेगयेपीछेपुरषनकेगुणनकोनासकरनवारो एसोजोकालसोआवैगो २७ एसेछोटेभैयाविदुरतानेसमःजायोज्ञानतैंनेत्रजाकें करागंधोअजमीढकेवंसमैभयो एसोजोधतराष्ट्रअपनेबंधुनमैलगीहैनेहरूपपास तिः

पःस्वकात्समोवेतजात्निर्वेदआत्मवान् हृदिकृत्वाहरिंगेहात्प्रव्रजेत्सनरोत्तमः २५ अथोदीचींदिशियातुस्वैरज्ञातगतिर्भवान् इतोऽर्वाक्प्रायशःकालःपुंसांगुणविकर्षणः २६ एवंराजाविदुरेणानुजेनप्रज्ञाचक्षुर्बोधितआजमीढः छित्वास्वेषुस्नेहपाशान्द्रढिम्नोनिश्चक्राम भ्रातृसंदर्शिताध्वा २७ पतिंप्रयान्तंसुबलस्यपुत्रीपतिव्रताचानुजगामसाध्वी हिमालयंन्यस्तदण्डप्रहर्षंमनस्विनामिवसत्संप्रहारं २८ अजातशत्रुःकृतमैत्रोहुताग्निर्विप्रान्नत्वातिलगोभूमिरुक्मैः गृहंप्रविष्टोगुरुवन्दनायनचापश्यत्पितरौसौबलींच २९ तत्रसंजयमासीनंपप्रच्छोद्विग्नमानसः गावल्गणेक्वनस्तातोवृद्धोहीनश्चनेत्रयोः ३०

नैकाटिकरिकेंमैयाननमैदिखायोजोमार्गनाकरिकेंनिकरतभयो २८ सुवलकीवेटीपतिव्रताअरुशीलाऐसीजोगंधारीसोहीमालयकूंजातैं एसेअपनेपतिधृतराष्ट्रतिनकेपीछेजातभई जेसोहीमालपरेंत्यागकीयोहैदंडजिननेतिनकूंआनंददेनवारोहैं दुखदेसोउकितनेनकूंआनंददकूंकारनतहैं नामैद्रष्टांतदेतेंजेसेसुरनकूंवडोजोमतारहैसोआनंददेतैं २९ नहीभयोहैवैरजिनकेकीयोहैसंध्यावंधनजिननैहोमीहैअग्नीजिन्नेएसोजोयुधिष्ठिरसोब्राह्मननकोनमस्कारकरिकेतिल गाय भूमि सोनो इनकोदानदेकैधृतराष्ट्रकूंदंडोत

उहंद्रिहेमनताकोंऐसोजोराजायुधिष्ठरसोताघरमैंबैठ्योंसंजयतासूंपूछतभए हेगावलगणकेपुत्रसंजय नेत्रकरिकेहीनवृद्धहमारेपिताकाकासोकहांगए ३१ मरेहैंपुत्रजाके दुषीयाऐसीहमारीअवागांधारीसोकहांगई ओरहमारेसुहृद छोटेकाकाविदुरसोकहांगएहे मंदहैगतिजाकीऐसोजोमैंतामेंअपराधकीसंकाकरिकेंदुःखतेंगंगामैगिरपरेकहा ३२ हमारेपितापांडुमरेसंतैंहमजेबालकतिनतैं ओरसवसुहृदहैतिन्हेदुखनेरक्षाकरतभए तेदोउकाकायास्थानतेंकहांगए ३३ कृपाकरिकेस्नेहकरिकेंविकलभावताकैअतिपीडितविरहकरिकेंकरिसित अपनोईश्वरजोध

अंवाचाहतपुत्रार्त्तापितृव्यःक्वगतःसुहृत् अपिमय्यकृतप्रज्ञेहतबन्धुःसभार्यया ३१ आशंसमानःशमलंगंगायांदुःखितोपतत् पितर्युपरतेपाण्डौसर्वान्नःसुहृदःशिशून् ३२ अरक्षतांव्यसनतःपितृव्यौक्वगतावितः सूतउवाचः कृपयास्नेहवैक्लव्यात्सूतोविरहकर्शितः ३३ आत्मेश्वरमचक्षाणोनप्रत्याहातिपीडितः विमृज्याश्रूणिपाणिभ्यांविष्टभ्यात्मानमात्मना अजातशत्रुंप्रत्यूचेप्रभोःपादावनुस्मरन् ३४ नाहंवेदव्यवसितंपित्रोर्वःकुलनन्दन गान्धार्यावामहाबाहोमुषितोऽस्मिमहात्मभिः ३५ एतस्मिन्नन्तरेविप्रनारदःप्रत्यदृश्यत वाणीवीतंत्रीरणधन्भगवान्सततुम्बरुः ३६ राजाहत्वोपीनार्घप्रत्युत्थायाभिवंदितेपरमासनमासीनंपोरवेंद्रोभ्यभाषत ३७ युधिष्ठरउवाचः नाहंवेदगतिंपित्रोर्भगवन्क्वगते

तराष्टताहिनहीदेषेहैं ऐसोजोसंजसोउत्तरनहीदेतभयो ३५ हाथनतेंआसूपोछकरिकें बुधकरिकेंकरिसितअपनोईश्वरजोधृतराष्टताहिनहीदेषैहें ऐसोजोमनहैंताहिथांभिकें प्रभुजोधृतराष्टगांधारीतिनकेचरननकोंसेवनकरत संजयहैसोयुधिष्टरसूंबोलतभयो ३५ तुम्हारेपितरजोधृतराष्टओरविदुरओरगांधारी इनकोंजोनिश्चैहैंताहिमेंनहीजानूंहूं हेकुलनंदनमहात्माऐसोजोधृतराष्टविदुरगांधारी तिनऐमेंवंचितकीयोहूं ३६ याकेअनंतरतुंवरनामगंधर्वकरिकेंसहितजोभगवान्नारद सोआवतभए राजाउठिकेंनमस्कारकरमैयान

हे भगवन् धृतराष्ट्र विदुर इन्ह की जो गति ताहि मैं नहीं जानूं याश्रम ते कहां गए मरे हैं पुत्र जाके ऐसी जो गांधारी सो कहां गई अपार जो दुःखरूप समुद्र तामें पार के दिखावनवारे खेवटी याकी सी नाई तुम प्राप्त भए हो ३८ याके अ
नंतर मुनिन में उत्तम जो भगवान् नारद सो बोलत भए हे राजन् काहू को सोच मति करो याते ईश्वर के वस जग
त है ३९ पालन सहित जो लोक ते या ईश्वर कूं दे हैं सो ईश्वर सगरे भूतन हैं तिनें मिलावे हैं और वियोग करावे हैं ४०
जैसे बैल हैं ते नाक फोडि कै डोरन कार कै बंधे ते अपने स्वामी की आज्ञा कूं वहे हैं ऐसी वानी रूप जो डोरी तामें नामन

करुणाधार इवापारे भगवान् पारदर्शनः अथाबभाषे भगवान्नारदो मुनिसत्तमः ३९ नारदउवाचः मा
कंचनशुचो राजन्यदीश्वरवशंजगत् ससंयुनक्ति भूतानि सवेएव वियुनक्ति च ४० यथा गावो नसि प्रो
ताः तंत्यां बद्धाश्च दामभिः लोकाः सपाला यस्येते वहंती बलिमीशितुः ४१ यथा क्रीडोपस्कराणां संयो
गविगमाविह ४२ इच्छया क्रीडतः स्यातां तथैवेशेच्छया नृणां यन्मन्यसे ध्रुवं लोकमध्रुवं वा न चोभ
यं ४३ सर्वथा हि न शोच्यास्ते स्नेहादन्यत्र मोहजात् तस्माज्जह्यंग वैक्लव्यमज्ञानकृतमात्मन ४४
कथं त्वनाथाः कृपणाः वर्त्तेरंस्ते च मामृते ४५

मू॰ दू॰ २ अंधा च वृद्धा जननी कृपणा च तपस्विनी

करके बंधे ऐसे जे लोक ते ईश्वर की आज्ञा कूं वहे हैं ४१ जैसे खिलौनन को संयोग वियोग खेलवारे जो बालिक ताकी
इच्छा करिकै होत हैं तैसे मनुष्यन को संयोग वियोग सो ईश्वर की इच्छा करिकै होत हैं ४२ जो यह लोक ते नाहि जीव रूप हैं
के साचो मानो हो देह रूप करिकै कूं हो मानो हो अध्रुव स्वरूप करिकै न साच्यौ न कहो ऐसे मानो हो तो सर्वथा पिता
माता ले आदि लेके जे लोक हैं ते सोच करवे कूं योग्य नहीं हैं मोह ते भयो स्नेह ताते अन्यत्र स्नेह तो सोक को कारन है ४३
ता ले अज्ञान करके कीयो मन कूं जो व्याकुलता ताहि त्याग करो अनाथ कृपण मो बिना कैसे जी वेंगे यह जो व्याकुलता है ताहि

चौथे की अध्याय में राजा युधिष्ठिर आतुरतौ तिनै देख करिकै संख्या करत भए और अर्जुन ने श्रीकृष्ण को अंतर्धान
भयो ताहि सुनत भए यह वर्णन करे हैं १ सूतजी शौनकन सों कहत हैं बंधुन की देखबे की इच्छा करिकै और पु
ण्यतेजस जिनको ऐसे जो श्रीकृष्ण तिनको अभिप्राय जानिबे के लीयें अर्जुन हैं सो द्वारका तें न आवत भए १ अ
र्जुन हैं सो राजा ने द्वारिका में भेज्यो १ अर्जुन कूं सात महीना वितीत होत भए तोउ अर्जुन ते सो द्वारिका तें आवत भयो
नासमें राजा युधिष्ठिर घोर रूप जो उत्पात तिनै देखत भए २ काल की गति भयंकर देखी ऋतुन के धर्म विपरीत

सूतउवाच संप्रस्थिते द्वारिकायां जिष्णौ बंधुदिदृक्षया ज्ञातुं च पुण्यश्लोकस्य कृष्णस्य च विचेष्टितं १
व्यतीताः कतिचिन्मासास्तदा नायात्ततोऽर्जुनः ददर्श घोररूपाणि निमित्तानि कुरूद्वह २ कालस्य च गति
रौद्रां विपर्यस्तर्तुधर्मिणः पापीयसीं नृणां वार्तां क्रोधलोभानृतात्मनां ३ जिह्मप्रायं व्यवहृतं शा
ठ्यमिश्रं च सौहृदं पितृमातृसुहृद्भ्रातृदंपतीनां च कल्कनं ४ निमित्तान्यत्यरिष्टानि काले त्वनु
गते नृणां लोभाद्यधर्मप्रकृतिं दृष्ट्वोवाचानुजं नृपः ५ युधिष्ठिरउवाचः संप्रेषितो द्वारिकायां
जिष्णुर्बंधुदिदृक्षया ज्ञातुं च पुण्यश्लोकस्य कृष्णस्य च विचेष्टितं ६ गताः सप्ताधुना मासा भीम
सेन तवानुजः नायाति कस्य वा हेतोर्नाहं वेदेदमंजसा ७

देखे लोकन की जीविका पापरूप देखी क्रोध लोभ झूंठ इन करिकै युक्त मनन देख्यो ३ कपट जामें बहुत ऐ
सो व्यौहार देख्यो लोक ठगवे को मित्रभाव देख्यो पिता भैया सुहृद माता स्त्री पुरुषन में कलह देख्यो ४ घोर जे अरि
ष्ट तिनै देख के और मनुष्यन की लोभादिक अधर्म में जो प्रवृत्ति ताहि निहारि देखवे मैं छोटे भैया जो भीमसेन राजा बो
लत भए ५ बंधुन के देखबे के लीये श्रीकृष्ण की चेष्टा जानिबे के लीये अर्जुन हैं सो द्वारिका में पठायो ६ अब सा
त महीना वितीत भए हे भीमसेन तेरो छोटो भैया अर्जुन कोन कारण करके नहीं आयो सो मैं नहीं जानूं हूं ७ श्री॥

जो नारदजी नें कह्यो सो समय सो इक मास भयो जामें भगवान् अपनी क्रीडा को साधन अंगजा तिन मनुष्यन तिन करेंगे जो ८ जा श्रीकृष्ण नें हमकूं संपत राज्य स्त्री प्राण कुल प्रजा होत भए और जा श्रीकृष्ण के अनुग्रह तें वैरीन को विजय और उत्तम लोक ते होत भए ९ हे नरव्याघ्र मैं देखूं भीम दारुण भए भूमि भए ऐसे जे उत्पात तिनें देख जे उत्पात हैं निकट आयो जो भय ताहि क हैं हमारी बुद्धि कूं मोहन करे हैं १० मेरी बांई जंघा भुजा नेत्र ये बेर बेर फरके हैं मेरे हृदय में कंपते हैं ये उत्पात देखो ते ताहि दे हिजें ११ यह जो स्यारनी है सो उदै भयो जो सूर्य ताके सामें रोवे हैं मुख तें अग्नि डारे है: और रे भीम सारमेय जो कुत्ता सो निडर ह्वै पोते हैं

अपि देवर्षिणादृष्टः स कालोयमुपस्थिता यदात्मनोंगमाक्रीडा भगवानुत्सिसृक्षति ८ यस्मान्नःसंपदोराज्यं दाराःप्राणाकुलंप्रजा आसन्सपत्नविजयो लोकाश्चयदनुग्रहात् ९ पश्योत्पातान्नरव्याघ्रदिव्यान् भौमान्सदैहिकान् दारुणांशंसतोदूराभयन्नोबुद्धिमोहनं १० ऊर्वक्षिबाहवोमह्यंस्फुरंतिचपुनःपुनः वेपथुश्चापिहृदये आराद्दास्यंतिविप्रियं ११ शिवैषोद्यंतमरुणमभिरौत्यनलानना ममांगसारमेयोयमभिरेभित्यभीरुवत् १२ शस्ताःकुर्वंतिमांसव्यं दक्षिणंपशवोपरे वाहांश्चपुरुषव्याघ्रलक्षयेरुदतोमम १३ मृत्युदूतःकपोतोयमुलूकःकंपयन्मनः प्रत्युलूकश्चकुह्वानैरनिद्रौशून्यमिच्छत १४ धूम्रादिशापरिधयः कंपतेभूःसहाद्रिभिः निर्घातश्चमहांस्तात साकंचस्तनयित्नुभिः १५

सो मेरे सामें रोवे हैं १२ जे पवित्र पशु हिरण आदिक मोकूं दाहनी ओर आवे हैं ते बांई ओर रहे के निकरे हैं गधा आदि करिके ते दाहनी ओर आवे हैं हे पुरुषव्याघ्र भीमसेन मेरे जे वाहन जो घोडा तिने रोवत देखूं हूं १३ यह जो कपोत है सो मृत्यु को दूत है और यह उलूक सो मेरे मन कूं कंपावत है उसरे उलूक के संग बोले विश्व कूं यह शून्य करवे की इच्छा करे है १४ दिशान तें धुआं से होइ हैं और अग्नी की सी नाई लाल लाल मंडल है ते लोक कोलक रेहै: गर्जनि करिके सहित विना बादर वज्रपात होई है: श्रीकृष्णाय गोविंदाय वासुदेवाय नमो नमः श्रीरामचंद्राय नमो नमः ॥ श्री २५

काल कर्म गुन के आधीन पांच महाभूतन को बनायो ऐसो जो यह देह सो और की के से रक्षा करेंगो जैसें अजगर नें जो निगल्यो सो और के से रक्षा करेगो ४५ हाथ वारे न कूं बिना हाथ जीव का हे चार पाउ के न कूं बिना पाउन के जीव का हैं बडे न कूं छोटे जीव का हैं जीव कूं जीव ही जीव का है ४६ हे राजन् यह जो सब है सो आत्मान को आत्मा भगवान् सोई है भगवान ते न्यारो न ही है जो भगवान् स्वतःसिद्ध हैं ज्ञान जो को ऐसो है और सब के भीतर बाहर प्रकाशे हैं माया करिके बहुत प्रकार को है ताहि देखो ४७ हे महाराज सोई ये भगवान् भूतन के पालक कालरूपी दैत्यन के नाश करवे के लीयें पृथ्वी में अवतार लीने हैं ४८ देवता

कालकर्मगुणाधीनो देहोयं पंचभौतिकः कथमन्यांस्तुगोपायेत्सर्पग्रस्तोयथापरं ४५ अहस्तानि सहस्तानामपदानि चतुष्पदां ४६ फल्गूनितत्रमहतांजीवोजीवस्यजीवनं तदिदंभगवान्राजन्नेकआत्मात्मनांस्वदृक् ४७ अंतरोनंतरोभातिपश्यतंमाययोरुधा सोयमद्यमहाराजभगवान्भूतभावनः ४८ कालरूपोवतीर्णोस्यामभावाय सुरद्विषां निष्पादितंदेवकृत्यमवशेषंप्रतीक्षते ४९ तावद्यूयमवेक्षध्वंभवेद्यावदिहेश्वरः धृतराष्ट्रःसहभ्रात्रागांधार्याचस्वभार्यया ५० दक्षिणेनहिमवतऋषीणामाश्रमंगतः स्रोतोभिःसप्तभिर्यत्रस्वर्धुनी सप्तधाव्यधात् ५१ समानांप्रीतयेनाम्नासप्तस्रोतःप्रचक्षते स्नात्वानुसवनंतस्मिन्हुत्वाचाग्नीन्यथा विधी ५२ अब्भक्षउपशांतात्मासआस्तेविगतैषणः

नकौं जो कार्य सो कीयो अब और जो बाकी रह्यो है ताहि पैंडौ देखे हैं जब ताईं ईश्वर रहो रहें तब ताईं तुम हूं पेंडो देखो ४९ धृतराष्ट्र है सो भैया न सहित अपनी स्त्री गांधारी ताकरके सहित हिमाचल के दक्षिण और कूं ऋषीन को आश्रम है तहां गए हैं ५० जा आश्रम में गंगा सो सप्तऋषिन की प्रीत के लीयें सात प्रवाह करि सात रूप होत भई यातें तीर्थ कूं सप्तस्रोत कहे हैं ५१ ता स्थान में धृतराष्ट्र है सो त्रकाल स्नान करि के विधि सें अग्नि में होम करिकें जल को ही भोजन जाके और गई है सब ईच्छा जाकी ऐसो तहां रहे है ५२ ॥

जीत्योहै आसनजानैं जीतेहैं प्राणजानैं वसकीनीहैं छहं इंद्रीजानैं हरिकी भावनाकरिकै दूरिभएहैं रजोगुण सत्व
गुण तमोगुण इनकेनेमलजाके ५३ मनजोहै ताहि बुद्धिमिलाइकैं और बुद्धिजोहै ताहि क्षेत्रज्ञजो द्रष्टा तामैं मि
लाइकैं ५४ दूरिभयोहै मायागुणनिमैं जो उत्तरफल कौनवासना जाकी रुकीहैं इंद्री और मनजाको और निवृत्ति
भयोहै आहारजाको ऐसोजो धृतराष्ट्र सो काठकैं ठूठकीसीनांई निश्चल रहैहै ५५ त्यागकीयेहै सबरे कर्मजानैं ऐ
सोजो धृतराष्ट्र जाकूं अंतराय जो विघ्न है सो मतिहोहु सो धृतराष्ट्र आजतें पांचएंदिन देहछोडैगो सो देह आपही भस्म

जितासनोजितस्वासः प्रत्याहृतषडिंद्रियः हरिभावनया ध्वस्तरजःसत्वतमोमलः ५२ विज्ञानात्मनिसं
योज्यक्षेत्रज्ञेप्रविलाप्यतं ५३ ब्रह्मण्यात्मानमाधारेघटांबरमिवांबरे ध्वस्तमायागुणोदर्कोनिरुद्ध
करणाशयः ५४ निवर्तिताखिलाहारआस्तेस्थाणुरिवाचलः तस्यांतरायोमैवाभूःसन्यस्ताखिलक
र्मणः ५५ सर्वाग्यघतनाद्राजन्नूपरितापंचमेहनि कलेवरंहास्यतिस्वंतञ्चभस्मीभविष्यति ५६ विदुरस्तु
तदाश्चर्यंनिशाम्यकुरुनंदन हर्षशोकयुतस्तस्माद्गंतातीर्थनिषेवकः ५७ इत्युक्त्वाथारुहत्स्वर्गं
नारदःसहतुंबरुः युधिष्ठिरोवचस्तस्यहृदिकृत्वाजहाच्छुचः ५८ इतिश्रीमद्भागवतेमहापुराणेप्रथ
मस्कंधेनामत्रयोदशोध्यायः १३

होइगो ५६ अग्निकरिकैं पतिकों देहपरनकुटीसहत योगानलकरिकैं जरैसंतैं बाहरबैठी पतिव्रता एसीजोगां
धारीसोवाई अग्निमें प्रवेशकरैगी ५७ और विदुर है सो हे युधिष्ठिर ना आश्चर्यकूं देखकैं हर्षऔर शोक इनकरि
केयुक्त तास्थानतें तीर्थसेवनकरवेकूं जाइगो ५८ ऐसैं कहिकें तुंबरसहित जो नारद है सो स्वर्गकूंजातभये रा
जायुधिष्ठिर है सो नारदजीकेवचन नाहि हृदैमेधारिकें सोककौत्याग करतभये और अर्जुनतें श्रीकृष्णकहैहै

तीक्षणहैस्पर्शजाको रजकरिकैं अंधेरो करनपवन चलैहैं मेघहैं सो रुधिरकी वर्षा करैहैं सबओर भयंकर सो दिखाइदेतैं २६
नक्षत्रहैं तेजजाको ऐसोजो सूर्य जाहि देखपरस्पर स्वर्गमें परस्परग्रहनको सो घोरयुद्ध ताइ देखौ भूतकरिकैं गणन करिकें मिलेएसे
जे प्राणी तिनकरिकैं सहित स्वर्गऔर पृथ्वी निजरत सीहैं तिनै देखि २७ नदीनद सरोवर ओमनके मनतें क्षोभकूं प्राप्तभए डा
रे संग अग्निहैं सो नरीज रहैहैं यह काल कहाकरैगो २८ बछराहैं सो थनननहीपीवैहैं मातहैं सो दोहनकूं स्तननहींआवैहैं आंसूबे

वायुर्वातीक्ष्णस्पर्शोरजसाविसृजंस्तमः आसृग्वर्षंतिजलदावीभत्समिवसर्वतः २६ सूर्यंहतप्रभंप
श्यग्रहमर्दंमिथोदिवि ससंकुलैर्भूतगणैर्ज्वलितेएवरोदसी २७ नद्योनदाश्चक्षुभिताःसरांसिचम
नांसिच नज्वलत्यग्निराज्येनकालोयंकिंविधास्यति २८ नपिबंतिस्तनंवत्सानदुह्यंतिचमातरः रु
दंत्यश्रुमुखागावोनहृष्यंत्यृषभाव्रजे २९ देवतानीरुदंतीवस्विद्यंतिह्युच्चलंतिच इमेजनपदाग्रा
माःपुरोद्यानाकराश्रमाः ३० भ्रष्टश्रियोनिरानंदाकिमघंदर्शयंतिनः ३१ श्रीकृष्णायनमोनमः

हैं मुखनमैंपैजिनकैं एसीजेगाइ तेरोमैहैं बैलहैं ते खिरकनमैं आनंदकूं नहीं पावैं और देवतानकी जे प्रतिमा ते रोमैहैं और
पसीनाचलैहैं स्थलनतें चलाइमान भईहैं और जेदेश ग्राम पुर उद्यान रत्ननिकी खान आश्रम ते नष्टभईहैं सो भाजि
नकी और गयोहै आनंदजिनको ऐसे दिखाइदेहैं तम देवे कौन सो दुखहैं माहि खामैगे २९ ए जेवडे उत्सातजिनकरकें यतमैं मानतूं मही
और पुष्पिन मैहैं सो भाग्यजिनकी एसे जे भगवानके चरणकमलके रीनगयोहै सो भाग्य जिनकोए सी पृथ्वी होतभई ३० हे खेहै अप्रिय
ने एसोजे चिंतनाकरिकैं चिंताकरनजो राजा ताके पास हनुमानहैं ध्वजामें जाके एसोजो अर्जुन सो द्वारिकातें आवतभयो ३१

चरणमें आपके गितयो जे सो कभू आतुर नहीं जैसो आतुर होनी चौकीयो है मुखज्ञानें ने त्रक्रमतन तै आंसुनकी जे बूंद तिनने ढारे हैं २२ उद्विग्न है हृदे जाको ऐसो जो राजायुधिष्ठिर सो गइ हे कांति जाकी ऐसो छोटो भैया अर्जुन ताहि देखिकें सुहृदनके मध्य हैं नारदकौ स्मरन करत पूछत भयो २३ उद्विग्न है हृदो जाको एसो जो राजा आनर्तपुरी जो द्वारिका ता मैंते मारे जसजनन सुखे सवते मधुभोज दसार्ह अर्ह सात्वत अंधक वृष्णी अये हैं २४ हमारे नाना सवन कुं जो मान्यसूर सो कुसल तैं और हमारे मामा भैया न सहित जो वसुदेव सो कुसल संते हैं २५ तीन वसुदेवकी स्त्री सात मारी मामी परस्पर सानो वहन देवकी ते सो जिन मैं मु

मम मेनै मेंतो सातै नूनं भगवत्परा: अनन्यपुरुषः श्रीभिर्हीनाभर्तृन सो भगा २१ इनी चिंतयतस्तस्य दुःखारिव न चेतसा राज्ञ: प्रत्यागम: क्रूरम यदुपुर्यां कपिध्वज: तं पादयोर्निपतितमयथा पूर्वमातुरं २३ अधोवदनमब्बिन्दून्सृजन्तं नयनाब्जयो: विलोक्योद्विग्नहृदयो विच्छायमनुजं नृप: २४ पृच्छति स्म सुहृन्मध्ये संस्मरन्नारदेरितं युधिष्ठिर उवाच: कच्चिदानर्तपुर्यां न: स्वजना: सुखमासते २५ मधुभोजदशार्हार्हसात्वतांधकवृष्णय: शूरो मातामह: कच्चित्स्वस्त्यास्ते वाथ मारिष: २६ मातुल: सानुज: कच्चित्कुशल्यानकदुंदुभि: सप्त स्वसारस्तत्पत्न्यो मातुलान्य: सहात्मजा: २७ आसते सस्नुषा: क्षेमं देवकीप्रमुखा: स्वयं कच्चिद्राजाहुको जीवत्यसत्पुत्रोस्य चानुज: २८ हृदीक: ससुतोक्रूरो जयन्तगदसारणा: आसते कुशलं कच्चिद्ये च शत्रुजिदादय: २९ कच्चिदास्ते सुखं रामो भगवान्सात्वतां प्रभु: प्रद्युम्न: सर्ववृष्णीनां सुखमास्ते महारथ: गंभीररयोनिरुद्धो वर्द्धते भगवानुत: ३०

ख्याते सव वेदानसत्तत वेदानकी वर्तूं सततसव अछेहें २६ उग्रहोकंस पुत्र जाके ए सो जो राजाउग्रसेन सो अपनो छोटो भैया देवकताकदिके सहित जीवे हैं और कृतवर्मा सत्तत हृदीक जो और अक्रूर जयंत गद सारण पते अछे हैं २७ और जे शत्रुजीत ते आदिलेके ते कुसल सूं हैं यादवनके प्रभु भगवान् वलरदेव सुखसूं हैं २८ सगरे यादवनमैं महारथी ए सो जे प्रद्युम्न सो सुखसूं हैं गंभीर वेग जिनको ए सो जो भगवान अनुरुद्ध सो आनंदकूं मानहैं २९ सुखेन चारुदेष्ण जांबुवती के वेटा सांवसो और जो

सुषेन्यातें सेंर श्रीकृष्णके अनुचर जे श्रुतदेव उद्धव इनतें आदि लेके ते और नंद सुनंद ये जिनमें मुख्य ऐसे जे यादवनमें श्रेष्ठ ते अछे हैं ३१ रामकृष्णकी भुजाके आश्रो जिनकें हममैं कीयो हे सो हृद तिन्हें ऐसे सगरे अछे हैं हमों हूकूं सुस्मनु करै तें ३२ ब्रह्मण्य भक्तवत्सल भगवान् गोविंद सुहृदनि करिकें सहत सुधर्मा सभाके विषे सुषसूं रहे हें ३३ लोकनके मंगलके लीयें पालनके लीए उद्भवके लीये वलदेव हें सहाय जिनके ऐसे जो आदिपुरुष श्रीकृष्ण सो यदुकुलरूपि समुद्रमें रहे हैं ३४ जिन श्रीकृष्णकी भुजा दंडकरि रक्षित द्वारिका तामें सवन करप्रजा कीये ऐसे जे याद

सुखेन शाम्बश्चारुदेष्णश्च साम्बो जाम्बवतीसुत: अन्ये च कार्ष्णिप्रवरा: सपुत्रा ऋषभादय: ३१ तथैवानुचरा: शौरे: श्रुतदेवोद्धवादय: सुनन्दनन्दशीर्षण्या ये चान्ये सात्वतर्षभा: ३२ अपि स्वस्त्यासते सर्वे रामकृष्णभुजाश्रया: अपि स्मरन्ति कुशलमस्माकं बद्धसौहृदा: भगवानपि गोविन्दो ब्रह्मण्यो भक्तवत्सल: ३४ कच्चित्पुरे सुधर्मायां सुखमास्ते सुहृद्वृत: मंगलाय च लोकानां क्षेमाय च भवाय च ३५ आस्ते यदुकुलाम्भोधावाद्योनन्तसख: पुमान् यद्बाहुदंडगुप्तायां स्वपुर्यां यदवोर्चिता ३६ क्रीडन्ति परमानन्दं महापौरुषिका इव यत्पादशुश्रूषमुख्यकर्मणा सत्यादयो द्व्यष्टसहस्रयोषित: निर्जित्य संख्ये त्रिदशांस्तदाशिषो हरन्ति वज्रायुधवल्लभो

वते परमानंद जैसे होवहसैं क्रीडा करे हैं जैसे वैकुंठमें वैकुंठनाथके अनुचर क्रीडा करे हैं ३५ जिनके चरणारविंदकी जो टहल सोई मुख्यकर्म ताकरकें सत्यभामा ते आदि लैकें सोरह हजार जे स्त्री ते युद्धमें श्रीकृष्णके वलकरकें देवतान कूं जीतकें देवतानके जे भोगकल्पवृक्षादिक तिनें भोगे हें कैसे भोगे हें इंद्रानी के उचित से ३६ जिन श्रीकृष्णके भुजादंडकों जो प्रभाव सो इहें नीचन जिनकें ऐसे जे यादवन में उत्तम ते श्रीकृष्णके वलतें हरि देवतानिके उचित ऐसी जो सुधर्मा सभा ताहि अकूतो भय ताके अपने चरननकरि कें खूंदत डोले हें सो गोविंद सुखसूं रहे हैं ३७ श्रीकृष्ण:

हेमैयानोकूं प्ररोगपरें भयलेनजाकोंग्रैसोंतूमोकूंदीषैहैं नहीपायोवंधुनसंसनमानजानैं ग्रोरहेतातनाक्षरिकामैवडु
तदिन रहोगयालेवधुन्नैंनेरोंतिरस्कारकीयोंकहा ३९ प्रेमकरिकैंस्रम॰ ग्रमंगलग्रैसेजोलोकतिननैंकुवचनादिकरि
केनाडितकीयोहैकहा ग्रथवामिखारीनकूंकछुदेउंगो ग्रैसैंतोंनदीनूंहोंहैं ग्रथवाजैसीइनकीग्रासातैंतैंसोदेउंगें य
हप्रतग्यकरिकैंतैनेंनदीयोंकहा ४० ब्राह्मणवालिकगाईवृद्धरोगी ग्रोरसरनग्रायोंप्राणिमात्रताहितूसरनकोंदेन
वारोंसोकहातूसरनदेतभयो॰ ४१ निंदितजेस्त्रीहैंताहितूकहागमनकरतभयो ग्रथवामैंलेवस्त्रपतिरेंउत्तमग्रें

यद्बाहुदंडाभ्युदयानुजीवीनोयदुप्रवीराह्यकुतोभयामुहुः ग्रधिक्रमत्यंघ्रिभिराहृतांवलात्सभांसुधर्मांसु
रसत्तमोचितां ३८ कच्चितेनामयंतातभ्रष्टतेजोविभासिते ग्रलब्धमानोग्रवज्ञातःकिंवाताचिरोषिता
३९ कच्चिन्नाभिहतोभावैःशब्दादिभिरमंगलैः॥ नदत्तमुक्तमर्थिभ्यग्राशयायत्प्रतिश्रुतं कच्चित्वंब्राह्मणं
वालंगांवृद्धंरोगिणंस्त्रियं ४१ शरणोपसृतंसत्वंनात्याक्षीःशरणप्रदः कच्चित्वंनागमोगम्यांगम्यांवांस
त्कृतांस्त्रियां ४२ पराजितोवाथभवान्नोत्तमैर्नासमैःपथिः ग्रपिस्वित्पर्यभुंक्थास्त्वंसंभोज्यान्वृद्धबा
लकान् ४३ जुगुप्सितंकर्मकिंचित्कृतवान्नयदक्षमं कच्चित्प्रेष्ठतमेनाथहृदयेनात्मवंधुना ४४ शू
न्योस्मिरहितोनित्यंमन्यसेतेन्यथानरुक् ४४ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेप्रथमस्कंधेनामचतुर्दशो॰ १४

सोजेस्त्रीताकेपासतूनयोंकहा ग्रथवाउत्तमनतें ग्रपनेवरोवरकेनतें ग्रैसेंजेलोकतिननैंमार्गमैंजीतलीयोंकहा॰ ४१
भोजनकरायवेकूंजोग्यग्रैसेजेवृद्धवालिकतिन्हैंविनाभोजनकरायेंतूभोजनकरतभयोंकहा ग्रपनेहरिवेकूंजो
ग्यनहीं ग्रैसोंजोकोईएकनिंदितकर्मताहिकरतभयोंकहा ४२ प्यारेतेंप्यारेहृदयरूपग्रपनेवंधुग्रैसेंजेश्री
कृष्णताकरिकेरहित ग्रापकूंजूंन्यमानतैहैं ग्रोरप्रकारतेतेरेमनकूंपीडानहोती ४४ इतिश्रीमद्भागवतेप्रस्कं॰ च॰ १४

पंद्रहकीग्रध्यायमैंराजायुधिष्ठिरकलियुगकोप्रवेशदेखिकैंपरीक्षतकूंराज्यदेकैंस्वर्गकूंजातभयोयहवर्णनकरैहैं १ सूतजी
कहैहैं हेशौनकश्रीकृष्णहैसखाजाके ग्रैसेजोग्रर्जुनसोभैयाजोयुधिष्ठिरताहिनेनानासंकाकोस्थानएसोजोरूपताहिदेखि
कैंनानाभेदकरिपूछो ग्रोरश्रीकृष्णकेवियोगकरिकेंदुर्बलभयो १ सोकरिकैंसूखगयो मुखकमल ग्रोरहृदयकमलजाको
नष्टभयोहैतेजजाको एसोजोग्रर्जुनसोश्रीकृष्णकोध्यानकरतवोलवेकूंसमर्थनहीभयो २ कष्टकरिकेंग्रांसूनकूंथांम
कैं नेत्रननैंजोग्रांसूनिकरेतिनैहाथतैंपोंछकरकें नहीजोदेखतश्रीकृष्णताकरिकैं ग्रधिकजोवडोप्रेमताकरिकैं वढीजोउ

सूतउवाचः एवंकृष्णसखःकृष्णोभ्रात्राराज्ञाविकल्पितः नानासंकास्पदंरूपंकृष्णविश्लेषकर्शितः
१ शोकेनशुष्यद्वदनहृत्सरोजोहतप्रभुः विभुंतमेवानुध्यायन्नशक्नोत्प्रतिभाषितुं २ कृच्छ्रेणसंस्तभ्य
शुचपाणिनामृज्यनेत्रयो परोक्षेणसमुन्नद्धप्रणयौत्कंठ्यकातरः ३ सख्यंमैत्रीसौहृदंचसारथ्या
दिषुचसंस्मरन् नृपमग्रजमित्याहवाष्पगद्गदयागिरा ४ ग्रर्जुनोवाचः वंचितोहंमहाराजाह
रिणावंधुरूपिणा येनमेपहृतंतेजोदेवविस्मापनंमहत् ५ यस्यक्षणवियोगेनलोकोह्यप्रिय
दर्शनः उक्थेनरहितोह्येषःमृतकःप्रोच्यतेयथा ६ श्रीकृष्णायवासुदेवायनमस्तेस्तुभ्यं

त्कंठाताकरिकेव्याकुलहैं ३ सारथ्यादिकनमैंश्रीकृष्णकोजोसख्य ग्रोरमैत्रीपसौहृदताहिस्मरनकरतग्रांसूनकरिकैं
गदगदग्रैसीजोवानीताकरिकेवडोभैयाजोयुधिष्ठिर ताहूप्रतवोलतभयो ४ हेमहाराजवंधुरूपीजोहरितानैंमैंनेवि
चित्रकीयोहै जानैंदेवतानकूंविस्मयकरे एसोमेरोवडोतेजसोहरलीयो ५ जाश्रीकृष्णकेक्षणमात्रजोवियोगताकरि
कैंयहजोलोकहैसोनहीहै प्यारोदर्शनजाको ग्रैसोहोहै जैसेंप्राणकरिकेरहितयहजोपिताप्राताजैंग्रादिलेकेंजनसोप्रत

५४
श्रीमद्भागवत

जा कृस्नके आछेतें द्रुपदके घरमें आयेजेराजाकामरिकें दुर्मे तिनकोंजो स्वयंवर तामेंतेजहै सोमेनेहरिलीयो धनुषचढाइके मत्सहै सो काटिकें नीचेडारदीयो राजानकुंजीनकेंद्रोपदीहैसोपाइहैं ७ जाश्रीकृस्नकेनिकटमेनेखांडववन अग्निकूंदीयो देवतानसहितजोइंद्र सोसीघ्रही जीतलीयो औरखांडववनकेदाहतें रक्षाकीयो असेजोमयदैत्यताने बनाई अद्भुतरेंगा रीगरीजामें असी जोसभा सोपाई औरतेरेराजसूयजग्यमेंदिसानतेंआयकें राजाहैसोभेटदेतभए ८ जाश्रीकृस्नकेतेजकरि कें राजानकेसिरपेरखिवेंचरनजाने दसहजारहाथीकोहेवलजामें एसोजोराजाजरासिंधुताहिमारो छोटो भैयाजोभीम

यत्संश्रयाद्द्रुपदगेहमुपागतानां राज्ञां स्वयंवरमुखे स्मरदुर्मदानां तेजो हृतं खलु मयाभिहतश्च मत्स्यः सज्जीकृतेन धनुषाधिगता च कृष्णा ७ यत्संनिधावहमु खांडवमग्नयेऽदामिंद्रं च सामरगणं तरसा विजित्य लब्धा सभा मयकृताद्भुतशिल्पमाया दिग्भ्योऽहरन्नृपतयो बलिमध्वरे ते ८ यत्संश्रयादनु पसितोंघ्रिमहत्तमस्वाधीं मार्गीनुजस्तवगजायुतसत्ववीर्यः तेनाहृतामखनाथमखाय भूपय न्मो चितास्तदनयन्बलिमध्वरे ते ९ पत्न्यास्तवाधिमखक्लृप्तमहाभिषेक श्लाघिष्ठचारुकबरं कि तवैः सभायां स्पृष्टं विकीर्य पदयोः पतितास्रुमुख्या यस्तत्स्त्रियोऽकृतहतेशविमुक्तकेशाः १० श्लो॰१०

सोयज्ञकेअर्थमारतभयो ताजरासिंधुनेमखमखनकोनाथजोभैरव ताकेयज्ञकरिवेकेलीयेवंदीखानेमेराखें एसे जेराजातेंजीनश्रीकृस्नने छुडाएते राजानुमारेयज्ञमेंभेटलावतभए ९ राजसूयजज्ञमेंरच्योसोजोवडोअववेकताकरिके वहुतसुंदरजोद्रोपदीकीचोटीसोधुर्तजोदुसासनादिकतेनेसभामेंखेंची तवद्रोपदीनेंश्रीकृस्नकोस्मरनकीयो जवश्रीकृ स्नआए तवउनकेचरणमेंगिरपरी आंसूनकूंडारतभई तवश्रीकृस्ननेजिन्हेचोटीकोस्परसकीयो पहअपरा धहेयोतिनराजानकूंमारिकेंतिनकीस्त्रीनकूंविधवाकरतभए जिनस्त्रीनकेकेशसदाखुलेरहेंहें १०

जोश्रीकृस्नवनमेंआइकेंदुरंतजोदुरवासातेंकष्टतातेंरक्षाकरतभये जोदुरवासावेरीदुर्योधनतानेंपठायो अर स्यातस्मारचेलानकीपंगतमेंबैठेहें कैसीरक्षाकीनी स्वर्यनेंदीनीजोटोकनी तामेंलग्योजोसाकल ताइभोजनकरिकेरक्षा करतभए जातेजलमेंस्नानकरवेकेलीये मध्यान संध्याकेलीयेंगए सिष्यनसहितदुर्वासा सो त्रलोकीकूं तृप्त मानतभए ११ जिनश्रीकृस्नकेतेजकरकेमेनेंयुद्धमें पारवतीसहितत्रिसूलजिनकेहाथमे ऐसेजेभगवान्महादेवसोविस्मयकूं प्राप्तकीये तवअपनेंअत्रजोपासुपतास्त्रसोमोकूं देतभए औरहूजेलोकपालहैतेअपनेअस्त्रनकूंदेतभए औरया

योनोऽपुगोपवनमेत्यदुरन्तकृच्छ्राद्दुर्वाससोऽरिविहितादयुताग्रभुग्यः शाकान्नशिष्टमुपयुज्य यतस्त्रिलोकीं तृ प्ताममंस्त सलिले विनिमग्नसंघः ११ यत्तेजसाथ भगवान्युधि शूलपाणिर्विस्मापितः सगिरिजोऽस्त्रमदा न्निजं मे अन्येऽपि चाहममुनैव कलेवरेण प्राप्तो महेन्द्रभवने महदासनार्धं १२ तत्रैव मे विहरतो भुज दंडयुग्मं गांडीवलक्षणमरातिवधाय देवाः सेंद्राः श्रिता यदनुभावितमाजमीढ तेनाहमद्य मुषितः पुरुषेण भूम्ना १३ यद्बांधवः कुरुबलाब्धिमनंतपारमेको रथेन ततरेऽहमतीर्यसत्त्वम् प्रत्याहृतं ब हु धनं च मया परेषां तेजःपदं मणिमयं च हृतं शिरोभ्यः १४

ईससरीरकरिकें ईंद्रकेघरमेंगयो आधेईआसनपेवैठतभयो १२ ताहीस्वर्गमेंविहारकरुंहुं असोजोमेंताको गांडीवधनुषहैचिन्हजाको असोजोभुजदंडयुगताहिवेरीनकेवधकरवेकेलीयें ईंद्रसहितजेदेवतातेआ श्रयकरतभए जिनअसोमनाव्युकोमोकूं कीयो हेअजमीढकेवंसमेंभयाहेयुधिष्ठरताश्रीकृस्ननेंमेंवंचि तकीयोहूं १३ नतीहेअंतपारजाको नहीतरवेमेंआवेहें भीष्मादिकम्पातजाकेविषें असोजोकौरवनको सेनासमुद्रताहिश्रीकृस्नहेंबंधुजाके असोंएकमेंरथकरिकेंतरतभयो औरवैरीनेहरयोअसोजोगोधन ताहिलावतभयो औरवैरीनकेतेजकोस्थानमणिनकेरचे असेजेमुकटपाग औरवहोतधनसोमोहिनातस्तंभो

१६ वडे वडे राजान के रथमंडलनि नकरिके मंडीत ऐसे जे भीष्म कर्ण द्रोण शल्य इनको जो सेना तिन में ऐसो जो श्रीकृष्ण ति
सो मेरे आगे होय कें रथन के जे पालक तिन के जे आयु मरण सहित ओज तिन्हें अपनी दृष्टि करि हरलेत भए १५ जीन श्रीकृष्ण की
भुजान के बल तें ऐसे सो जो मैं ताकूं द्रोण भीष्म कर्ण अश्वत्थामा त्रिगर्त देश को राजा सुशर्मा शल्य सिंधुदेश को राजा जः
यद्रिथ वाल्हीक इनन ने जे आदि ले कें जे शस्त्र जाति तिनने चलाए सफल जिनकी महिमा एसे जे अस्त्र ते मेरे न लगत भए जैसें
जो से प्रहलाद के जे अस्त्र ते प्रहलाद के न लगत भए १६ आत्मा कूं देनवारे जे इश्वर के चरणारविंद कूं मोक्ष के लीये ऐसे श्रेष्ठ ले जे भज
न करें ता श्रीकृष्ण को कुबुद्धि जो मैं ताने सारथी कीये ताकरी घोडा जाके भूमि मे स्थित रथ सो जो मैं ताहि श्रीकृष्ण के प्रभाव करी तैं

यो भीष्मकर्णगुरुशल्यचमूष्वदभ्रराजन्यवर्यरथमंडलमंडितासु अग्रेचरो मम विभो रथयूथपानामायुर्मनां॰
सि च दृशा सह ओज आर्छत् १५ यद्दोःषु मां प्रणिहितं गुरुभीष्मकर्णनप्तृत्रिगर्तशल्यसैंधवबाह्लिकाद्यैः १६ अ
स्त्राण्यमोघमहिमानि निरूपितानि नोपस्पृशुर्नृहरिदासमिवासुराणि सौत्ये वृतः कुमतिनात्मद ईश्वरो मे यत्पा
दपद्ममभवाय भजंति भव्या १७ संश्रांतरन्यदनुभावनिरस्तचिताः नर्माण्युदाररुचिरस्मितशोभितानि हेऽर्जुन
सखे कुरुनंदनेति संजल्पितानि नरदेव हृदिस्पृशानि १८ स्मर्तुर्लुठंति हृदयं मम माधवस्य शय्यासनाटनवि
कत्थनभोजनादि ष्वैक्याद्वयस्य ऋतवानिति विप्रलब्धः सख्युः सखेव पितृवत्तनयस्य सर्वं १९ २१

निरस्त है चित्त जिनके एसे जे वैरी नहीं प्रहार करत भये १७ हे नरन के देव गंभीर सुंदर जो मुसिक्यानि ताकरिके सोभायमानः
एसे जे परिहास के वचन कौन से हे पार्थ हे अर्जुन हे सखे हे कुरुनंदन एसे जे कहे और मनोज्ञ एसे जे श्रीकृष्ण के वचन तें
स्मरन करत जो मैं ताके हृदय कूं लोटपोट करे १८ सज्या आसन इन में डोलवे में भोजन में गुणन की बडाई में मैंने हे मि
त्र तुम बडे सांचे हो ऐसें मैंने तिरस्कार कीयो परि सो श्रीकृष्ण अपनी महिमा करिकें कुबुद्धि जो मैं ताके सब अपराध कूं सहा
र लेत भये जैसे जे से सखा के अपराध कूं सखा जैसे सहार लेत हैं और पुत्रन के अपराध कूं पिता जैसे सहार लेत है १९

हे नरन के इंद्र पुरुषन में उत्तम मेरो सखा प्यारो सुहृद पुरुषन ते उत्तम ऐसो जो श्रीकृष्ण ता करिके रहित मैं होत भयो या
ही ते हृदय कूं रिक्त हे राजन् श्रीकृष्ण की जो स्त्री ते रखवारो सो इन कुटुंब नाहि रक्षा करत आवे तें सो मैं नीच जे गोपनि ने जैसे स्त्रीन कूं
जीत लीयो है ने से ही मो कूं जीत लीयो २० सो यह मेरो धनुष है सोई रथ हैं ते ई घोडा हैं सोई मैं रथी हूं जिनने राजा मो कूं नवे हैं सो वत एक छीन
ही में श्रीकृष्ण विना असमर्थ होत भयो जैसे राख में होम कीयो वृथा ही जाए छल सों द्रव्य करवारे जे से कुछ द्रव्य मिली सो कछु काम की नहीं
उखर भूमि में बोयो बीज सो उपजे नहीं २१ हे राजन् द्वारिका में एछे जे तुम पूछे सुहृद ते ब्राह्मण शाप करिकें मोहित भये इन में चारि पांच ते
वाकी रहे हैं २२ वारुणी मदिरा पीके मद करके व्याकुल है चित जिनके आपुस में नहीं पहचानत सो परस्पर रटे रेन कूं लाठ मेले के परस्पर

सेरे महामहित याकु मनेरधर्मेन्र पेनद्र रहितः पुरुषोत्तमेन सख्या प्रियेण सुहृदा हृदयेन शून्यः अध्वन्युरु
क्रमपरिग्रहमंगरक्षन् १९ गोपैरसद्भिरबलेव विनिर्जितोस्मि २१ तद्वै धनुस्त इषवः स रथो हयास्ते सोऽहं र
थी नृपतयो यत आनमंति सर्वं क्षणेन तदभूदसदीशरिक्तं २२ भस्मन्हुतं कुहकराद्धमिवोप्तमूष्यां राजंस्त्व
यानुपृष्टानां सुहृदां नः सुहृत्पुरे विप्रशापविमूढानां निघ्नतां मुष्टिभिर्मिथः २३ वारुणीं मदिरां पीत्वा मदो
न्मथितचेतसां अजानतामिवान्योन्यं चतुःपंचावशेषिताः २४ प्रायेणैतद्भगवत ईश्वरस्य विचेष्टितं मि
थो निघ्नंति भूतानि भावयंति च यन्मिथः २५ एवं बलिष्ठैर्यदुभिर्महद्भिरितरान्विभुः यदून्यदुभिरन्योन्यं
भूभारान्संजहारह २६

मारत भए २३ वसुधा सो जो भगवान् इश्वर ताकी ही यह चेष्टा हैं वही परस्पर भूतन को भलन करिके मारे हैं और पालन
करे हैं २६ जैसे जल में वडे वडे जे मच्छ हैं ते छोटी छोटी मछरीन कूं खाय जावें एसे ही राजा बली ते दुर्बलन कूं मारे हैं और ते बली
न कूं उनते जो बली है सो मारे हैं एसे जे बली पांडव तिन करिके दुर्योधन जरासंध आदि जिन ने मारके यादवन करके और रा
जा ते तिनै मारके और यादवन कूं यादवन करिके ही परस्पर नाश करिके भगवान ने पृथ्वी के भार उतार लेते भए हे २६
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण श्रीमन्नारायण नारायण नारायण श्रीकृष्णाय वासुदेवाय नमस्ते वन माने मः

देशकालके उचित जो अर्थ ताकरिकै युक्त मनकी पीडाके नाश करनवारे ऐसे जे गोविंदके वचन तिनें स्मरन करत जो मैं ताके चित्तकूं हरेंहें २७ ऐसे जे श्रीकृष्णके चरणारविंदको स्मरन करें एसो जो अर्जुन ताकी जो मति सो अत्यंत करिकै निर्मल एसी होत भई २८ वसुदेवके बेटा जो श्रीकृष्ण तिनके चरणारविंद तिनको ध्यान ताकरिकै बढ्यौ है वेग जाको एसी जो भक्ति ताकरिके दूर कीयेहैं सब कामादिक जाने ऐसी है बुद्धि जाकी ऐसो अर्जुन होत भयो है २९ भगवान्‌ने संग्रामके मध्यमें गायो जो ज्ञान सो कालकरिकै कर्मकरकै तमकरकै रोक्यो तोताहि समर्थ जो अर्जुन सो फेर प्राप्त होत भयो ३० मैं ब्रह्मरूप हों यासंपत्तिकरिके ज्ञानकरिकै लीन भ

देशकालार्थयुक्तानि हृत्तापोपशमानि च हरंति स्मरतश्चित्तं गोविंदाभिहितानि मे २७ सूत उवाच एवं चिंतयतो जिष्णोः कृष्णपादसरोरुहं सौहार्देनातिगाढेन शांतासीद्विमला मतिः २८ वासुदेवांघ्र्यनुध्यानपरिबृंहितरंहसा भक्त्या निर्मथिताशेषकषायधिषणोऽर्जुनः २९ गीतं भगवता ज्ञानं यत्तत्संग्राममूर्द्धनि कालकर्मतमोरुद्धं पुनरध्यगमत्प्रभुः ३० विशोको ब्रह्मसंपत्त्या संछिन्नद्वैतसंशयः लीनप्रकृतिनैर्गुण्यादलिंगत्वादसंभवः ३१ निशम्य भगवन्मार्गं संस्थां यदुकुलस्य च स्वःपथाय मतिं चक्रे निभृतात्मा युधिष्ठिरः ३२ पृथाप्यनुश्रुत्य धनंजयोदितं नाशं यदूनां भगवद्गतिं च तां एकांतभक्त्या भगवत्यधोक्षजे निवेशितात्मोपरराम संसृतेः ३३

इते विद्या जाकी ओर निर्गुण है याते ओर लिंगदेहाकरिके एकांत भक्तिकरिकै भगवानमें चित्त लगाइकै हरिकी गतकूं प्राप्त होत भई है ३२ जादव रूपकरिकै पृथ्वीके भार हैं ताहि दूर करत भए जैसे कांटेकरिके कांटे कूं दूर करें सो जो तनु सो त्याग करत भए यादवन तु ओर भार तनु ये दोउ ईश्वरके समान हैं ३२ जैसें भगवान मत्स्यादिक जे रूप तिनें धारण करेंहैं ओर त्याग करैहैं जैसे जैसे नट है सो रूप धारन करैहैं अंतर तिन करेंहैं ऐसे ही जा रूपकरके पृथ्वीको भार नासकी यो ताही देहको अंतर्हित करत भए ३३

यासमें भगवान मुकुंद अपने सरीरकरिके या पृथ्वीको त्याग करत भए ता समें अज्ञानी नकूं अधर्मको कारन ऐसो कलियुग सो वर्तमान होत भयो कैसे भगवान हैं सुनिवे कूं जोग्य है श्रेष्ठ कथा जिनकी ३६ युधिष्ठिर हैं सो पुरमें देशमें घरमें देहमें कलियुगको फेलवो ताहि देखिकै जाइवेकूं मन करत भए कैसो कलियुग है लोभ झूठ बोलिवो कुटिलता हिंसा इनते आदिलैकै अधर्मको जोल समूह सो है जाके विषें ३७ चक्रवर्ती जो युधिष्ठिर सो अपने गुणन करि समान ना ऐसो जो अपनो नाती परिक्षत ताहि हस्तिनापुरमें समुद्र पर्यंत पृथ्वीको पति करिकै अभिषेक करत भए ३८ ताके

यदा मुकुंदो भगवान् मां महीं जहौ स्वतन्वा श्रवणीयसत्कथः तदाहरेवाप्रतिबुद्धचेतसामधर्महेतुः कलिरन्ववर्तत ३६ युधिष्ठिरस्तत्परिसर्पणं बुधः पुरे च राष्ट्रे च गृहे तथात्मनि विभाव्य लोभानृतजिह्महिंसनाद्यधर्मचक्रं गमनाय पर्यधात् ३७ स्वराट् पौत्रं विनयिनमात्मनः सुसमं गुणैः तोयनीव्याः पतिं भूमेरभ्यषिंचद्गजाह्वये ३८ मथुरायां तथा वज्रं शूरसेनपतिं ततः प्राजापत्यां निरूप्येष्टिमग्नीनपिबदीश्वरः ३९ विसृज्य तत्र तत्सर्वं दुकूलवलयादिकं निर्ममो निरहंकारः संछिन्नाशेषबंधनः ४० वाचं जुहाव मनसि तत्प्राण इतरे च तं मृत्यावपानं सोत्सर्गं तं पंचत्वे ह्यजोहवीत् ४१

अनंतर मथुरामें तैसे ही वज्रनाम है ताहि शूरसेन देशके मंडलको पति करत भए और समर्थ जो युधिष्ठिर सो प्रजापति जो इष्टि ताहि करिकै अग्नि हैं तिनें पीलेत भए ३९ ता घरमें वस्त्र गहनों पालो सब छोडिकैं नहीं है ममता जिनकें नहीं है अहंकार जिनकें कटिगए हैं सब बंधन जिनके ऐसे होत भए ४० वाणी है ताहि मनमें होम करत भए मनकूं प्राणमें होम करत भए प्राणकूं अपानमें मलत्याग सहित मृत्युमें होम करत भए और मृत्युकूं पंच

और पंचभूतनकूं तिउन गुणन में होम करिकें तिउन गुणनकूं अविद्या में होम करत भए और अविद्या हैं ताहि जीव में होम करत भए और जीवकूं निर्विकार जो ब्रह्म ता में होम करत भए ४२ चीर हैं वस्त्र जिनके नहीं है आहार जिनकें मौन जिनें छूटे हैं केश जिनके ऐसे जे युधिष्ठिर सो जड उन्मत्त पिशाच की सी नांई अपनो रूप तें ताहि दिखावत भए ४३ काहूकी प्रतिक्षा न करत भए और बहरे से महाबिलालन सुनत भए महात्मानने पहिलें सेवन कीनी ऐसी जो उत्तर दिशा ताहि प्रवेश करत भए ४४ हृदे में परब्रह्मकों ध्यान करत भए जा दिशा कूं गये पीछे फेर याहि नहीं आवे हैं जा परमेश्वरकों प्राप्त होय हैं निश्चें जि

त्रित्वे हुत्वा च पंचत्वं तच्चैकत्वे अजुहोन्मुनिः सर्वात्मान्यजुहविद्ब्रह्मण्यात्मानमव्यये ४२ चीरवासो निराहारो बद्धवाङ्मुक्तमूर्द्धजः दर्शयन्नात्मनो रूपं जडोन्मत्तपिशाचवत् ४३ अनपेक्षमाणो निरगादशृण्वन्बधिरो यथा उदीचीं प्रविवेशाशां गतपूर्वां महात्मभिः ४४ हृदि ब्रह्म परं ध्यायन्नावर्तेत यतो गतः सर्वे तमनुनिर्जग्मुर्भ्रातरः कृतनिश्चयाः ४५ कलिनाधर्ममित्रेण दृष्ट्वा स्पृष्टाः प्रजा भुवि ते साधुकृतसर्वार्था ज्ञात्वात्यंतिकमात्मनः ४५ मनसा धारयामासुर्वैकुंठचरणांबुजं तद्ध्यानोद्रिक्तया भक्त्या विशुद्धधिषणापरे ४६ तस्मिन्नारायणपदे एकान्तमतयो गतिं अवापुर्दुरवापां ते असद्भिर्विषयात्मभिः ४७ विधूतकल्मषाः स्थानं विरजेनात्मनैव हि ४८

ननें ऐसे जे सगरे भैया ते राजा के पीछे जात भए ४५ अधर्म है मित्र जाकों ऐसो जो कलियुग ताने स्पर्श करि ऐसी जे प्रजा तिनें देखकैं जे नहीं साधु किये हैं धर्मादिक जिननें ऐसे जे अर्जुनादिक ते आपकों वर्णयोग्य जानि करिकें ४६ मन करिकें भगवान्‌कों जो चरणारविंद ताहि धारण करत भए और भगवान्‌के ध्यान करिकें बढ़ई जो भक्ति ता करिकें नष्ट हुइ बुद्धि जिनकी ४७ दूर भये हैं पाप जाके तिनकों स्थान ऐसो जो भगवत चरणारविंद तामें लगी है मन जिनकी ते निर्मल जो आत्मा ता करिकें ही विषयन में रही है आत्मा जिनकी ऐसे जे असाधु हैं तिन्हें न मिलें ऐसी जो गति ताय प्राप्त होत भए ४८

विदुर है सोउ प्रभास में श्रीकृष्णके आवेश करिकें श्रीकृष्ण ही में चित्त लगाइकें देह छोडिकें तास मैले वेके आराधि पितरनके संग अपने जो स्थान यमलोक ताहि जात भयो ४९ द्रौपदी है सो तास में पतनकी अनपेक्षिता है ताहि जानकें भगवान वासुदेव तिनमें एकांत मन लगाइकें श्रीकृष्णकी जो गति ताहि प्राप्त भई ५० जो सरधा करिकें भगवत्प्रिय पांडुनके यातिनको जो संप्रयान मंगलकों जो स्थान अति सें करिकें ताहि सुनैगो सो हरिके विषे भक्ति कें ताहि पाइकें सिद्धि हैं ताहि प्राप्त होइगो ५१ इति श्रीभागवते प्रथम· पंचदशोध्यायः १५ सो रहत अध्याय मैं कलियुग करि दुःख देख्यो ऐसे जे पृथ्वी और धर्म इनकों जो संवाद ताकें

विदुरोपि परित्यज्य प्रभासे देहमात्मवान् कृष्णावेशेन तच्चित्तः पितृभिः स्वक्षयं ययौ ४९ द्रौपदी च तथाज्ञाय पतीनामनपेक्षतां ५० वासुदेवे भगवति ह्येकांतमतिराप तं यः श्रद्धयैतद्भगवत्प्रियाणां पांडोः सुतानामिति संप्रयाणं शृणोत्यलं स्वस्त्ययनं पवित्रं लब्ध्वा हरौ भक्तिमुपैति सिद्धिं ५१ इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे पांडवप्रस्थानं नाम पंचदशोध्यायः १५ सूत उवाच ततः परीक्षिद्द्विजवर्यशिक्षया महीं महाभागवतः शशास ह यथा हि सूत्यामभिजातकोविदाः समादिशन्विप्र महद्गुणस्तथा १ स उत्तरस्य तनयामुपयेम इरावतीं जनमेजयादींश्चतुरस्तस्यामुत्पादयत्सुतान् २ आजहाराश्वमेधांस्त्रीन् गंगायां भूरिदक्षिणान् शारद्वतं गुरुं कृत्वा देवा यत्राक्षिगोचराः ३

राजा परीक्षित मापित होत भये यह वर्णन करिये है १ ताके अनंतर महाभागवत जो परीक्षित सो ब्राह्मणन में श्रेष्ठ तिनकी सीक्षा करिकें पृथ्वी है ताहि पालन करत भए है सो न कैसें जन्म समे में जातकर्म में चतुर ऐसे जे ब्राह्मण ते जे जे गुण कहत भये ते ते परीक्षित में होत भए १ सो परीक्षित उत्तरकी बेटी इरावती ताहि व्याहत भए तामें जन्मेजय ते आदि लेकें चार पुत्र तिनें उपजावत भये २ गंगा के तीर बहुत है दक्षिणा जिनमें ऐसे जे तीन अश्वमेध जग्य तिनें करत भए जिन जग्यन में देवता प्रत्यक्ष आवत भये कृपाचार्य जकूं गुरु कीये ३ श्रीकृष्णायनमः॥

विरजो परीक्षत सो कारूस मैं दिग विजै मैं बल करिके राजा को चिन्ह धारन करें सूद्र तैं पांउ करि कें गाई बेल जिनै मारे हैं एसो जो क
लियुग ता हि निग्रह करत भयो ४ सौनक पूछे हैं राजा तैं सो कौन कारन मे दिगविजै मैं कलियुग ता हि नीग्रह करत भयो राजा
को चिन्ह धारन करें हैं ऐसो यह बडो निंदित तें जो गाय कूं पाय करि कें मारे हैं ५ हे महाभाग जो कृस्न कथा कूं आश्रय होइ तो ॥
कहो अथवा श्रीकृस्न के चरनारविंद को जो मकरंद ताके स्वाद करिन वारे एसे जे साधु तिनकी कथा कूं आश्रय होइ तो कहो अथ
वा और असाधुन के जे आलाप तिन करि कैं कहा है जिन करि कैं आयु को ह्यानाश होइ है वो रि है आयु जिनकी मरण करि कें पुरुषो

निजग्राहौजसा वीरः कलिं दिग्वीजये क्वचित् नृपलिंगधरं सूद्रं घ्नंतं गोमिथुनं पदा ४ सौनक उवाचः कस्य हे
तोर निजग्राह कलिं दिग्विजये नृपः नृदेवचिन्हधृक्सूद्र कोसौ गांयः पदाहनत् ५ तत्कथ्यतां महाभाग य
दि कृस्नकथाश्रयं अथवास्य पदांभोज मकरंद लिहां सतां ६ किमन्यैरसदालापैरायुषो यदसद्व्ययः क्षुद्रायुषां
नृणामंग मर्त्यानामृतमिछतां ७ इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि न कश्चिन्म्रियते ताव द्यावदास्त इहां
तकः ८ एतदर्थं हि भगवानाहूत परमर्षिभिः अहो नृलोके पीयेत हरिलीलामृतं वचः ९ मंदस्य मंदप्रज्ञस्य व
यो मंदायुषश्च वै निद्रया ह्रियते नक्तं दिवा च व्यर्थकर्मभिः १० श्रीकृस्नाय वासुदेवाय नारायण वासुदेव कृजैः

रमो मसकी इछा करे हैं तिनके लीये जा जग मैं पसु हिंसा के लीये भगवान मृत्यु तैं सो बुलावे यो है ७ जब तांई यहां रहे वैठो
है तब तांई कोन मरे सो अहो या मनुष्य लोक मैं हरलीला ही अमृत रो है जाके विषे ये सो जो वचन सो पान करी हरे ॥८
याही के अर्थ ऋषिन ने मृत्यु तें सो बुलायो है ८ आलस्य करि कें युक्त मंद है बुद्धि जाकी और थोरी है थोरी आयु वलि याकी
एसो जो पुरुष जन ताकी जो आयु सो रात मैं निद्रा करि कें हरिये है और दिन के समे मे ह्यथा कर्मन करि कें हरिये है ९॥१०

सन जी कहे हैं जा सम मैं कुरजांगल देस मैं बसत जो परीक्षत सो अपनी सेना करि कैं पाल्यो जो देस ता मे कलियुग ता हि सुनत भयो तासे फेर
शीव्रु सुन प्यारी लगी एसी जो वार्ता ना हि सुन करि कैं युद्ध मे वीर ऐसो परीक्षत सो धनुष कूं हाथ लै धनुष ले ना हि ग्रहन करत भयो १०
सुंदर स्याम कर्न वारे घोडा हैं जा मैं सिंघ की है ध्वजा जा मैं ऐसे जो रथ ता मैं बैठ के घोडा हाथी प्यादे ई न करि कें युक्त ऐसी अपनी सेना ताक
रके सहन दिग्विजै करवे के लीये निकसत भयो ११ भद्राश्व केतु माल भारथ उत्तरकुरु वर्ष किंपुरषर इन जीत करि कें अपनी भेट लेत भये १२
तहां तहां कृस्न महात्मा को जतावन वारो अपने बडे बडे महात्मा तिन को यश ताकों जो गायो ता यह सुनत भयो १३ अश्वत्थामा के अस्त्र ते जो तेर

सूत उवाचः यदा परीक्षत्कुरुजांगलेवसत्कलिं प्रविष्टं निजचक्रवर्तिते निशम्य वार्तामनतिप्रीयां ततः सरास
नं संयुग सोंडिरादडे १० स्वलंकृतं स्याम तुरंग जोयतं रथं मृगेंद्रध्वज माश्रितः पुरात् वृतो रथाश्व द्विपपत्तियुक्तया स्व सेन
या दिग्वीजयाय निर्गता ११ भद्राश्वं केतुमालं च भारतं चोत्तरान् कुरान् किंपुरुषादीनि वर्षाणि विजित्य जगृहे ब
लिं १२ तत्र तत्रोपशृण्वानः स्वपूर्वेषां महात्मनां प्रगीयमानं च यशः कृस्नमाहात्म्य सूचकं १३ आत्मानं च
परित्रातमश्वत्थाम्नोस्त्रतेजसः स्नेहं च वृस्नि पार्थानां तेषां भक्तिं च केसवे १४ तेभ्य परमसंतुष्टः प्रीत्युज्जृंभि
त लोचनः महाधनानि वासांसि ददौ हारान् महामना १५ सारथ्य पारिषद सेवन सख्य दूत्य वीरासनानुगमन स्त
वन प्रणामान् स्निग्धेषु पांडुषु जगत्प्रणतिं च विस्नोर्भक्तिं करोति नृपतिश्चरणारविंदे १६ श्रीकृ:

रक्षा कीयो ऐसो जो आत्मा ताई सुनत भए और यादवन को और पांडवन को और तिन श्रीकृस्न मे भक्ति ता हि सुनत भए १४॥
उत्साह करि कें मन जाको प्रीति करि कें प्रफुल्लित है नेत्र जिनके परम आदि ऐसो जो परीक्षत सो यश के गावन वारे तिन के अर्थ ॥
बहुत जे धनु वस्त्र तिन्हे देत भए १५ स्नेह करि कें युक्त एसे जे पांडव तिनने श्रीकृस्न को सारथ्य सभापति सेवन सखि मे ख
ड्गला थमैं लेकर कैं रात न रिक्षा करी सब पीछे हुन के पीछे संग चलनो स्तुती प्रणाम और जगत कीन मता इनेसुनि करि
कें और राजा परीक्षत जो है सो श्रीकृस्न के चरणारविंद मैं भक्ति ते ना हि करत भए १६ श्रीकृस्नाय वासुदेवाय नमः॥

ऐसे अपने वडेन को जो वृत्त ताई मे नित्य नित्य वर्तमान ऐसो जो परीक्षित तिनको पीछे एक आश्चर्य होत भयो सो मो ते सु
नो १७ एक पांउ वारे हे डोलै हैं ऐसो जो धर्म और गई है कांति जाकी और स्तन हू डारे हैं जैसे मरयो है पुत्र जाको ऐसी जो माता तैसे आं
सुन को डारे हैं ऐसी जो गाय को रूप धरे पृथ्वी तासु पूछत भयो १८ हे मंगल रूप ते रे देह कु ओरो उपते नेरी कांति गई हैं उखते
हो मुख जा पे ते ने रे भीतर जो दुख ताती दे खतु हे माता तेने गेहु रुग्य है जो वंधु ता हि सोच करे हैं १९ तिन पांउ कर के रहित एक पैर
उ जाके ऐसो जो मैं ता हि सोच करे है अथवा इंद्र है सो वर्षा नहि करे हैं या ते मजा न के सोच करे हैं २० हे पृथ्वी भर्तन करि के रहित रक्षा

तस्यैवं वर्तमानस्य पूर्वेषां वृत्तमन्वहं नातिदूरे किलाश्चर्य्यं यदासीत्तन्निबोध मे १७ धर्म्मः पदैकेन चरन्
विच्छायामुपलभ्य गां पृच्छति स्माश्रुवदनां विवत्सामिव मातरं १८ कच्चिद्भद्रेनामयमात्मनस्ते विच्छाया
सि म्लायतेषन्मुखेन: आलक्षये भवतीमन्तराधिं दूरे बंधुं शोचसि कंचनांब १९ पादैर्न्यूनं शोचसि मैक
पादमात्मानं वा वृषलैर्भोक्ष्यमाणं आहो सुरादीन्हृतयज्ञभागान् प्रजा उत स्विन्मघवत्यवर्षति २० अ
रक्ष्यमाणाः स्त्रिय उर्व्वि बालान् शोचस्यथो पुरुषादैरिवार्त्तान् वाचं देवीं ब्रह्मकुले कुकर्म्मण्यब्रह्मण्ये
राजकुले कुलाग्र्यान् २१ किं क्षत्रबंधून्कलिनोपसृष्टान् राष्ट्राणि वा तैरवरोपितानि इतस्ततो वाशप
नपाननवासस्नानव्यवायोन्मुखजीवलोकं यद्वाथ ते भूरि भरावतार २२

रहि ऐसी जो स्त्री तिन ने सोच करे हैं राक्षसन की सी बाई तिन दई ऐसे पिता माता तिन ने रक्षा कीये और दुःख दीये ऐसे जे बालक
तिन ने सोच करे हैं कुकर्मी जो ब्राह्मन कुल ता मे स्थित ऐसी जो सरस्वती ताहि सोच करे हैं अथवा अन्य जो राजा तिन को ऽ
कुल ता मे चोरी करके करे हैं ऐसे जे उत्तम ब्राह्मण तिने सोच करे हैं २१ कलियुग करके व्याप्त ऐसे जे क्षत्री तिन ने उधा
रक्षा देये ऐसे जे देश तिन ने रसोच करे हैं अथवा खान पान और स्नान स्त्रीन को संग इन मे सन्मुख ऐसे जो जीव लोक
ता के अर्थ सोच करे है २२ श्रीकृष्णाय वासुदेवाय देवकीनंदनाय च: श्रीरामचंद्राय नस्तेन मोनम: श्रीहरि:

अथवा ते भार ते मथ्वी ने ते वडो भार ता हि दूर करि वे के अर्थ कीयो है अवतार जाने ऐसे अंतर रहित होय गये जो हरि तिन के जे कृ ति
मो क्ष के देन वारे तिन ने सोच करे हैं केसी ते भगवान ने त्याग करि है २३ हे वसुंधरे ते रे दुःख को जो कारण ता हि मेरे आगे कहो जा
दुःख करि के कृश भई है हे माता बली न को जो काल ता ने देव ता न के हि रस्यो ऐसो जो ते रो सौभाग्य सो हर लीयो कहो २४ पृथ्वी कहे
है हे धर्म तुम सव जानो हो जो तुम मो सूं पूछो हो लोकन को सुख देन वारो ऐसे जे चार पाउ तिन करि के वर्ते हे: २५ सत्य शौच दया त
ने क्षांति संतोष आर्जव समदम तप शाम्य तितिक्षा उपरत शास्त्रविचार २६ ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य शूरता तेज वल स्मरन

यद्वांवतेभूरभरावतारकृतावतारस्य हरेर्धरित्रि अंतर्हितस्य स्मरती विसृष्टा कर्म्माणि निर्वाणविलंबितानि २३
इदं ममाचक्ष्व तवाधिमूलं वसुंधरे येन विकर्शितासि कालेन वा ते बलिनां बलीयसा सुरार्चितं किं हृतमंब सौभगं
२४ धरोवाच. भगवान् देवन त्सर्वं यन्मां धर्मानुपृच्छसि चतुर्भिर्वर्तसे येन पादैर्लोकसुखावहै २५ सत्यं
शौचं दया क्षान्तिस्त्यागः संतोष आर्जवं शमो दमस्तपः साम्यं तितिक्षोपरतिः श्रुतं २६ ज्ञानं विरक्तिरैश्वर्यं शौर्यं ते
जो बलं स्मृतिः स्वातंत्र्यं कौशलं कांति: सौभाग्यं मार्दवं क्षमा २७ प्रागल्भ्यं प्रश्रय: शीलं सह ओजो बलं भग: गां
भीर्यं स्थैर्यमास्तिक्यं कीर्त्तिर्मानोनहंकृति: २८ इमे चान्ये च भगवान्नित्या यत्र महागुणाः प्रार्थ्या महत्त्वमिच्छद्भि
र्नवियंति स्म कर्हिचित् २९ तेनाहं गुणपात्रेण श्रीनिवासेन सांप्रतं शोचामि रहितं लोकं पाप्मना कलिनेक्षि

स्वतंत्र कौशल्य कांति सौभाग्य धीरज कोमलचित्त २७ प्रागल्भ्य नम्रता शील सत ओज वल भोग गंभीर अच
लता श्रद्धा कीर्ति एजल अहंकार नहीं २८ और ते भगवान् या ब्रह्म मैं सरज वडे गुड ते जे महत्व की इच्छा करे हैं तिन
करि के प्रार्थना करे हैं ये गुण श्री ब्रह्म मैं कभू जाय नहीं २९ सो जो गुणन को पात्र लक्ष्मी को निवास ऐसो जो भगवान्
ता करि के रहित पापी कलियुग ने देख्यो ऐसो जो यह लोक है या के अर्थ मैं निरन्तर सोच करकरवे के लीये यो अपहृत नि श्रीहरि ३०

औरपनो सोच करतहूं देवतान मैं उत्तम जो तुम तिनको सोच करतहूं देवता पितर साधु सब वरणाश्रम इनको सोच करतहूं ३१
ब्रह्मादिक देवता जा लक्ष्मी की कृपाकटाक्ष नाके लीये बहुत काल तप करत भए सो लक्ष्मी उत्तम मनै आश्रय कीनी सो अपनो निवास जो कमलन को वन ताहि छोडि करके जिनको चरणारविंद को जो लावण्य ताहि अनुरक्त होत संते सेवन करत भई ३ कमल वज्र अंकुश ध्वजा इन करे चिन्ह जिनमें ऐसे जे सोभायमान भगवान के चरण तिन करिके अलंकृत ते अंग जाके ऐसी जो मैं सो भगवानने तपानिहूं नाहि पाई के तिनलोकन को अतिक्रमण करवै सो तिनके होत भई पीछे तिनके

आत्मानं चानुशोचामि भवंतं चामरोत्तमं देवान्पितॄनृषीन्साधून्सर्वान्वर्णांस्तथाश्रमान् ३२ ब्रह्मादयो बहुतिथं यदपांगमोक्षकामास्तपः समचरन्भगवत्प्रपन्ना साश्रीःस्ववासमरविंदवनं विहाय यत्पाद सौभगमलं भजतेनुरक्ता ३३ तस्याहमब्जकुलिशांकुशकेतुकेतैः श्रीमत्पदैर्भगवतः समलंकृतांगीः त्रीनत्यरोचमुपलभ्य ततो विभूतिं लोकान्स मां व्यसृजदुत्स्मयतीं तदंते ३४ यो वै ममातिभरमासुरवंशराज्ञां अक्षौहिणीशतमपानुददात्मतंत्रः त्वां दुःस्थमूनपदमात्मनि पौरुषेण संपादयन्यदुषु रम्यमबिभ्रदंगं ३५ का वा सहेत विरहं पुरुषोत्तमस्य प्रेमावलोकरुचिरस्मितवल्गुजल्पैः स्थैर्यं समानमहरन्मधुमानिनीनां रोमोत्सवो मम यदंघ्रिविटंकितायाः ३६ श्रीकृष्णाय वासुदेवाय देवकीनंदनाय च नमस्ते नमो नमः

अंत भये संते गर्व करत जो मैं ताहि भगवान छोडि जात भये ३३ असुरन के वंश ऐसे जे राजा तिनकी जे सेना तिनको हीनी सो ई जो मेरो भार ताहि दूर करत भए और स्वतंत्र जो श्रीकृष्ण सो दुःख में स्थित टूटगये हैं पाय जाके ऐसे जो तुम ताहि अपने पराक्रम करिके आपु में स्थापन करवे के लीये यादवन में सुंदर जो अंग ताहि धारन करत भए ३४ पुरुषन में उत्तम ऐसे जे श्रीकृष्ण तिनके विरह कूं कौन सहै प्रेम पूर्वक जो चितवन रुचिर मुसक्यानि सुंदर वचन इन करि केरि मैं सहित स्थिरतें ताहि हरत भए जिनके चरणारविंद करके अलंकृत ऐसी जो मैं ताके रोमांच होत भए ३५ ३५ ॥

ऐसे पृथ्वी और धर्म इनकूं वरतनसंमें परीक्षत नाम राजा पूर्ववाहनी जो सरस्वती ताहि प्राप्त होत भए ३६ इती श्रीभागवते प्रथमस्कंधे षोडशोध्यायः १६ सत्रहकी अध्याय में ऐसो पराक्रम जो राजा ताके विराग पक्ष हिवे के लीये राजा करिके कलियुग में जो निग्रह सो वरणन करियेहै १ महाराजा परीक्षत ने सो अनाथ की सीनाई दंड जाके हाथ में राजा को चिन्ह धरै शूद्र ऐसो कलियुग ताहि देखत भयो १ कमलतंतु की सीनाई स्वेत डरके मारे मूतन जारै एक पाउकरिके कांपै एक ताहि मारै ऐसो जो बैल ताहि देखत भयो २ धर्म की एरन करनवारी दीन संतुले पाउ करके मारी बछरा जाके नहीं आंसु मुख में जाके बहे हैं स्रवती है घासचरि

ततो रेवं कथयतो पृथिवीधर्मयोस्तदा परिक्षन्नाम राजर्षीप्राप्तप्राचीसरस्वती ३६ इती श्रीभागवते प्रथमस्कंधे षोडशोध्यायः १६ सूत उवाच तत्र गोमिथुनं राजा हन्यमानमनाथवत् दंडहस्तं च वृषलं ददृशे नृपलांछनं १ वृषं मृणालधवलं मेहंतमिव बिभ्यतं वेपमानं पदैकेन सीदंतं शूद्रपीडनं २ गां च धर्मदुघां दीनां भृशं शूद्रपदाहतां विवत्सां साश्रुवदनां क्षामां यवसमिछती ३ पप्रछ रथमारूढं कार्तस्वरपरिछदं मेघगंभीरया वाचा समारोपितकार्मुकः ४ कस्त्वं मच्छरणे लोके बलाद्धंस्यबलान्बलि नरदेवोसि वेषेण नटवत्कर्मणाद्विजः ५ यस्त्वं कृष्णे गते दूरे सह गांडीवधन्वना शोच्योस्यशोच्यान्रहसि प्रहरन्वधमर्हसि ६ त्वं वा मृणालधवलः पादैर्न्यूनः पदा चरन् वृषरूपेण किं कश्चिद्देवो नः परिखेदयः ७ श्रीकृष्णाय नमो नमः ७ ॥

दे की रक्षा करै है ऐसी जो गाय ताहि देखत भयो ३ सो नेको रेसा जो जाको ऐसो जो रथ तामें बैठो ऐसो जो राजा सो धनुष चढाइ कें मेघ सी गंभीर ऐसी जो वाणी ता करिके पूछत भये ४ तू कोन है मेरे सरण जो लोक तामें बली जो तू सो बलते निर्बल ऐसे नर की सीनाई स्वांग ते तू राजा सो तेरा कर्म करवे से शूद्र है ५ तू कौन है अर्जुन के संग लेके श्रीकृष्ण कहूं दूर गए हैं संते एकांत में सोच करिवे को जोग्य जो लोक तिनकूं मारै है पाते तू वध कूं जोग्य है और सोच करिवे कूं जोग्य है ६ कमलतंतु की सीनाई स्वेत पाउ न करिके हीन एक पाउ करिके डोलिवे वाले बैल रूप करके कोई देवता तो कहा तुम को दुःख देते हो ७ श्रीहरिः ७

ना॰ प्र॰
५०

कौरवनकेजे दंड दैत मनिनकी भुजादंडकरिकें रक्षाकीयो एसोजो भजनलनामैं सो विना प्रेरप्राणीनके प्रांत नहीं परैं ८ हेसु
रनी केपुत्र सोचमतिकरो तेरो बालक मेरो भय सोजा तरहें औरहेमाता तू रोवे मत तेरो भलोहोईगो दुष्टनकूं दंडदेनवारो
मैं जीवतुं ९ हेसाध्वी जाकेदेशमैं सगरी प्रजा असाधुनकरिकैं दुःखहीजीयेहैं ताघुरवकीकीर्ति आयु औश्वर्य गति परलोक
होजातहैं १० दुखीयानकेदुःखको दूरकरनवारो यही राजानकोपरमधर्म है याकारणतें भजनके प्रेरीमहा असाधु औसेजो
दारनायमारकैगो ११ हेसुरभीके पुत्र चारिपांउके जेतुम तातें तिनपांउकोतनने काटडारे औसमस्की आज्ञामैं वर्तें औसीजेतुम

नजानकौरवेंद्राणां दोर्दंडपरिरंभिते भूतलेनुपतंत्यस्मिन्विनाते प्राणिनाशुचः ८ मासौरवैं मेमनुश्च चौक्षे
जुतेवृषलाद्भयं मारोदीरंवभद्रंते खलानांमपिसास्तरी ९ यस्यराष्ट्रेप्रजासर्वाहिंस्यन्तेसाध्व्यासाधुभि नस्य
मत्तस्यनस्यन्तिकीर्तिरायुर्भगोगति १० एषराज्ञांपरोधर्मो ह्यार्तानामार्तिनिग्रहः अतएनंवधिस्यामिभूत
द्रोहमसत्तमं ११ कोवृश्चतवपादांस्त्रीसौरभेयचतुष्पदः माभूवंस्त्वादृशाराष्ट्रे राज्ञांकृष्णानुवर्तिनांम्
१२ आख्याहिवृषभद्रंवः साधूनांमकृतागसां आत्मवैरूप्यकर्तारंपार्थानांकीर्तिदूषणं १३ जानेनाघस्यघं
उद्यंजनमर्यतोस्यभवेद्भयं अनागस्स्विहभूतेषु यआगस्कृन्निरंकुशः १४ आहनिस्मिभुजंसाक्षा द
९ मर्त्यस्यापिसांगदं राज्ञोहिपरमोधर्मः स्वधर्मस्थानुपालनं सासतोन्यानपथापास्यामनापपद्युत्यथानिर

राजानिनकेदेशमैं नुमसारकोमतिहोरें १२ हेवैलतनमारोमनोहोउनकी कीपोहैं अपराधजिननैं औसेजेसाधुनिनकोओ
रमथाहैवेराजोरमतिनकी कीर्तिको दुःखनकरनो विरूपकरनवारोमाहिकहो १३ नहीहैपापजामैं औसोजोजनतामैं जोपाप
करें नाकूंसवठौरमोनेभयहैं असाधुनकोदंडदीयोनहीं साधुनकोभलोहोरैं १४ नहीहै पापजिनमैं औसेजेभूतजिनमैं जोअ
अपराधकरेहैं देवताहूं हैतोउकी बाजुसहितभुजाहैं नातिका टिकरकैं आउंगो सहीई १५ श्रीकृष्णायनमोनमः १५

अपनेस्वधर्ममैं स्थितताकोपालनकरनो औरजेउत्पथमैं चलेजिनकौसीख्याहेनौ यही राजाकोपरमधर्म है १६॥
धर्मकरैहैं तुमजैपांडवतोतिनकूं दुःखनकोभयदुःखकरैं एसोवचनकहनो जोअपरे जिनकेगुन गाननकरिकैं भगवान्
श्रीकृष्णदेव सारथी कीये १७ तातेंनिश्चेकरकेवीजहोई ताघुरवकोनहीं जानैं वेदुर्धनमैं उत्तमवादीनकेवाक्य भेदकरिकेमो
हितभएहैं १८ कोईभेदकूं वस्तुकीसीनाहीधारनकरैहैं जेकोईयोगीनेआत्माकूं आत्माहीसुषदुःखकोदेनवारोकहेहैं औरहे
नेदेवकोकहैहैं कोरीकर्मनकूं कहैहैं कोईस्वभावकूंकहेहैं १९ मनकूं अगोचरवचनकूं अगोचर एसोजोपरमेस्वरनानेरसव

धर्मउवाचः एतद्वःपांडवेयानां युक्तमार्ताभयंवचः येषांगुणगणैःकृष्णोदौत्यादौ भगवान्कृतः १६ नवयं
क्लेशबीजानि यतःस्युः पुरुषर्षभ पुरुषंतं विजानीमो वाक्यभेदविमोहिता १७ केचिद्विकल्पवसना आहुरा
त्मानमात्मना दैवमन्येपरेकर्म स्वभावमपरेप्रभुं १८ अप्रतर्क्यादनिर्देश्यादितिकेष्वपिनिश्चयः अत्रानुरू
पंराजर्षेविमृशस्वमनीषया १९ एवंधर्मेप्रवदतिससम्राट् द्विजसत्तमा समाहितेनमनसाविखेदःपर्यचष्ट
तं २० धर्मंब्रवीषिधर्मज्ञधर्मोसिवृषरूपधृक् यदधर्मकृतःस्थानंसूचकस्यापितद्भवेत् २१ अथवादे
वमायाया नूनंगतिरगोचराः वचसोमनसश्चापिभूतानामितिनिश्चयः २२ तपःशौचंदयासत्यमितिः
पादाःकृतेःकृता अधर्मेणत्रयोभग्नास्मयसंगमदेस्तव २३ श्रीकृष्णायनमस्तेनमोनमः॥ २३॥

होहैं औसैकिमनतें नमैं निश्चैहैं हेराजनमैं ऋषि रताजोवचनकूं अगोचर एसेजोपरमेस्वर। तातेंअनुरूपहोरसोअपनी
बुद्धकरकेंविचारकरो २० औसेधर्मकूं कहतसंतें गयोहैमोहजाको चक्रवर्तीराजा सोसावधानमनकरिकैंबोलतभए २
हेधर्मज्ञधर्महैतातिकातोहो यातेंवैलकोरूपधरें हैधर्मतो जोअधर्मकेकरनवारेकोस्थानहैसो जोपापीकोवकु ना
वनवारोनाकूंहोहें २१ अथवाभूतनकेमनकूं वचनकूं हरिकीजोमायाकीगति सोअगोचरहैं यहनिश्चैहैं:
श्रीगोपीनाथजी सदासहाई श्रीकृष्णायवासुदेवायनमः श्रीरामचंद्रायनमोनमः। श्रीहरिनारायणः:

नपुंसो च दयासत्य एन तीनों चारि पाउ कटे हैं धर्म के अंस सत्य संग औ मद इन करि कें तुम्हारे तीन पाउ टूटि गए २४ हे
धर्म या कलियुग में तुम्हारो एक सत्य पाउ रह्यो है याते तुम अपनो निर्वाह करो हो अव यह अधर्म रूप बडो कलियुग सो
झूंठ करि कें बढ्यो नास्तिनास करवे की इच्छा करे है २५ भगवान् के दुरवरी धरे भाव जाको ऐसी जो पृथ्वी सो भाग्यमान भगवा
न के चरननि के धरवे करि कें कीयो है सव ठौर मंगल जाको २६ सो पतिव्रता पृथ्वी आंसुन कूं डारै है सोच करे है भगवा
न ने त्याग करि है दुर्भगा की सी नाई अब ब्राह्मण के द्वेषी राजा को है मिस जिनके ऐसे शूद्र ने मेरो भोग करेंगे एसे मत र

इदानीं धर्म पादस्ते सत्यं निर्वर्तयेद्यतः तं जिघृक्षत्यधर्मोयमनृतेनैधितः कलिः २४ इयं च भूर्भगव
तान्यासितोरुभरा सती श्रीमद्भिस्तत्पदन्यासैः सर्वतः कृतकौतुका २५ शोचत्यश्रुकला साध्वी दुर्भगेव
स्थिताधुना अब्रह्मण्या नृपव्याजाः शूद्रा भोक्ष्यन्ति मामिति २६ सूत उवाच इति धर्मं महीं चैव सांत्वयित्वा
महारथः निशातमाददे खड्गं कलयेऽधर्महेतवे २७ तं जिघांसुमभिप्रेत्य विहाय नृपलाञ्छनं तत्पादमू
लं शिरसा समगाद्भयविह्वलः २८ पतितं पादयोर्वीरः कृपया दीनवत्सलः शरण्यो नावधीच्छ्लोक्य आह
चेदं हसन्निव २९ राजोवाच न ते गुडाकेशयशोधराणां बद्धाञ्जलेस्ते भयमस्ति किंचित् न वर्तित
व्यं भवता कथंचन क्षेत्रे मदीये त्वमधर्मबन्धुः ३०

धीजो परीक्षत सो पृथ्वी धर्म इन में समझाय कें धर्म को कारज जो कलियुग ता के मारवे कूं लीए पैनो जो खड्ग ता हि लेत भए
२८ मारवे की इच्छा करे एसो जो राजा ता हि जान कें राजा को चिन्ह छोड करि कें भय के मारे पैरे है एसो जो कलियुग ता नें
सीस करि कें राजा के चरनन में गिरत भयो २९ दीनवत्सल सरन को देनवारो सुंदर है कीर्त जाकी एसो जो धीर प
रीक्षत ता के पाउन में गिर्यो एसे जो कलियुग ता हि नहीं मारत भयो हसकर कें बोलत भए ३० श्री हरि ॥

अर्जुन के जस के धारन वारे ऐसे जे तुम लोग तिन को जोरै हैं हाथ जानें एसो जो तू ता कूं भय कछु मैं नहीं है मेरी जो देस ता में तू सेवन करे है मः
ति तू अधर्म को बंधु है ३१ राजान के देह में जव तू वर्ते है तव बल अधर्म को समूह आवै है लोभ मोह लालच चोरी करनो दुष्प
नि तू अधर्म को बंधु है ३१ ... जो अपनो धर्म छोडि नौ दरिद्र कपट पाखंड जेते हैं ३२ हे अधर्म के बंधु धर्म सत्य करवे तें रहे ऐसो जो है सावर्त ता में मति रहे; या
देश में यज्ञ को जो विस्तार ता के जानन वारे तें यज्ञ करवे के यज्ञेश्वर जो भगवान् ता हि पूजन करे है: ३३ या देश में प्रजा कीये यज्ञम

त्वां वर्तमानं नरदेवदेहेष्वनुप्रवृत्तोयमधर्मपूगः लोभोऽनृतं चौर्यमनार्यमंहो ज्येष्ठा च माया कलहश्च दंभः ३१
न वर्तितव्यं तदधर्मबन्धो धर्मेण सत्येन च वर्तितव्ये ब्रह्मावर्ते यत्र यजन्ति यज्ञैर्यज्ञेश्वरं यज्ञवितानविज्ञाः ३२
यस्मिन्हरिर्भगवानिज्यमान इज्यात्ममूर्तिर्यजतां तनोति कामानमोघान्स्थिरजङ्गमानामन्तर्बहिर्वायुरिवैष आत्मा ३३
सूत उवाच परीक्षितैवमादिष्टः स कलिर्जातवेपथुः तमुद्यतासिमाहेदं दण्डपाणिमिवोद्यतं ३४ पञ्च वाचव
स्यामि सार्वभौम तवाज्ञया लक्षयेत्तत्र तत्रापि त्वामात्तेषुशरासनं ३५ तन्मे धर्मभृतां श्रेष्ठ स्थानं निर्देष्टुमर्हसि य
त्रैव नियतो वत्स्य आतिष्ठंस्तेऽनुशासनं ३६ सूत उवाच अभ्यर्थितस्तदा तस्मै स्थानानि कलये ददौ द्यूतं
पानं स्त्रियः सूना यत्राधर्मश्चतुर्विधः ३७ श्रीकृष्णसच्चिदानन्दमक्षरं प्रभवे नमः नमस्कारं कृत्वा भगवतो नमः

ति भगवान तर सो रञ्जन वारे नक्र सफल जे कामना तिन्हें ओर सब देवे हैं ये भगवान पवन की नाईं भीतर बाहर स्थावर जंगम मन के आ
त्मा हैं ३४ एसो जो परीक्षत जो राजा ता नें आज्ञा दीयो सरीर जा को कांपै है एसो जो कलियुग सो डर यो है खड्ग जानें यम धर्म की राज की
सी नाईं दंड देवे को उद्यत एसो जो परीक्षत ता सो यह कहत भयो ३५ हे चक्रवर्तीन तुम्हारी आज्ञा करकें जहां जहां रहूंगो तहां त
हां धनुष वान लीये तुम ही को देखूंगो ३६ ता में धर्म धारीन में श्रेष्ठ जो तुम सो मो कूं स्थान बताय वे कूं योग्य हो जा स्थान में तुम्हा
री आज्ञा में स्थिर रहि कें निश्चल भयो वसूंगो ३७

ऐसे प्रार्थना कीयो जो राजा सो जा कलियुग के अर्थ स्थान हैं तिनें देत भयो कोन से दीयो एक तो जुआ मद्यपान विभचार कीडा नवारी ही जहां प्राणीनकी हत्या जे अस्थान देत भयो जिन में चार प्रकार को अधर्म है ३८ फेर जब प्रार्थना करीत बु समर्थ जो राजा सो सुवर्ण देत भयो जा सुवर्ण स्थान नैं झूठ मद काम हिंसा वेचार सो दीये पांच यो नरतें सो दीयो ३९ परीक्षत नें दीयो ऐसे जे पांच ते अपने भलें न चाहवे की इच्छा जाके स्थान तिन में वसत भयो तिन में अधर्म को उपजावन वारो कलियुग सो राजा की आज्ञा करि के ते में वसत भयो ४० याते अपने भले के लीये ऐसे जो पुरुष सो इन स्थानन को सेवन करे और विशेषतें धर्मशील लोकन को

पुनश्चयाचमानायजातरूपमदात्प्रभुः ततोनृतं मदं कामं रजो वैरं च पंचमं ३८ अमूनि पंच स्थानानि ह्यधर्मप्रभवः कलिः औत्तरेयेण दत्तानि न्यवसत्तन्निदेशकृत् ३९ अथैतानि न सेवेत बुभूषुः पुरुषः क्वचित् विशेषतो धर्मशीलो राजा लोकपतिर्गुरुः ४० वृषस्य नष्टांस्त्रीन्पादांस्तपः शौचं दयामिति प्रतिसंदध आश्वास्य महीं च समवर्द्धयत् ४१ स एष एतर्ह्यध्यास्त आसनं पार्थिवोचितं पितामहेनोपन्यस्तं राज्ञारण्यं विविक्षता ४२ आस्तेऽधुना स राजर्षिः कौरवेंद्रश्रियोल्लसन् गजाह्वये महाभागश्चक्रवर्ती बृहच्छ्रवाः ४३ श्रीकृष्णचंद्राय नमः

104

पालक ऐसो जो राजा ते सो सेवन न करें ४१ बैल को रूप धरें जो धर्म ताके नष्ट होय गए तीन पांउ तप सोच दया तिनें फेर प्रवर्त्ति करत भयो पृथ्वी ते ना सिखबा धान करि कैं बढावत भयो ४२ सो राजा युधिष्ठिर ने दीयो राजान के उचित सो जो राज्यासन ता विषै पालन करें हैं वे से युधिष्ठिर हैं वन में प्रवेश करिबे की इच्छा करें ४३ राजान में ऋषि बडो है भाग्य जाको चक्रवर्ती बडो जाको जस कौरव इंद्रन की संपति करि कैं सोभायमान हस्तनापुर में रहे हैं ४४ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ४४॥

५२

या प्रकार सो है प्रभाव जाको ऐसो अभिमन्यु को बेटा है परीक्षत राजा है जा कूं पृथ्वी पालन करत संतें न मन जप करबे के लीये दीक्षा करत भए ४५ इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः १७ अठारह में अध्याय में शाप सुनि के जो आप सो राजा कूं अनुग्रह होत भयो वे राग पकूं देत भयो सो वर्णन करत भये हैं १ सूत जी कहे हैं जो राजा अश्वत्थामा के अस्त्र करि के जरे न ऐसे जो श्रीकृष्ण तिन के अनुग्रह ते माता के उदर में न मरयो २ ब्राह्मण के क्रोध ते उत्पन्न तक्षक ता को त्रास ताते जो बडो भय ता

इत्थंभूतानुभावोयमभिमन्युसुतो नृपः यस्य पालयतः क्षौणीं यूयं सत्राय दीक्षिताः ४५ इति श्रीभागवते महापुराणे प्रथमस्कंधे सप्तदशोऽध्यायः १७ सूत उवाच यो वै द्रौण्यस्त्रविप्लुष्टो न मातुरुदरे मृतः अनुग्रहाद्भगवतः कृष्णस्याद्भुतकर्मणः १ ब्रह्मकोपोत्थिताद्यस्तु तक्षकात्प्राणविप्लवात् न संमुमोहोरुभयाद्भगवत्यर्पिताशयः २ उत्सृज्य सर्वतः संगं विज्ञाताजितसंस्थितिः वैयासकेर्जहौ शिष्यो गंगायां स्वं कलेवरं ३ नोत्तमश्लोकवार्तानां जुषतां तत्कथामृतं स्यात्संभ्रमोऽन्तकालेऽपि स्मरतां तत्पदांबुजं ४ तावत्कलिर्न प्रभवेत्प्रविष्टोऽपीह सर्वतः यावदीशो महानुर्व्यामाभिमन्यव एकराट् ५ श्रीकृष्णचंद्राय नमः वासुदेवाय नमः

105

ता भय ते भगवान नें अपने की ये हैं चित्त जानें सो मोह को नहीं प्राप्त होत भयो २ सब ओर ते संग छोडि के जा मोर है भगवान को तत्व जानें सो राजा शुकदेव जी को सिष्य होय के गंगा में देह को त्याग करत भयो ३ उत्तम है यश जिन को ऐसे जो श्रीकृष्ण भगवान तिनकी है वार्ता जिन के विषे और हरि के कथामृत को सेवन करें हैं हरि के चरनारविंद को स्मरण करें हैं तिन कूं मृत्यु काल के विषे संभ्रम नहीं होहे ४ सब देश में प्रवेश कीयो है परि अभिमन्यु को बेटा चक्रवर्ती जब ताई पृथ्वी को पालन करे है तो लों ताई कलियुग प्रभाव न करत भयो है ५ श्री मत्ता देवजी [illegible] ताप लेउ नित्स [illegible] नंदस्याय नमः

जादिन भगवान पृथ्वी को त्याग करत भयो ताही दिन अधर्म को उपजावनवारो कलियुग सो या देश मे प्रवर्तित होत भयो ६ चक्रवर्ती जो राजा सो कलियुग सं द्वेष नही करत भयो क्येसो राजा तैं भौरा की सीनाई सार को ग्रहन वारो है सार करा हैं जा कलियुग मै पुण्य तै सो संकल्प मात्र कर के ही फल दैहैं: और पाप तै नैं कीये नैं ही सिद्ध होते: संकल्प मात्र करि कैं नही होते हैं ७ बालकन मे सूरधीर नैं डरपैं अैसो जो कलियुग ताकरि कै कहा हैं जो कलयुग ल्यारी की सीनाई जे सावधान नही तिन मे सावधान हो

यस्मिन्नहनि यर्ह्येव भगवानुत्ससर्ज गां तदैवेहानुवृत्तोसावधर्मप्रभवः कलिः ६ नानुद्वेष्टि कलिं सम्राट् सारंग इव सारभुक् कुशलान्याशु सिद्ध्यंति नेतराणि कृतानि यत् ७ किंनु बालेषु सूरेण कलिना धीरभीरुणा अप्रमत्तः प्रमत्तेषु यो वृको नृषु वर्त्तते ८ सूत उवाच उपवर्णितमेतद्वः पुण्यं पारीक्षितं मया वासुदेवकथोपेतमाख्यानं यदपृच्छत ९ यायाः कथा भगवतः कथनीयोरुकर्मणः गुणकर्माश्रयाः पुंभिः संसेव्यास्ता बुभूषुभिः १० ऋषय ऊचुः सूत जीव समाः सौम्य शाश्वतीर्विशदं यशः यस्त्वं शंससि कृष्णस्य मर्त्यानाममृतं हि नः ११

इहे वर्त्ते है ८ सूतजी कहे हैं मैं ने पुण्य परीक्षित को पवित्र चरित्र तुम सं कह्यो वासुदेव की कथा करि कैं युक्त हैं सो तुम ने पूछ्यो हो सो कह्यो: ९ करिवे लायक है बड़े जिन के अैसे जो भगवान् तिन के गुन कर्म इन को आश्रय अैसी जे कथा ते हम भावकी इच्छा करे हैं ते पुरुषन करके सेवन करवे कूं योग्य हैं १० अब ऋषि सूत सो कहत है कि हे सूत हे सौम्य तुम बहुत वर्ष जीवत रहौ जो तुम मरन धर्मा जो मनुष्य हैं तिन कूं श्रीकृष्ण को निर्मल जो जस सोई भयो अमृत ता

नहीं हैं विश्वास जा को अैसो जो यह कर्म ता मे धूम्र करि कै धूसरे हैं शरीर जिन को अैसे जो हम तिन कूं गोविंद के चरणारविंद को जो मकरंद मीठो ता हि प्यावो हो १२ भगवान के संगी को न भक्त तिन को जो संग ता को लेश ता की बरोबर मोक्ष को न ही तोले हैं और स्वर्ग कूं नही तोले हैं और मनुष्य के जे राज्यादिक तिन कूं नही तोले है बराबर के मे तोले हैं यामे कहा कहनो है १३ रस को जानन वारो को न तृप्त है जो महंतन कूं एक आश्रय अैसो जो भगवान् तिन की कथा करि कैं महत्तायन सो

कर्मण्यस्मिन्ननाश्वासे धूमधूम्रात्मनां भवान् आपाययति गोविंदपादपद्मासवं मधु १२ तुलयाम लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवं भगवत्संगीसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः १३ को नाम तृप्येद्रसवित् कथायां महत्तमैकांतपरायणस्य नांतं गुणानामगुणस्य जग्मुर्योगेश्वरा ये भवपाद्ममुख्याः १४ तन्नो भवान्वै भगवत्प्रधानो महत्तमैकांतपरायणस्य हरेरुदारं चरितं विशुद्धं शुश्रूषतां नो वितनोतु विद्वन् १५ स वै महाभागवतः परीक्षित्येनापवर्गाख्यमदभ्रबुद्धिः ज्ञानेन वैयासकिशब्दितेन भेजे खगेंद्रध्वजपादमूलम् १६ श्रीहरेर्नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः श्रीकृष्णायनमोनमः १६

कोई नही जीन भगवान के गुणन को जो अंत तिन्हे ब्रह्मा महादेव ए जीन मे मुख्य अैसे जे योगेश्वर तिनै प्राप्त होत भए नही १४ भगवान ही है सेव्य जिन के एसे जो तुम सो महात्मन को एक आश्रय ए सो जो हरि तिन को उदार चरित्र अत्यंत शुद्ध ता हि हम सो महात्मन कूं एक आश्रय ता हि सुनवे की इच्छा करे हैं सो हमारे आगे कहौ १५ सो परीक्षित महा भागवत हैं जा परीक्षित ने मोक्ष कूं मुख्य जानो है शुकदेव जी ने कह्यो जो ज्ञान ता करि कैं गरुड़ध्वज सो भगवान तिन के चरणारविंद को भजत

परम पुरुष भक्ति योग मैं तें ने ध्राजा की हरि के चरित्र कहि के युक्त भागवतन के सुंदर लगें ऐसो परीक्षित को चरित्र ना हिलमा
रे आगे कहो २७ सूतजी कहें हैं हम ध्रष्ठ कुल के नहीं हैं जो उ वडे नकी टेहेल करके सफल हैं जन्म जिनको ऐसे महात्मा भए महा
ननको जो संभाषण सो दुष्ट कुल में भई जो पीडा ता हि सीघ्र नास करे है २८ अनंत जो भगवान भक्तनकूं आश्रै तिनके जो नाम ता
हि जो गावै ताके मन की पीडा जाई या मैं कहा कहनो जो भगवान अनंत हैं शक्ति जिनकी ऐसे हैं आपहू अनंत हैं रूप जिनको और

तन्नः परं पुरुषमसंवृतार्थमाख्यानमत्यद्भुतयोगनिष्ठं आख्याह्यनंताचरितोपपन्नं परीक्षितं भागवताभिरा
मं २७ सूत उवाच: अहो वयं जन्मभृतोद्य हास्म वृद्धानुवृत्यापि विलोमजाता दौष्कुल्यमाधिं विधुनोति शीघ्रं म
हत्तमानामभिधानयोगः २८ कुतः पुनर्गृणतो नाम तस्य महत्तमैकांतपरायणस्य योनंतशक्तिर्भगवाननं
तो महद्गुणत्वाद्यमनंतमाहु २९ एतावतालं ननु सूचितेन गुणैरसाम्यानतिशायनस्य हित्वेतरान्प्रा
र्थयतो विभूतिर्यस्यांघ्रिरेणुं जुषतेनभीप्सो २० अथापि यत्पादनखावसृष्टं जगद्विरिंचोपहृतार्हणांभः
सेशं पुनात्यन्यतमो मुकुंदात् को नाम लोके भगवत्पदार्थः २१ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो नमः

महांतन मैं रैं गुड जाके याते जिनकूं अनंत कहै है २९ जिनके गुणन करिकै समान नहीं तिन भगवान के इतने ही कहवे कूं
हम न रो उ प्रार्थना करे हैं ऐसे जे ब्रह्मादिक तिनै छोड के लक्ष्मी अपनी इच्छा नहीं करे हैं सो उ जिन भगवान के चरण रेणु कूं
भजे हैं २० ब्रह्मा नें चरनन को इच्छा के लीयें अर्पन कीयो है ऐसो जो जल सो भगवान के चरनन तें निकसि के महादेव सहि
त जगत कूं पवित्र करे हैं तिन भगवान मुकुंद तें और सर्वेश्वर कौन है कोई नहीं है २१ श्रीलक्ष्म्यायनमः २१ २१

५४

जा भगवान मैं अनुरक्त धीर ऐसे जे जन ते देहादिकन मै वडो जो संग ता हि छोडि कैं परमहंसन करि कैं सेवन कीयो है जाने
और उत्तम नहीं ऐसो जो पद ता हि प्राप्त होते हैं जा पद मैं अहिंसा उपसम यही स्वधर्म है २२ हे सूतजी रूप पूछने मै हम सो जहां ताईं मेरीः
बुद्धि है तहां ताईं कहुंगो जेसे पक्षी हैं ते अपने वल के समान आकाश मे उडे हैं ऐसे पंडित हैं ते विष्णु की गति हैं ताहि देखे है २३
एक दिना धनुष लैकै सिकार खेलवे कूं वन मे मृग के पीछें जात भयो तहां श्रमकूं प्राप्त भयो भूख लगी २४ ~~[illegible]~~
प्यास लगी २४ जल को जो स्थान ता हि टूंढे हैं एक रिषि को आश्रम ता मैं प्रवेश करत भयो ता आश्रम मैं वैठे शांत मूंदे हैं ने

यत्रानुरक्ताः सहसैव धीरा व्यपोह्य देहादिषु संगमूढं व्रजंति तत्पारमहंस्यमंत्यं यस्मिन्नहिंसोपशमः स्वधर्मं २२
अहं हि पृष्टोर्यमणो भवद्भिराचक्ष आत्मावगमोत्र यावान् नभः पतंत्यात्मसमं पतत्त्रिणस्तथा समं विष्णुगतिं विप
श्चितः २३ एकदा धनुरुद्यम्य विचरन्मृगयां वने मृगाननुगतः श्रांतः क्षुधितस्तृषितो भृशं २४ जला
शयमचक्षाणः प्रविवेश तमाश्रमं ददर्श मुनिमासीनं शांतं मीलितलोचनं २५ प्रतिरुद्धेंद्रियप्राणमनोबु
द्धिमुपारतं स्थानत्रयात्परं प्राप्तं ब्रह्मभूतमविक्रियं २६ विप्रकीर्णजटाच्छन्नं रौरवेणाजिनेन च विशुष्यत्ता
लुरुदकं तथाभूतमयाचत २७ अलब्धतृणभूम्यादिरसंप्राप्तार्घ्यसूनृतः अवज्ञातमिवात्मानं
मन्यमानश्चुकोपह २८

२०

नेत्र जिन्हें २५ रोकी हैं इंद्री प्राण मन वुद्धि जिन नें तीन जे स्थान तिन तें परे जो पद ता हि प्राप्त भयो ब्रह्म रूप विकार र हि
त हैं २६ विखरी जे जटा तिन करके ढके मृगचर्म ओढें हैं: ता प्रकार के जे मुनि तिन सूं प्यास के मारे सूख गयो है कंठ
जाको ऐसो जो राजा सो जल मांगत भयो तहां नहीं पायो है आसन वैठवे को स्थान जानें नहीं पायो है अर्घ आदर जानें
सो राजा ब्राह्मण नें मेरी अवज्ञा करी ऐसे मानके क्रोध करत भयो है ताकूं वडो सोच पैदा भयो है २८ २८

भषप्यासके मारें व्याकुल है देह जाको ऐसो जो परीक्षित ताके पहिलें कबहूं भयो नहीं ऐसो क्रोध मत्सर भयस्मात् ब्राह्मणके मिलिवेते भयो २९ सो राजा क्रोधके मारें धनुषकी गोसासें मर्यो सर्प गलामें डारिके ब्राह्मणके कंधे परि धरिके अपनेपुरको आवत भयो ३० यह ब्राह्मण निभृत करें सब इंद्रीय जाकी ऐसो वैठो है ध्यानेयानें विचारी यह निच मूंदी हैं नेत्र करि मोकूं कहा प्रयोजन है याने झूठी समाधि के सांची है यह जानवेके लीयें सर्प डारकें चलो आयो ३१ ता ब्राह्मणको वेटा वडो तेजस्वी वालकनके संग खेलै है ताने सुनी मेरे पिताये राजा सांप डारि गयो है यह सुनिके यह वचन वोलत भयो ३२

अभूतपूर्वः सहसा क्षुत्तृड्भ्यामर्दितात्मनः ब्राह्मणंप्रत्यभूद्ब्रह्मन् मत्सरो मन्युरेव च २९ स तस्य ब्रह्म ऋषेरंषे गतासुमुरगं रुषा विनिर्गच्छन् धनुःकोट्या निधाय पुरमागमत् ३० एष किं निभृताशेषकरणो मीलितेक्षणः मृषासमाधिराहोस्वित् किंनु स्यात्क्षत्रवंधुभिः ३१ तस्य पुत्रस्यतितेजस्वी विहरन्वालकोऽर्भकैः राज्ञाघंप्रापितं तातं श्रुत्वा तत्रेदमब्रवीत् ३२ अहो अधर्मः पालानां पीव्नां बलिभुजामिवाः स्वामिन्यघं यद्दासानां द्वारपानां शुनामिव ३३ ब्राह्मणैः क्षत्रवंधुर्हि गृहपालो निरूपितः सकथं तद्गृहे द्वाःस्थः सभांडं भोक्तुमर्हति ३४ कृष्णे गते भगवति शास्त्र्युत्पथगामिनां भिन्नसेतून घातं शास्मि पश्यत मे वालम् ३५॥

अहो वडो अधर्म है खाय खायके मोटे भए ऐसे जे राजा ते दासरूपके स्वामीपै अपराध करे हैं जैसे द्वारपालक कूकर हैं ते अपराध करे हैं ३३ ब्राह्मणने राजा है सो अपने द्वारको पालक कीयो है सो द्वारपै वैठके भीतर घरमें जाईके भांडेमें धरी जो वस्तु ताहि खायवेकूं कैसें योग्य है ३४ उत्पथगामीनको शिक्षा देनवारे भगवान् श्रीकृष्ण गए तव तोरी है मर्याद जिन्हने ऐसे जो राजा तिनेमें दंड देहूं मेरे वलकूं देखो ३५

क्रोधकरिके लाल हैं आंख जाकी ऐसो जो ब्राह्मणवालक सो और ऋषिनके वेटा अपने सखा तिनसूं ऐसे कहिके कौशकी नदीके जलको आचमन करिके शाप देत भयो ३६ ऐसे लांघी है मरजाद जाने कुलकूं अंगारके तुल्य मेरे पिताको द्रोही ऐसो यह राजा ताहि मेरो पठायो तक्षक सो आजतें सातमें दिना डसैगो ३७ ताके अनंतर वालक है सो आश्रममें आईके पिताके गरेमें सांप देखके दुःखके मारें कंठ खोलिके रोवत भयो ३८ अंगिराके गोत्रमें भयो सो ब्राह्मण समीक जाको नाम सो पुत्रको जो विलाप ताहि सुनिके हरूवे हरूवे आंख खोलके अपने कंधापे मर्यो सांप ताहि

इत्युक्त्वा रोषताम्राक्षो वयस्यानृषिवालकः कौशिक्याप उपस्पृश्य वाग्वज्रं विससर्ज ह ३६ इति लंघितमर्यादं तक्षकः सप्तमेऽहनि दंक्ष्यति स्म कुलांगारं चोदितो मे ततद्रुहं ३७ ततोऽभ्येत्याश्रमं वालो गले सर्पकलेवरं पितरं वीक्ष्य दुःखार्तो मुक्तकंठो रुरोद ह ३८ स वा आंगिरसो ब्रह्मन् श्रुत्वा सुतविलापनं उन्मील्य शनकैर्नेत्रे दृष्ट्वा चांसे मृतोरगं ३९ विसृज्य तं च पप्रच्छ वत्स कस्माद्धि रोदिषि केन वा तेऽपकृतमित्युक्तः स न्यवेदयत् ४० निशम्य शप्तमतदर्हं नरेंद्रं स ब्राह्मणो नात्मजमभ्यनंदत् अहो वतांहो महदद्य ते कृतमल्पीयसि द्रोह उरुर्दमो धृतः ४१ न वै नृभिर्नरदेवं पराख्यं संमातुमर्हस्यविपक्वबुद्धे यत्तेजसा दुर्विषहेण गुप्ता विंदंति भद्राण्यकुतोभयाः प्रजाः ४२ जो न मो वाँसे भगवने वासुदेवाय

देखके ३९ सांप पटें ताहि दूरि डारकें पुत्रसूं पूछत भयो हे पुत्र क्यों रोवे है कोननें तेरो अपराध कीयो है ऐसे जब कहीन तव सो वालक जैसें आप आप दीयो है सो सब कहत भयो ४० आपके लायक नहीं परि शाप दीयो राजा ताहि सुनिके ब्राह्मण अपने पुत्रको आदर न करत भयो हे महाखेद है तैंने वडो अपराध कीयो है थोडो अपराधमें बडो दंड दीयो ४१ राजा है सो परमेश्वर है लोकनकूं समान देखवेकूं ही योग्य है रे कचीवुद्धि है या राजाने वडे तेज करिकै रक्षा करी जाते नेनहीं है भय जीनकूं सो प्रजा राजाने कर पालन की जाती है ४२

राजाजाकोनम एसोजोचक्रपाणिभगवानसोसवदेखिवेमेनआमैंगो नवतेपुत्रतमपरलनषोजाइगो चोरवहुतलोः जाइंगे ऐसेविनारखवारीयेंभेडनकोनासलेजातें ४३ सोयतयापरमकूंलगैगो नषतेनाथजाकोएसोजोलोकनाकेद्रव्यकूं चोरलुटैंगें परस्परमारीदेयगें पशुनतकंचुरायलेजाइंगें स्त्रीनकूंहरेंगे जोमोरोतवढैंगें ४४ तालसेमनुष्यनकोधर्मनष्ट होइगो वरणआश्रमइनकोजोधर्मसोनष्टहोइगो अर्थकाममेंहैचितजिनको एसेलोकहोयगें कुत्तानकी वंदरानकीजेसी स्त्रीहोतहैं तेसीवर्णसंकरस्त्रीहोयगी ४५ धर्मकोपालकवडोजाकोजसचक्रवर्तीसाक्षात् महाभागवतराजानमेंऋ

अलक्ष्यमाणेनरदेवनाम्निरथांगपाणावयमंगलोकः तदाहचोरप्रचुरोविनंक्ष्यत्यरक्ष्यमाणोविवरूथवत्क्ष णात् ४३ तदद्यनःपापमुपैत्यनन्वयंयन्नष्टनाथस्यवसोर्विलुंपकात् परस्परंघ्नंतिशपंतिवृंजतेपशून्स्त्रियोर्था न्पुरुदस्यवोजनाः ४४ तदार्यधर्मःप्रविलीयतेनृणांवर्णाश्रमाचारयुतस्त्रयीमयः ततोर्थकामाभिनिवे शितात्मनांशुनांकपीनामिववर्णसंकरः ४५ धर्मपालोनरपतीःसतुसम्राट्बृहच्छ्रवा साक्षान्महाभागवतो राजर्षिर्हयमेधयाट् ४६ क्षुत्तृट्श्रमयुतोदीनोनैवास्मच्छापमर्हति अपापेषुस्वभृत्येषुबालेनापक्वबुद्धि ना ४७ पापंकृतंतद्भगवान्सर्वात्माक्षंतुमर्हति तिरस्कृताविप्रलब्धाःशप्ताःक्षिप्ताहतामपि ४८ नास्यतत्प्रति कुर्वंतितद्भक्ताःप्रभवोपिहि इतिपुत्रकृताघेनसोनुतप्तोमहामुनिः ४९ स्वयंविप्रकृतोराज्ञानैवाघंतदचिं

त्यत्स्वमेधर्मकोकरनवारो अश्वमेधयज्ञकरिवेवारो ऐसोजोराजासोहमारेश्रापकेयोग्यनहीहैं ४६ क्षुधातृ षाकरिकैंदुखी ऐसोजोवालकनानेपापकरयोजेंअपनेदासतिनमें आपकीयोताकोसवनकेआत्माजोभगवानसोक्षमाकरिवे कूंयोग्यहैं ४७ निरादरकियेवचनाकियेअवज्ञाकीयेमारेऐसेउलरिकेभक्तसवकरिवेंकूंसमर्थहूहैं तोहूअपनो अपराधकोजोकरनवारोताकेउपरक्रोधनहीकरेहैं ४८ ऐसेपुत्रकेअपराधकरिकैंएसेजेमहामुनिजोसमीक सोतापकूंप्राप्तहोतभये आपराजानेअपराधकीयोतोउराजाकेअपराधकूंनहीविचारतभये ४९

वहुधालोकमेंसाधुहैंतेंऔरलोकनमेंसुखदुःखमेंडारेहैं परदुःखमेंव्यथाकूंनहीकरैं सबमेंआनंदकोप्राप्तहोतहैं जातेंआ त्माहैंसोसुखदुःखादिकूंप्राप्तनहीहोहैं ५० इतिश्रीभागवतेप्रथमस्कंधेअष्टादशोध्यायः १८ उन्नीसवेंअध्यायमेंराजापरी क्षितकोउठिकेगंगाकेतीरबैठतभए तहांसगरेयोगेश्वरआवतभए तापीछेसुखदेवजीआवतभये यहवर्णनकरेहैं १ सूत जीकहेहैंहेसौनकराजाहेसोघरआयकेंआपनेकीयोनिंदकर्मताहिविचारतभयो औरदुखितमनजाकोऐसोहोतभयोः अहोमेनेंनीचकीसीनाईंगुढजिनकोतेजअपराधरहितएसेजेब्राह्मणतिनमेंअपराधकीयोहे १ तातेंमेनेकीयोदुस्तर

मायया:साधवोलोकेपरेद्वंद्वेषुयोजिता नव्यंजतिनहृष्यंतियतआत्मागुणाश्रयः ५० इतिश्रीभागवते प्रथमस्कंधेअष्टादशोध्यायः १८ सूतउवाचः महीपतिस्त्वथतत्कर्मगर्ह्यंविचिंतयन्नात्मकृतंसुदुर्मनाः अहोमयानीचमनार्यवत्कृतंनिरागसिब्रह्मणिगूढतेजसि १ ध्रुवंततोमेकृतदेवहेलनाद्दुरत्ययंव्यसनंनातिदी र्घात् तदस्तुकामंह्यघनिष्कृतायमेयथानकुर्यांपुनरेवमद्धा २ अद्यैवराज्यंबलमृद्धकोशंप्रकोपितब्रह्मकुलान लोमेदहत्वभद्रस्यपुनर्नमेभूत्पापीयसीधीर्द्विजदेवगोभ्यः ३ सचिंतयन्नित्थमथाशृणोद्यथामुनेःसुतोक्तो निर्ऋतिस्तक्षकाख्यः सासाधुमेनेनचिरेणतक्षकानलंप्रसक्तस्यविरक्तिकारणं ४ श्रीकृष्णायनमः ४

कीअवज्ञारूपपापताातेवेगमोकूंवडोदुखआयोपाछेमेरेपापकोप्रायश्चित्तहोतहैं जाकरकेफेरमेंएसोंअपराधनकरूंगोऔर आजहीकोपकीयोब्राह्मणकोकुलतहीअग्निसोमेरेराज्यसेनाखजानाइननेजराईदेउ जोफेरपापीमेंताकीएसीजोपापनीबुद्धि सोब्राह्मणदेवताअरुगोइनपेपीडादेवेकूंनहीई ३ एसेविचारकरतसोराजासमीकनेंपठायोशिष्यतानें मुनिकेपुत्रनेक ह्योतेकेनोकूंसातमेंदिनातक्षककडसेगो ऐसेअपनीजोमृत्युहैतातिसुनतभयो तक्षकरूपजोअग्नितैसोतातिसांप मानतभयो जानेविषयनमेंजोआसक्तहैतांकूंवेगहीवैराग्यकोकारणहैं ४ श्रीकृष्णायनमः सधाकृष्णायनमः

ताके अनंतर राजा रैसो परिखै तीराज्य लक्ष्मी छोडिवेकूं विचारै यह लोक परलोक परलोकन तिनै छोडिकैं श्रीकृष्ण चरनतैं श्रा कं अधिक मानके गंगा तीरमैं अनसन व्रत लेकैं बैठत भयो ५ जो गंगा सो भायमान जो तुलसी ता करिकैं मिली ऐसी जो श्रीकृष्णकी चरणरैणु तिन करिकैं अधिक ऐसो जो जल ताकी वहन वारी हैं भी तरवारे लोकपालन सा हेतजे लोक तिनैं पवित्र करे हैं ता गंगाको मरतीवेरकोन न सेवन करै ६ ऐसे राजा गंगामैं अनसन व्रत लेवेकूं निश्चय करकैं तटी औरमैरे भावजा को मुनिनको सेरेहै तजाको छोडि दीयेहै समस्त संग जानें ऐसो हैं मुकुंदके चरनन को ध्यान करत भए ७ ता समै राजा

अथो विहायेमममुं च लोकं विमर्शितौ हेयतया पुरस्तात् । कृष्णाङ्घ्रिसेवामधिमन्यमान उपाविशत् प्रायममर्त्यनद्याम् ॥ ५ ॥ या वै लसच्छ्रीतुलसीविमिश्रकृष्णाङ्घ्रिरेण्वभ्यधिकाम्बुनेत्री । पुनाति लोकानुभयत्र सेशान् कस्तां न सेवेत मरिष्यमाणः ॥ ६ ॥ इति व्यवच्छिद्य स पाण्डवेयः प्रायोपवेशं प्रति विष्णुपद्याम् । दध्यौ मुकुन्दाङ्घ्रिमनन्यभावो मुनिव्रतो मुक्तसमस्तसङ्गः ॥ ७ ॥ तत्रोपजग्मुर्भुवनं पुनाना महानुभावा मुनयः सशिष्याः । प्रायेण तीर्थाभिगमापदेशैः स्वयं हि तीर्थानि पुनन्ति सन्तः ॥ ८ ॥ अत्रिर्वसिष्ठश्च्यवनः शरद्वानरिष्टनेमिर्भृगुरङ्गिराश्च । पराशरो गाधिसुतोऽथ राम उतथ्य इन्द्रप्रमदेध्मवाहौ ॥ ९ ॥ मेधातिथिर्देवल आर्ष्टिषेणो भारद्वाजो गौतमः पिप्पलादः । मैत्रेय और्वः कवषः कुम्भयोनिर्द्वैपायनो भगवान्नारदश्च ॥ १० ॥

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

के देखवेकूं मानभाव भर्मके पवित्र करन वारे चेलान सहित मुनि आवत भए बहुधा संत हैं ते तीर्थनके जाइवेको जो मीस ताकरिकै तीर्थनकूं पवित्र करवेकूं जो आए हैं ८ कोन कोनसे मुनि आये हैं तिन सबनके नाम कहैं हैं एक तो अत्रि वसीष्ठ च्यवन सरद्वन अरिष्टनेम भृगु अंगिरा पारासर विश्वामित्र परसराम उतथ्य इंद्र प्रमद इध्मवाह मेधातिथि देवल आर्ष्टिसेन भारद्वाज गौतम पीप्पलाद मैत्रेय और्व कवस अगस्त व्यासदेव नारद ए आवत भए ९ और देव ऋषिनमें श्रेष्ठ ब्रह्म ऋषिनमें श्रेष्ठ और इनतें आदि लैके नाना ऋषिनके गोत्र तिनमें जे श्रेष्ठ तेआ

सुखसों आसनपे बैठे ऐसे जे मुनि तिनै प्रेम नाम करिकै पवित्र हैं चित्त जाको आगे बैठयो जो रहे हाथ जाने ऐसो राजा अपने करिवे कीलै इच्छाते तासि कहत भयो ११ राजा न मैं हम बड़े धन्य हैं महात्मन कूं अनुग्रह करवे लायक हैं सील जिनको चित्त रहे जोनको जो कुल सो ब्राह्मणनके पाउ धोयवेको जल जहां परे ताप ताते पैठ ठाड़ो रैवेको जो पन हीहैं जातें राजानको कर्म निषेधे १२ निंदनीक कर्मको करनवारो पापरूप घरनमें आसत्य जाको चित्त ऐसो जो मैं ताकूं अपनी पाम देवेके लीये परावरनके ईस्वर जो भगवान् सोई निरवेदके कारन ब्राह्मणनके सापरूप होत भए आसापके भयेसते घरमें आसक्त जे लोक सो भयकूं करे

अन्ये च देवर्षिब्रह्मर्षिवर्या राजर्षिवर्या अरुणादयश्च । नानार्षेयप्रवरान् समेतानभ्यर्च्य राजा शिरसा ववन्दे ॥ ११ ॥ सुखोपविष्टेष्वथ तेषु भूयः कृतप्रणामः स्वचिकीर्षितं यत् । विज्ञापयामास विविक्तचेता उपस्थितोऽग्रेऽभिगृहीतपाणिः ॥ १२ ॥ परीक्षिदुवाच । अहो वयं धन्यतमा नृपाणां महत्तमानुग्रहणीयशीलाः । राज्ञां कुलं ब्राह्मणपादशौचाद् दूराद् विसृष्टं बत गर्ह्यकर्म ॥ १३ ॥ तस्यैव मेऽघस्य परावरेशो व्यासक्तचित्तस्य गृहेष्वभीक्ष्णम् । निर्वेदमूलो द्विजशापरूपो यत्र प्रसक्तो भयमाशु धत्ते ॥ १४ ॥ तं मोपयातं प्रतियन्तु विप्रा गङ्गा च देवी धृतचित्तमीशे । द्विजोपसृष्टः कुहकस्तक्षको वा दशत्वलं गायत विष्णुगाथाः ॥ १५ ॥ पुनश्च भूयाद्भगवत्यनन्ते रतिः प्रसङ्गश्च तदाश्रयेषु । महत्सु यां यामुपयामि सृष्टिं मैत्र्यस्तु सर्वत्र नमो द्विजेभ्यः ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः कृष्णाय नमः

हैं १३ इस्वरमें धारणा कीयो है चित्त जानें तुम्हारे सरण आयो ऐसो जो मैं ताय जानो गंगा देवी है सोउ जानो ब्रह्म याको पठायो कपटी जो तक्षक सो मोकूं डसो तुम हरगाथा तिन्हें गावो १४ भगवान् में मेरी रति है सो होउ साधुन में प्रसंग मेरो होउ जा जा योनिमें जाय के जन्म लेउ ता तामें साधुनमें मैत्रि होउ ब्राह्मणनको नमस्कार होउ १५ ऐसेंकी पैहैं नि श्चै जानें ए सो जो राजा सो परब कूं हैं अग्र भाग जिनको ऐसे जे कुशा तिनमें गंगाके दक्षिण कूलमें बैठत

ऐसें अनसन व्रत लैके राजा जब बैठौ तब देवतानके जे समूह ते बडाई करत भए फूलनकी वर्षा करत भए बेर बेर नगारे बजत भए २७ जे ऋषि आए ते बडाई करिकें भलें भलें ऐसें अनुमोदन करत भए प्रजान पें अनुग्रह करिवे कौं है सील बल जिनको ते उत्तम श्लोक जो भगवान् तिनके गुनन करिकें सुंदर जे हैं सोई हैं ते से बोलत भए २८ हे राजा ऋषि बन में श्रेष्ठ उत्तम भक्त जो तुम तिनमें यह आश्चर्य नहीं हैं जै तुम भगवान् के पास जायवे के लीये तत्काल राजान के मुकुटन करकें सेवित एसो जो राज्यसिंहासन ताहि छोड देत भए २९ जब ताई सरीर छोडकें निर्मल सोकरहित ऐसो जो लोक ताहि जाउगे तब ताई हम इहां बैठेंगे

इति स्म राजाऽध्यवसाययुक्तः प्राचीनमूलेषु कुशेषु धीरः। उदङ्मुखो दक्षिणकूल आस्ते समुद्रपत्न्याः स्वसुतन्यस्तभारः २७ एवं च तस्मिन्नरदेवदेवे प्रायोपविष्टे दिवि देवसंघाः। प्रशस्य भूमौ व्यकिरन्प्रसूनैर्मुदा मुहुर्दुंदुभयश्च नेदुः २८ महर्षयो वै समुपागता ये प्रशस्य साध्वित्यनुमोदमानाः। ऊचुः प्रजानुग्रहशीलसारा यदुत्तमश्लोकगुणाभिरूपम् २९ न वा इदं राजर्षिवर्य चित्रं भवत्सु कृष्णं समनुव्रतेषु। येऽध्यासनं राजकिरीटजुष्टं सद्यो जहुर्भगवत्पार्श्वकामाः ३० सर्वे वयं तावदिहास्महेऽथ कलेवरं यावदसौ विहाय। लोकं परं विरजस्कं विशोकं यास्यत्ययं भागवतप्रधानः ३१ आश्रुत्य तदृषिगणवचः परीक्षित्समं मधुच्युद्गुरु चाव्यलीकम्। आभाषितैनानभिनंद्य युक्तान्शुश्रूषमाणश्चरितानि विष्णोः ३२ राजोवाच। समागताः सर्वत एव सर्वे वेदा यथा मूर्तिधरास्त्रिपृष्ठे। नेहाथ वामुत्र च कश्चनार्थो य एव परानुग्रह आत्मशीलः ३३

है गे ३० ऐसें परीक्षित समन्तत सो मीठो गंभीर सत्य ऐसें जो ऋषिनको वचन सुनके तिनकूं दंडोत करकें बोलत भए हरिके चरित्र सुनिवेकूं है मन जिनको ३१ सगरे तुम सब दिसान ते इहां आए हौ जैसे सत्यलोकमें मूर्तिधरे वेद होय सोई लोकनमें अनुग्रह करनो यही तुम्हारो या लोक परलोकमें सुभाव है और प्रयोजन नही है ३२ तासूं तुमतें मसंसय है तें विश्वास करिकें हे ब्राह्मणो इनको मत्युमायल गीहें तिन करिकें सब अवस्थानमें जो करवेकूं योग्य

116

ऐसें सब छोजरा जा तब कोउ यज्ञ पुकराओ कोउ कहै योग कखाओ कोउ कहैं तप दान कराओ ऐसें जब वाद करन लगे तब अवस्मात पृथ्वी में डोलें निजलाभ करिकें संतुष्ट नहीं लखाते जिनको चिन्ह स्त्रीबालकन करकें सहित अवधूतको सो है वेश जिनको ऐसे तो है व्यासदेवजी सो आवत भए २४ सोरह वर्षकी है अवस्था जिनकी चरण कर उरू भुजा कंधा कपोल गात्र जिनके सुंदर है विसाल नेत्र जीनके उंची है नासिका जिनकी तुल्य है कान जाके सुंदर है भृकुटी जाके एसो है मुख जिनके संख की सी है तीन रेखा जामें एसो है कंठ जिनको २५ मांसमें छीपरे छाती की हाड जिनके उंचो है वक्षस्थल जिनको भौरिसी है नाभि

तत्राभवद्भगवान्व्यासपुत्रो यदृच्छया गामटमानोऽनपेक्षः। अलक्ष्यलिंगो निजलाभतुष्टो वृतश्च बालैरवधूतवेषः २५ तं द्व्यष्टवर्षं सुकुमारपादकरोरुबाहूंसकपोलगात्रम्। चार्वायताक्षोन्नसतुल्यकर्णसुभ्र्वाननं कंबुसुजातकंठम् २६ निगूढजत्रुं पृथुतुंगवक्षसमावर्तनाभिं वलिवल्गूदरं च। दिगंबरं वक्त्रविकीर्णकेशं प्रलंबबाहुं स्वमरोत्तमाभम् २७ श्यामं सदापीच्यवयोंगलक्ष्म्या स्त्रीणां मनोज्ञं रुचिरस्मितेन। प्रत्युत्थितास्ते मुनयः स्वासनेभ्यस्तल्लक्षणज्ञा अपि गूढवर्चसम् २८ श्रीकृष्णाभ्यां नमः २७

117

तिनमें तीन है रेखा जामें एसो है उदर जिनके दिगंबर हैं और देहें ओर सब ओर फैले एसे हैं एके श जिनके लंबी है भुजा जिनकी देवतानमें उत्तम हरि तिनकी सी है कांत जिनकी एसे श्रीशुकदेवजी आवत भए २९ साम रे हैं स्त्री अति उत्तम जोवन ता करिकें जो अंगकी सोभा ताकरकें सुंदर एसी जो मुसक्यानि ता करिकें इस्त्रीनके मनकूं हरै हैं गुप्त है तेज जिनको एसे श्रीशुकदेवजी तिनने देखके तिनके लक्षनकूं जाने हैं एसे जे मुनि ते अपने आसनतें उठत भए २८

जोराजापरीक्षत आयेजो अतिथिनिनके अर्थ लिरकरके दंडोत और रस्जाकर्त भयो तालमें प्रज्ञानजेस्त्रीवालकतेजात भये राजानेरज्ञाकीयेशुकदेवजीसोसिंघासनपेजायबेठनभए २८ महांतननमेश्रेष्ठ वृत्तऋषि देवऋषिइनकेसमुहकरि केशुकदेवजी अतिसोभितहोतभए कैसेजैसेगरहनक्षत्रनाराईनकेसमुहकरिकेचंद्रमासुंदरलगेहैं तैसेसुंदरलगे २९ प्रशांतिरेतनजिनकी नहींबुद्धीनतेबुद्धजिनकी सिंघासनपेंबैठे एसेशुकदेवजीतिनकेपासआइके भागवतजोराजासो माथेकरकेदंडोतकरिके हाथजोरकेएछवेकेलीयेफेरप्रणामकरिकेसुंदरवानीकरकेप्रश्नभयो ३० हेब्रह्मनतुमश्रेष्ठ

सविस्मुरान्नोऽतिथ्यआगतायन्तस्मैसपर्यांशिरसाजहार ननोनिवृत्ताह्यबुधास्त्रीयोर्भकामहासनेसोपविवेस इजित् २८ ससंवृतस्तत्रमहान्महीपसांब्रह्मर्षिराजर्षिसंघै व्यरोचतालंभगवान्यथेंडुर्ग्रहर्क्षतारानिकरी परीत ३० प्रशांतमासीनमकुंठमेधसंमुनीन्नृपोभागवतोभ्युपेत्या प्रणम्यमूर्द्धाविहितःकृतांजलीर्नत्वा गिरासूनृतयान्वपृच्छत् ३१ राजोवाच अहोअद्यवयंब्रह्मन्सत्सेव्याःक्षत्रबंधवः कृपयातिथिरूपेण भवद्भिस्तीर्थकाःकृता ३२ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यंतिवैगृहाः किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचा शनादिभिः ३३ सान्निध्यात्तेमहायोगिन्पातकानिमहांत्यपि सद्योनस्यंतिवैपुंसांविष्णोरिवसुरेतरा ३४ श्री॥

जानतेपरसाधुनसोसेव्यभये तुमनेअतिथिस्वरूपकरिकेंकृपाकरिकेंपवित्रकीयो ३२ जिनकेस्मरनकीयेतेपुरुषन केघरतेंतत्काल शुद्धहोतहैं तुम्हारेदर्शनतेपरसनते चरननकेधोयेते आसनदीयेतेपवित्रहोईयामेंकहा कहनोहै ३२ हेमहायोगीतुम्हारेनिकटतेंपुरुषनकेवडेवडेपातकतत्कालनष्टहोतहैं जैसेभगवान्केनिकट तेंअसुरतेंतेनष्टहोईजाईहै ३३

118

119

पांडवके बेटारै प्यारे जिनकूं ऐसो जो भगवान् श्रीकृष्ण सो आज से प्रसन्न होउ मोपै ताके बेटा जो पांडव तीनकी प्री
तके लीयै तिनके वंसमें नयो में ताको भलो करन भयो ३४ और प्रकार नहीतें भघट गति जिनकी ऐसे जे तुम तिनको
जो दर्शन सो हमकूं कैसे होतो जे हम निकट है मृत्यु जिनकी ऐसे हैं तुम सब सिद्धके हेत वारे हो ३५ याते योगीनको पर
मगुरू तुम तिनतें पूछूं हूं मृत्यु जाकी निकट आई हैं ऐसो जो पुरष ताकूं कहा करवेकूं योग्य है: सो कहो ३६ मनुष्यनकरि

अथ मे भगवान्प्रीतः कृष्ण: पांडुसुतप्रियः पैतृष्वसेयप्रीत्यर्थं तद्गोत्रस्यात्तबांधवा ३४ अन्यथा तेऽव्यक्त
गतेर्दर्शनं नः कथं नृणां नितरां म्रियमाणानां संसिद्धस्य वनीयसा ३५ अतः पृच्छामि संसिद्धिं योगीनां परमं गु
रुं पुरुषस्येह यत्कार्यं म्रियमाणस्य सर्वथा ३६ यच्छ्रोतव्यमथो जाप्यं यत्कर्तव्यं नृभिः प्रभो स्मर्तव्यं भज
नीयं वा ब्रूहि यद्वा विपर्ययं ३७ नूनं भगवतो ब्रह्मन् गृहेषु गृहमेधिनां न लक्ष्यते ह्यवस्थानमपि गोदोह
नं क्वचित् ३८ सूत उवाच: एवमाभाषितः पृष्टः स राज्ञा श्लक्ष्णया गिरा प्रत्यभाषत धर्मज्ञो भगवा
न्बादरायणि ३९ इती श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कंधे शुकसमागमनं ए
कोनविंशोऽध्याय १९

के जो सुनवेकूं योग्य है जप करवेकूं स्मरन करवेकूं भजन करवेकूं योग्य होय सो कहो विपरीत होइ सो कहो ३७
हे ब्रह्मन गृहस्तनके घर में जितनी देर गाइ दुहिवे में आवे तितने काल हू कहीं न ही लखिवे में आवे हैं ३८
सूतजी कहै हैं सोनक ऐसे सुंदर वानीकर राजाने पूछे ऐसो जो धर्मके जानन वारो भगवान् शुकदेवजी सो बोल
त भए ३९ इती श्री भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां प्रथमस्कंधे भाषाटीकायां एकोनविं